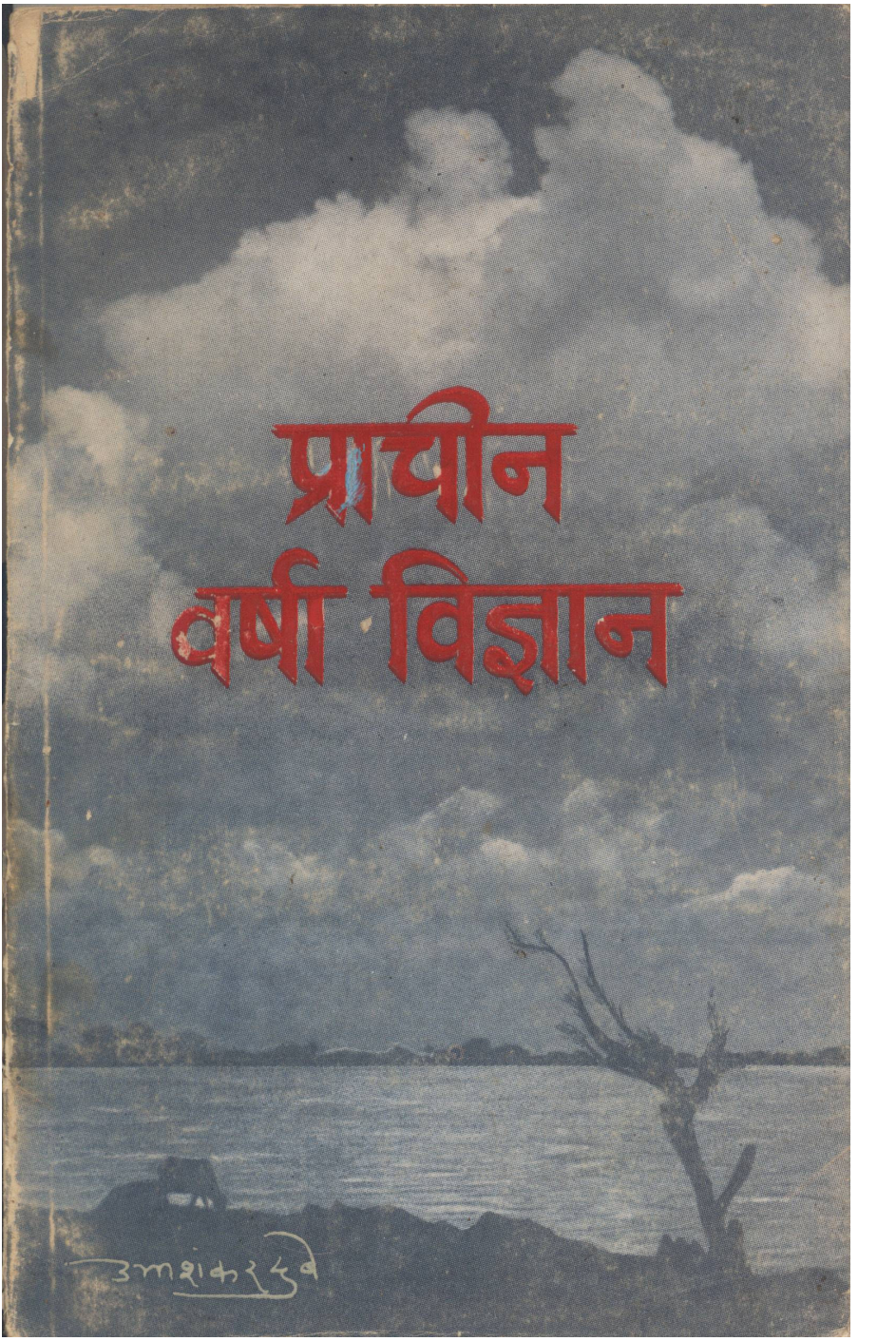

प्राचीन वर्षा विज्ञान

उमाशंकर दुबे

प्राचीन वर्षा विज्ञान

लेखक

ज्योतिर्विद् उमाशंकर दुबे

प्रकाशक:

श्री हनुमत् ज्योतिष मन्दिर

प्रकाशक :
श्री हनुमत् ज्योतिष मन्दिर
२२/१२१, फीलखाना, कानपुर–२०८००१

●

मूल्य :
अजिल्द- ४० रु०
सजिल्द- ४५ रु०

●

सर्वाधिकार लेखकाधीन

●

आवरण चित्र : ज्ञानेन्द्र

●

मुद्रक :
चेतना प्रिंटिंग प्रेस
७/७४, तिलक नगर, कानपुर

●

प्रथम संस्करण : १९८६

लेखक

ज्योतिर्विद् उमाशंकर दुबे

लेखक

की

अन्य रचनायें

सूर्य

*

चन्द्रमा

*

पानी की खोज (उदकार्गलम्)

*

कूर्म चक्र

*

पंचाँग परिचय

श्री राजेन्द्र कुमार सोमानी

चेयरमैन सोमानी स्टील्स लि.

को

समर्पित

प्रस्तावना

दुनियाँ के ऋतु वैज्ञानिकों के सामने वर्षा की 'लांगरेंज फोरकास्ट' एक बड़ी समस्या है क्योंकि ७२ घन्टे से आगे की भविष्यवाणी करने में वे अभी तक सफल नहीं हुए हैं। चाहे अवर्षण हो चाहे अति वृष्टि दो तीन दिन आगे की वर्षा की जानकारी की कृषि की दृष्टि से कोई खास उपयोगिता नहीं है। भारत कृषि प्रधान देश है। खेती भारत की अर्थव्यवस्था का मेरुदण्ड है। यहाँ दो तिहाई कृषि वर्षा पर ही निर्भर है, इसलिए यहाँ महीनों पहिले वर्षा का भविष्य मालूम होना चाहिए तभी वह उपयोगी होगा।

इस आवश्यकता की पूर्ति इस देश में मौसम पर विशेष खोज कर हजारों वर्ष पूर्व कर ली गई थी। अथर्ववेद में मौसम पर भविष्य वाणी करने वाले का उल्लेख है। अच्छे मौसम के लिए प्रार्थना की गयी है और सूखा, बाढ़ का उल्लेख है। वृहत्संहिता में रोहिणी योग के प्रारम्भिक श्लोकों में वराहमिहिर ने कहा है कि "इस योग को सुमेरु पर्वत के उपवन में सर्व प्रथम वृहस्पति ने नारद को बताया और बाद में गर्ग, पराशर, कश्यप, मयासुर आदि ने अपने शिष्यों को बताया।" इस प्रकार गुरु शिष्य परम्परा से भारत में पुरातन काल से मौसम विज्ञान चला आ रहा है।

काल के प्रवाह में गुरु शिष्य की श्रुति-स्मृति परम्परा समाप्त हो गयी। 'श्रुति' याने गुरु मुख से सुनो और 'स्मृति' अर्थात् याद कर लो। कालान्तर में मेधा के स्तर में गिरावट आने पर भोज पत्रों, ताड़ पत्रों पर गुरु प्रदत्त ज्ञान को संकलित कर उसे भविष्य की पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखने का प्रचलन हुआ। ज्ञान-विज्ञान का यह बहुमूल्य खजाना यवनों के आक्रमण में किस प्रकार नष्ट हुआ यह भारत के इतिहास में अंकित है। अनेक अद्भुत विद्यायें लोप हो गयीं। आज हमें

वे विद्यायें कपोल कल्पित दन्त कथायें प्रतीत होती हैं। जो कुछ शेष रह गया है उस पर भी पाश्चात्य शिक्षा की मानसिकता और राजकीय उदासीनता का आवरण पड़ा है। अब तो उस संस्कृत भाषा की जड़ पर ही कुठाराघात हो रहा है जिसमें विश्व का सर्वोत्तम ज्ञान विज्ञान का भण्डार भरा है। संभावना है कि भविष्य में स्वयं संस्कृत भाषा ही शोध का विषय बन जाय। संस्कृत भाषा में कितना गूढ़ ज्ञान भरा है यह इसी युग में प्रकाशित पुरी के शंकराचार्य के शोध ग्रन्थ वेदिक मैथ-मेटिक्स से भलीभांति स्पष्ट होता है, जिसके ज्ञान से मानव ही कंप्यूटर बन जाता है। इस ग्रन्थ ने दुनियां के गणितज्ञों को चकित कर दिया है। कई देशों में इसका अध्ययन भी प्रारम्भ हो गया है जबकि शोध-कर्ता के अपने देश में निहित स्वार्थवश इस महान रचना की कोई कद्र न होकर कंप्यूटरीकरण चालू है।

तन्त्र, योग टेलीपैथी और ब्राटक (हिप्नोटिज्म) पर अमेरिका रूस ऐसे विकसित देशों में जब शोध चल रहे हैं तो हमारे देश में योग और तन्त्र धन्धा बन गया है। यही दशा ज्योतिष की है। नारद, गर्ग, पराशर, कश्यप, मय, बराहमिहिर लिखित जो कुछ भी उपलब्ध है उसी में शोध का बहुत बड़ा क्षेत्र अछूता पड़ा है, जो पूरे मानव समाज के हित के लिए है। 'सेल वैल्यू' के कारण होरा स्कन्ध की पुस्तकों से बाजार पटा पड़ा है जबकि संहिता स्कन्ध जो कि सम्पूर्ण समाज का हितकारी है, उसकी अवहेलना समाजवादी व्यवस्था में हो रही है।

यह सब जानते हुए भी कि मेदनीय ज्योतिष की पुस्तकों का विक्रय ज्योतिष के विद्वानों अथवा सरकार तक हीं सीमित है, तथा 'पानी की खोज' और 'कूर्मचक्र' लिखकर यह अनुभव होने के बावजूद प्राचीन वर्षा विज्ञान पर लिखने का दुःसाहस इस प्रेरणा और आशा से किया है कि कम से कम हमारे ज्योतिष प्रेमी बन्धुओं को तो इससे लाभ मिलेगा ही और शायद भविष्य में कभी चेतना जगे तो सरकार भी लोकहित में इस प्राचीन विज्ञान का उपयोग करके विश्व में जो विकसित देश लांगरेन्ज फोरकास्ट के लिए अंधेरे में तीर मार रहे हैं उनका भारत मार्ग दर्शन कर अग्रणी हो जाय।

प्राचीन वर्षा विज्ञान का मुख्य आधार बृहत्संहिता है। साथ ही जितनी प्रामाणिक प्राचीन सामग्री अन्यत्र उपलब्ध हो सकी उसका अपने अनुभव के साथ संयोजन कर विषय को सरल भाषा में प्रायोगिक रूप देने का प्रयास किया है। वर्षा भविष्यवाणी को लांगरेन्ज, मिडियमरेंज और शार्ट रेंज तीन वर्गों में रखकर क्रम बद्ध रूप में विषय को स्पष्ट किया है। सातवें अध्याय में वर्षा सम्बन्धी घाघ भड्डरी की कहावतों का वर्गीकृत संकलन इसलिए दिया है कि वे अनुभव की कसौटी पर खरी उतरती हैं और अमेरिका के मौसम विज्ञानी भी अपने यहाँ प्रचलित लोकोक्तियों को महत्व देते हैं। नवम अध्याय में आधुनिक मौसम विज्ञान का संक्षिप्त परिचय देकर प्राचीन और अर्वाचीन विज्ञान की तुलनात्मक समीक्षा प्रस्तुत की है। अन्तिम दसवें अध्याय उपसंहार में भारत में अब तक पड़े कुछ गंभीर सूखा के वर्षों को लेकर उन पर प्राचीन वर्षा विज्ञान के लांगरेंज (आर्द्रा प्रवेश) के नियमों का प्रयोग किया है जिससे कि उन नियमों की प्रामाणिकता स्पष्ट हो जाय।

इस पुस्तक के प्रकाशन में कानपुर महानगर के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री राजेन्द्र कुमार सोमानी का सर्वाधिक सहयोग रहा है। श्री सोमानी प्रमुख उद्योगपति के साथ ही ज्योतिष के विद्वान और ज्योतिष के संरक्षक भी हैं। पुस्तक की पाण्डुलिपि देखते ही उन्होंने इसके प्रकाशन का आर्थिक भार उठा लिया। इसके लिए हम उनके बहुत आभारी हैं।

हमारे सहयोगी मित्र दिल्ली निवासी श्री के० एन० राव आई० ए० एस० जो एक उच्च राजकीय अधिकारी के साथ ही देश के जाने माने ज्योतिष विद्वान भी हैं, और जिनकी मौसम पर अनेक सटीक भविष्यवाणी प्रकाशित हो चुकी हैं उन्होंने आवश्यक आँकड़े उपलब्ध कराने में जो सहायता की है उसके प्रति हम हृदय से उनको आभार व्यक्त करते हैं।

श्री ज्ञानेन्द्र ने अपने फोटो संग्रह में से बादलों के आवश्यक फोटो देकर और आवरण सज्जा का प्रारूप तैयार कर पुस्तक को उपयोगी और सुन्दर बनाने में जो सहयोग किया है उसके लिए हम उनके कृतज्ञ हैं।

मौसम विज्ञान गंभीर और विस्तृत विषय है। इस विषय की बहुत सी प्राचीन सामग्री प्राप्य नहीं है। उपलब्ध साधनों के अन्तर्गत अपनी अल्पबुद्धि के अनुसार जितना बन पड़ा पाठकों की सेवा में प्रस्तुत किया है। त्रुटियों का रहना स्वाभाविक है। आशा हैं विद्वान उनकी ओर इंगित करेंगे।

चैत्र शुक्ल द्वितीया सं० २०४६ वि० — उमाशंकर दुबे
७ अप्रैल १९८९ ई०

शुद्धि पत्र

पृष्ठ	पैरा	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२	४	३	३८.०७५	३८.०७
२६	२	२	गर्भ	गर्ग
४०	१	३	१६ जनवरी	१६ जून
६०	३	२	वेदान्त	वेदांग
७२	२	५-६	यच्छन बलकान्	गच्छन् बलवान्
१६०	३	३	प्रतिक्षा	प्रतिशत
१७१	२	१	सन् १९८७	१८७७

विषयानुक्रमणिका

१. **प्रथम अध्याय:**

वैदिक काल में ऋतुयें, उनके नाम और काल **खण्ड**, ऋतुकर्ता सूर्य है, ऋतु कैसे बनती हैं, वसन्त ऋतु और वसन्त सम्पात, वसन्त ऋतु की क्या पहचान है। ग्रीष्म ऋतु । पृष्ठ १–६

२ **द्वितीय अध्याय: वर्षा की दूरगामी भविष्यवाणी सूर्य की आर्द्रा प्रवेश कुंडली**

आर्द्रा प्रवेश कुंडली क्यों, आर्द्रा नक्षत्र का खगोलिक विवरण, आर्द्रा प्रवेश लग्न किस स्थान की, कुंडली में भावों की दिशायें, राशियों के तत्व और जलांश, ग्रहों के तत्व और गुण, उदाहरण। पृष्ठ १०–२२

३. **तृतीय अध्याय: मध्यम कालीन भविष्यवाणी–मेघगर्भ लक्षण**

मेघगर्भ क्या है, गर्भ परीक्षण की अवधि, गर्भ परीक्षण विधि, गर्भ के समय के चन्द्र नक्षत्र से मानसून की वर्षा का समय निकालने की विधि, वर्षा का पक्ष मास तारीख निर्धारण, मास पद्धति कौन सी लें, मेघ और वायु की दिशा, गर्भ समय के शुभ-अशुभ लक्षण, मास अनुसार शुभ लक्षण, गर्भोपघात, उत्पात क्या हैं, गर्भ के वर्षा कारक प्रमुख नक्षत्र, वर्षा कितने दिन होगी, ओला और विद्युत पात, गर्भ नष्ट लक्षण, समय पर गर्भ न बरसने का परिणाम, गर्भ समय के वर्षाकारक लक्षण, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष में वायु-वर्षा परीक्षण, वायु धारण, प्रवर्षण, वर्षा कितनी होगी, द्रोण और आढक की आधुनिक माप, गर्भ निरीक्षण-परीक्षण की प्रयोग बिधि। पृष्ठ २३–५८

४. **चतुर्थ अध्याय: रोहिणी योग**

रोहिणी के वैदिक और पौराणिक आख्यान, रोहिणी नक्षत्र का खगोलिक वर्णन, रोहिणी योग की ऐतिहासिकता, रोहिणी योग

निरीक्षण, रोहिणी योग में वायु परीक्षण, प्रयोग विधि और उपकरण, वायु परीक्षण के परिणाम, शस्य परीक्षण, प्रकृति लक्षण, मेघों का रंग रूप, अशुभ चिन्ह, दिशा प्रभाव, वर्षा सूचक प्रयोग, रोहिणी शकट योग। पृष्ठ ५६–८७

५. **पंचम अध्याय: सप्त नाडी चक्र**
नक्षत्रानुसार नाडी का वर्गीकरण एवं नाडियों के स्वामी ग्रह, नाडी में ग्रह योगों से वर्षा के नियम। पृष्ठ ८८–१००

६. **षष्ठ अध्याय: शीघ्र वर्षा के लक्षण**
शीघ्र वर्षा का अर्थ, शीघ्र वर्षा के प्रकृति लक्षण, वर्षा कारक ग्रह-योग, ग्रहों का उदयास्त काल, ग्रह समागम, मण्डल संक्रमण, चन्द्रमा के नक्षत्र मण्डल, पक्षक्षय, सूर्य का अयनान्त, सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश, ग्रहों की युति का प्रभाव। पृष्ठ १०१–११

७. **सप्तम अध्याय: घाघ भड्डरी की वर्षा सम्बन्धी कहावतें**
वायु लक्षण, मेघ लक्षण, नक्षत्र और वर्षा, वर्षा के अन्य प्राकृतिक लक्षण। पृष्ठ ११३–१३१

८. **अष्टम अध्याय: विविधा**
सूर्य की संक्रान्ति में नक्षत्र मण्डल—अग्नि, वायु, वरुण, महेन्द्र मण्डल, संक्रान्ति मण्डल का प्रभाव, मेघद्वार, समुद्रचक्र, वर्षा सम्बन्धी अचूक योग, वर्षा न होने के लक्षण, शीघ्र वर्षा के लक्षण। पृष्ठ १३२–१४०

९. **नवम अध्याय: आधुनिक मौसम विज्ञान**
वातावरण, क्षोभ मण्डल, समताप मण्डल, आयनोस्फियर, एक्सोस्फियर, मौसम भविष्यवाणी के आधुनिक आधार, थर्मामीटर, बैरोमीटर, आर्द्रता, वायु की दिशा और वेग, मेघ वर्गीकरण, पाश्चात्य मौसम विज्ञान में लोकोक्तियों का स्थान, मौसमों में प्रति वर्ष अनिश्चय क्यों, प्राचीन मौसम विज्ञान के सिद्धान्त, प्रयोग विधि। पृष्ठ १४१—१६८

१०. **दशम अध्याय: उपसंहार**
भूत काल के सूखा के वर्षों की ज्योतिष नियमों के आधार पर समीक्षा। पृष्ठ १६९–१८०

अध्याय–१

ॐ० सूर्याय नमः

ऋतु

सप्त युञ्जन्ति रथ चक्रमेको अश्वो वहति सप्तनाम ।
त्रिनाभि चक्रमजरमनर्वं यत्रेमा विश्वा भुवनानि तस्थुः

ऋक्सं. १/१६४/२

"सूर्य के एक चक्र वाले रथ में सात घोड़े हैं । वस्तुतः सात नामो का एक ही घोड़ा रथ खींचता है । उस चक्र में तीन नाभिया हैं यह सूर्य अक्षय और अप्रतिबन्धित है इसी के अधार पर सब भुवन स्थित हैं ।"

इस मन्त्र में रथ के सात घोड़े प्रकाश के रंग हैं जो वस्तुतः एक ही रंग सूर्य के प्रकाश के रूप में दिखाई देता है । चक्र की तीन नाभि सौर वर्ष के चक्र की तीन मुख्य ऋतुयें हैं । सूर्य अपनी आकर्षण शक्ति से ग्रहों को अपनी कक्षा में स्थित किए हुए है । ग्रीष्म, वर्षा, शोत तीन ऋतुएं हैं । इनके मध्य में तीन ऋतु और हैं । इस प्रकार ६ ऋतुएं मानी जाती हैं । वेद, आरण्यक, ब्राह्मण आदि प्राचीन ग्रन्थों में ६ ऋतुओ का उल्लेख मिलता है । शतपथ ब्राह्मण में तीन ऋतु के नाम है । तैत्तरीय ब्राह्मण में संवत्सर में पाँच ऋतुयें बतायी हैं । "पञ्चवा ऋतवः संवत्सरः । " संवत्सर का अर्थ है वर्ष । "संवसन्ति ऋतवः यस्मिन् स संवत्सरः, " जिसमें ऋतुयें निवास करती हैं उसे संवत्सर कहते हैं ।

तैत्तरीय ब्राह्मण में पाँच ऋतुओं में वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद और पाँचवीं हेमन्त और शिशिर का संयुक्त रूप लिया है । ऐतरेय ब्राह्मण में उल्लेख है—

द्वादशमासा पंचर्तव: हेमन्त शिशिर समासेन

वेदांग ज्योतिष में मुख्यत: ६ ऋतुओं को ही माना है। और वर्ष के १२ मासों में उन्हें विभाजित किया है, वह इस प्रकार है—

मधुश्च माधवश्च वसन्तिकावृतू शुक्रश्च शुचिश्च ग्रैष्मावृतू नभश्च नभस्यश्च वार्षिकावृतू इषश्चोर्जश्च शारदावृतू। सहश्च सहस्यश्च हेमन्तिकावृतू – तपश्च तपस्यश्च शैशिरोवृतू।

— यजु: १३/२५

यजुर्वेद में वर्णित उपर्युक्त वैदिक सौर मास हैं। इनका ऋतुओं में विभाजन इस प्रकार है :—

मधु	—	माधव	—	वसन्त
शुक्र	—	शुचि	—	ग्रीष्म
नभ	—	नभस्य	—	वर्षा
इष	—	ऊर्ज	—	शरद
सह	—	सहस्य	—	हेमन्त
तप	—	तपस्य	—	शिशिर

संवत्सर (वर्ष) का आरम्भ वसन्त ऋतु से माना गया है— 'मुखं वा एतदृतूनां यत्वसन्त:' अर्थात वसन्त ऋतुओं का मुख है। वेदांगज्योतिष में चैत्रादि मास नहीं हैं किन्तु चान्द्र मास का प्रचलन था। वर्ष सौर होता था। चान्द्र और सौर के अन्तर को बराबर करने के लिये अधिमास की व्यवस्था थी जो अभी तक प्रचलित है। वह इसलिये कि जो ऋतु जिस मास में पड़नी चाहिये वह उसी मास में रहे। आशय यह है कि संवत्सर के मास ऋतु परक हैं। नक्षत्राधीन चैत्र वैशाख आदि मासों के नाम का प्रचलन बाद में हुआ है।

तैत्तरीय ब्राह्मण में जहाँ पाँच ऋतुओं का उल्लेख है —संवत्सर को एक उड़ते हुये पक्षी का रूपक दिया है जिसका मुख वसन्त है, दाहिना पंख ग्रीष्म, पुच्छ वर्षा, बायां पंख शरद और उदर हेमन्त है।

वैदिक मधु माधव आदि मासों का आरम्भ वर्तमान में अंग्रेजी

तारीखों में कब से मानें ? सन् १९८८ में इनके आरम्भ की तारीखें दे रहे हैं। प्रति वर्ष ठीक इन्हीं तारीखों को आरम्भ नहीं होता। एक दिन का अन्तर पड़ सकता है।

मास	प्रारम्भ
मधु	२० फरवरी
माधव	२१ मार्च
शुक्र	२१ अप्रिल
शुचि	२२ मई
नभ	२२ जून
नभस्य	२३ जुलाई
इष	२३ अगस्त
ऊर्ज	२३ सितंबर
सह	२३ अक्टूबर
सहस्य	२३ नवंबर
तप	२२ दिसंबर
तपस्य	२१ जनवरी

ऋतुकर्ता सूर्य है

सूर्य सम्पूर्ण प्राणियों का जनक, पालक, जीवनी शक्ति, प्रकाश और ऊष्मा देने वाला तो है ही साथ ही ऋतुओं का निर्माता भी है। आदित्य हृदय स्तोत्र (वाल्मीकीय रामायण) में अगस्त्य ऋषि ने ऋतु कर्ता प्रभाकरः कहा है। सूर्य ही प्राणियों का सृजन, पालन और संहारकत है। यही अपनी किरणों से गर्मी पहुंचाते हैं और वर्षा करते हैं–

नाशयत्येष वै भूतं तमेव सृजति प्रभुः।
पायत्येष तपत्येष वर्षत्येष गभस्तिभिः॥

ऋक् संहिता में कहा है—

पूर्वामनु–प्रदिशं पार्थिवानामृतून प्रशासद्विदधावनुष्ठ।

ऋक् सं १। ६५। ३।

"वह सूर्य ऋतुओं का नियमन करके क्रमशः पृथ्वी की पूर्वादि दिशाओं का निर्माण करता है ।"

वायु का कारण भी सूर्य को माना है—

सवितारं यजति यत्सवितारं यजति तस्मादुरतः पाश्चादयं ।
भूयिष्ठं पवमान पवते सवितृ प्रसूतो ह्येष एतत्पवने ॥

"सविता (सूर्य) का यजन करने से उत्तर पश्चिम से बहुत वायु चलता है ।"

ऋतु कैसे बनती हैं

सूर्य ऋतुओं का निर्माण किस प्रकार करता है संक्षेप में यह स्पष्ट करते हैं । पृथ्वी का भ्रमण पथ (कक्षा) अन्डाकार है । और पृथ्वी अपनी धुरी पर २३.५ अंश झकी हुई है अर्थात् पृथ्वी की भूमध्य रेखा कक्षा के साथ साढ़े तेइस अंश का कोंण बनाती है । ऋतु परिवर्तन का मख्य कारण पृथ्वी के अक्ष की नति है । सूर्य पृथ्वी की कक्षा के ठीक केन्द्र में नहीं है । भ्रमण काल मैं पृथ्वी कभी सूर्य के निकटतम (PERIHELION) ९१,४००,००० मील पर (३ जनवरी) और कभी (४ जुलाई को) दूरतम (APHELION) ९४,६००,०००, मील पर होती है । किन्तु ऋतु का कारण इस दूरी का घटना बढ़ना नहीं है, क्योंकि जब पृथ्वी ३ जनवरी को सूर्य के निकटतम होती है तो उत्तरी गोलार्ध में जाड़े की ऋतु होती है । और जब ४ जुलाई को दूरतम होती है तब गर्मी की ऋतु होती है जब कि सूर्य के निकट होने पर गर्मी और सूर्य से दूर होने पर शीत होना चाहिये । सीधा सा कारण ऋतु का ये है कि जब उत्तरी गोलार्ध सूर्य के सम्मुख होता है तब वहां गर्मी और दक्षिणी गोलार्ध में जाड़े की ऋतु होती है । एक बात अवश्य अन्तर की है, वह यह कि दिसम्बर जनवरी में दक्षिणी गोलार्ध सूर्य के सामने तो होता ही है साथ ही पृथ्वी सूर्य के निकटतम भी होती है इसलिये वहां गर्मी उत्तरी गोलार्ध की अपेक्षा तेज होती है ।

सूर्य के मकरारम्भ २१ दिसम्बर से कर्कारम्भ २१ जून तक सूर्य

उत्तरायण और सायन कर्क आरम्भ से मकर प्रवेश तक दक्षिणायन रहता है। निरयन पद्धति से मकर संक्रान्ति १४ जनवरी को होती है। ऋतु और अयन का विचार करने में सायन मान ही लिया जाता है, जैसा कि वैदिक ऋतु परक महीनों के आरम्भ की ऊपर दी हुई तारीखों से स्पष्ट है।

२१ मार्च को सूर्य सायन मेष प्रवेश करता है। अर्थात् पृथ्वी के ° अंश विषुवत रेखा पर आता है। उसे वसन्त सम्पात (VERNAL EQUINOX) कहते हैं। तब दिनमान और रात्रिमान समान होता है। (यह समानता हर अक्षांशों पर नहीं होती) यहीं से ऋतुओं का आरम्भ होता है। वैदिक माधव मास का आरम्भ २१ मार्च को होता है। २१ मार्च को उत्तरी ध्रुव में ६ महीने की रात्रि के पश्चात सूर्योदय होता है। जैसे-जैसे सूर्य उत्तर पथ की ओर बढ़ता है। दिनमान और गर्मी बढ़ती जाती है। २१ जून को वह उत्तर पथ के अन्तिम छोर पर होता है। उस दिन सूर्य की उत्तरा क्रान्ति २३ अंश २७ कला होती है। इसके पश्चात् उत्तरा क्रान्ति घटने लगती है। क्यों कि सूर्य दक्षिण पथ की ओर वापस चल पड़ता है। याने दक्षिणायन हो जाता हैं, उत्तरी ध्रुव में सुर्य ढ़लने लगता है और तीन महीने पश्चात् जब २२ सितम्बर को शरद सम्पात होता है तो ध्रुव में ६ महीने के लिये सूर्य अस्त हो जाता है। २२ सितम्बर को सुर्य की क्रान्ति ० अंश होती है। एक बार फिर दिनमान और रात्रिमान समान होते हैं। सूर्य की दक्षिणा क्रान्ति में वृद्धि होने लगती है और २२ दिसम्बर को सूर्य की परम दक्षिणा क्रन्ति २३ अंश २७ कला होती है। ध्रुव पर ६ मास का दिन और ६ मास की रात्रि मिलाकर देवताओं का एक अहोरात्र होता है। जो मानवों के एक वर्ष के बराबर है।

क्रान्ति वृत्त (ECLIPTIC) जहाँ विषुव वृत्त (CELETIAL. EQUATOR) को सूर्य के उत्तराभि मुख होने पर काटता है उसे वसन्त सम्पात विन्दु कहते हैं। विषुवत रेखा के दोनों ओर क्रान्ति वृत्त की अन्तिम सीमा है। इसे अयन वृत्त कहते हैं। इसी परम सीमा के अन्दर भ्रमण करता हुआ सूर्य ऋतुओं का निर्माण करता हैं।

वसन्तऋतु

वसन्त संपात से वसन्त ऋतु का आरम्भ माना जाता है। सायन सूर्य जिस दिन विषुवत रेखा पर आता है उस दिन वसन्त ऋतु और वर्ष का आरम्भ होता है। यह वर्ष का आरम्भ प्राकृतिक याने खगोलिक है, मानव निर्मित न हीं जैसे कि ग्रेगेरियन कलेण्डर का एक जनवरी से होता है। वसन्त सम्पात विन्दु वाम गति से चलनशील हैं इसलिये ऋतु के लिये वह किसी एक निश्चित तिथि और समय पर सदा प्रारम्भ होगी ऐसा नहीं कहा जा सकता। प्राचीन नक्षत्र गणना कृत्तिकादि है, इससे यह सिद्ध होंता है कि किसी समय संपात कृत्तिका नक्षत्र में रहा होगा। महाभारत के अनुशासन पर्व में नक्षत्रों की गणना कृत्तिका से आरम्भ की गई है। पराशर ने विशोंत्तरी दशा की गणना कृत्तिका से आरम्भ की है--

कृत्तिकातः समारम्य त्रिरावृत्य दशाधिपाः।
आ-चं-कु-रा-गु-श-बु-के-शु पूर्वा विहगाः क्रमात्॥
--बृ- पारा- ४६/१२

इससे प्रतीत होता है कि पराशर के समय में वसन्त सम्पात कृत्तिका नक्षत्र पर था। यदि अयन गति ५०.२३८८" (NEWCOMB) लें तो एक नक्षत्र में यह विन्दु ९५५. ४३५६ वर्ष रहता है। एक नक्षत्र चरण में २३८. ८५ वर्ष रहता है। ७१. ८३ वर्ष में एक दिन पीछे हट जाता है। २१५५ वर्ष में एक मास पीछे खिसक जाता है। लगभग २५८६० वर्षों में १२ मासों में घूमता हुआ पुनः उसी स्थान पर आ जाता है। वर्तमान में सम्पात उत्तरा भादप्रद नक्षत्र में है।

प्राचीन काल से माघ शुक्ल पंचमी को वसन्तोत्सव मनाने की परिपाटी चली आ रही है। इससे यह मालूम होता हैं कि किसी समय माघ में वसन्त ऋतु होती थी। वर्तमान में चैत्र वैशाखो वसन्तः है, माघ फाल्गुन शिशिर ऋतु है किन्तु वसन्त का पर्व माघ शुक्ल पंचमी को आज भी मनाया जाता है। कहा है--

माघ मासे नृपश्रेठ शुक्लायां पंचमी तिथौ।
रति कामौ तु संपूज्य कर्तव्यः तु महोत्सवः॥

प्राचीन ग्रन्थों में वसन्त के विषय में विभिन्न उल्लेख मिलते हैं। अश्वमेध पर्व में उल्लेख है–"श्रवणादीनि ऋक्षाणि ऋतवः शिशिरादयः।" राशियों के आधार पर बौद्धायन सूत्र के अनुसार मेष और वृष की संक्रान्ति में वसन्त ऋत मानी है । कालमाधव में मीन और मेष में तथा भाव प्रकाश में कुंभ और मीन में मानी है। शास्त्र में चान्द्र मास में ऋतु के विषय में उल्लेख है–"मुखं वा एतत्संवत्सरस्य यच्चित्रा पूर्ण मास।" अर्थात चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से संवत्सर और ऋत चक्र का आरम्भ है। वर्तमान में शास्त्र अनुसार संवत्सर का आरम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होता है और वर्ष का आरम्भ वासन्ती नवरात्र से होता है। वर्तमान में चान्द्रमासों में ६ ऋतुओं का विभाजन इस प्रकार है:--

चैत्र	--	वैशाख	--	वसंत
ज्येष्ठ	--	आषाढ़	--	ग्रीम
श्रावण	--	भाद्रपद	--	वर्षा
आश्विन	--	कार्तिक	--	शरद
मार्गशीर्ष	--	पौष	--	हेमन्त
माघ	--	फाल्गुन	--	शिशिर

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट होता है कि वसन्त संपात विन्दु के चलनशील होने के कारण जो मौसम वर्तमान में चैत्र में होता है वह पांच हजार वर्ष पूर्व माघ में होता था। बसंत संवत्सर और ऋतु चक्र का मुख या आरम्भ है इसीलिए हम इस पर विस्तार से विचार कर रहें हैं। अब प्रश्न उठता है कि जब संपात विन्दु स्थिर नहीं है तो प्रकृति के अनुसार यह कैसे मालूल हो कि वसन्त ऋतु आ गई ? इसका भी उल्लेख है कि जब वृक्षों के जीर्ण पत्ते गिर जायँ और नई कोंपलें निकल आयें तो समझना चाहिये कि वसन्त ऋतु आ गई।

सरागवस्त्रैर्जर दक्षः वसन्तो वसुभिः सह
संवत्सरस्य सवितुः प्रेषकृत् प्रथमः स्मृतः ॥

निर्णयामृत के 'रति कामौ तु संपूज्य' पद से भी वसन्त ऋतु का एक लक्षण प्रकट होता है। रति और कामदेव की पूजा से भावार्थ है

काम वासना का उद्भव। वसंत ऋतु में प्राणियों में काम वासना व्यापक रूप से जाग्रत होती है। पशु पक्षी मानव सभी में यह भावना स्वाभाविक रूप से होती है। कहा है—"आहार निद्रा भय मैथुनं च एतत् समानो पशुभिः नराणाम्।" जहाँ तक मनुष्य का सम्बन्ध है उसके लिये तो बारहो महीने वसन्त के हैं क्योंकि वह प्रकृति से दूर हटकर बनावटी जीवन जी रहा हैं, किन्तु अन्य पशु पक्षियों की चेष्टाओं से वसंतागमन का आभास मिलता है।

हजारों जन्म कुण्डली देखने पर एक बात परिलक्षित अवश्य हुई है कि भाद्रपद मास से आग्रहायण तक जन्म का प्रतिशत अधिक है। अंग्रेजी महीनों में यह अगस्त से दिसम्बर तक आता हैं। इससे यह नतीजा निकलता है कि अधिकांश आधान माघ से चैत्र तक होते हैं। सारांश यह है कि ऋतु का प्रभाव सभी प्रणियों पर होता है। इसीलिये वसंत को संवत्सर का मुख और ऋतु चक्र का आदि माना है।

ग्रीष्म

ज्येष्ठ आषाढ़ के मास ग्रीष्म ऋतु के हैं। वैदिक सौर मासों में ये शुक्र और शुचि हैं। सायन सूर्य के वृष और मिथुन राशि के परिभ्रमण के अर्न्तगत ग्रीष्म ऋतु होती है। इसका काल खण्ड २१ अप्रैल से २२ जून तक है। इस काल में सूर्य की उत्तरा क्रान्ति नित्य बढ़ती रहती है। सूर्य कीं किरणें उत्तरी गोलार्द्ध में सीधी पड़ती है। इसी के साथ गर्मी का असर बढ़ता जाता है। सूर्य समुद्र के जल का शोषण करते हैं। वातावरण को जल वाष्प से पूरित करते हैं। वसन्त ग्रीष्म वर्षा देवताओं की ऋतु मानी गई हैं। शरद, हेमन्त, शिशिर पितरों की ऋतुयें हैं।

वसन्तो ग्रीष्मो वर्षा ते देवो ऋतवः।

शरद हेमन्त शिशिरस्तेपितरो।

ज्योतिष में उत्तरायण देवों का दिन दक्षिणायन को देवों की रात्रि माना है। ग्रीष्म ऋतु ही वर्षा का कारण होती है। गर्मी किसी वर्ष अधिक पड़ती है।, लंबे समय तक पड़ती है। किसी वर्ष गर्म हवा अधिक

चलती है, कभी कम चलती है। इन विविधिताओं का कारण ग्रह होते हैं। असामयिक वर्षा, आँधी, तूफान, ओले गिरना, अतिशीत इन सबका कारण ग्रह और नक्षत्रों के योग होते हैं। सभी ऋतुएं परस्पर जुड़ी हुई हैं। आने वाली ऋतु को बीती हुई ऋतु प्रभावित करती है। अपने-अपने स्थान पर सभी का महत्व है किन्तु वर्षा ऋतु इनमें सबसे अधिक उपयोगी है क्योंकि यह जल प्रदान करती है जो कि प्राणिमात्र के जीवन का अवलम्ब है, अन्न की उपज वर्षा पर निर्भर है। भूमिगत जल की मात्रा भी वर्षा पर निर्भर है। आगे के अध्यायों में जीवन का आधार वर्षा की लांगरेन्ज, मिडियम रेन्ज, शार्ट रेन्ज भविष्यवाणी की भारत के प्राचीन मौसम विज्ञान में क्या विधि थी, क्या सिद्धान्त थे, इसका विस्तार से उल्लेख किया जायगा।

—o—

अध्याय २

वर्षा की दूरगामी भविष्यवाणी

LONG RANGE FOR CAST

सूर्य का आर्द्रा में प्रवेश

यदि आगामी वर्षों की ग्रहों की स्थिति के विवरण उपलब्ध हों तो कई साल आगे की वर्षा का सामान्य रुख (General Trend) क्या होगा। ज्योतिष द्वारा यह मालूम हो जाता है। आमतौर से पंचांगकर्ता मानसून के ६ महीने पूर्व प्रति वर्ष वर्षा का रुख पंचांग में प्रकाशित करते हैं। दूरगामी वर्षा-भविष्य के लिए सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश के समय की लग्न को आधार मानते हैं। इस लग्न से किस दिशा में कैसी वर्षा होगी इसका पूर्वाभास होता है। वर्षा का विशेष विवरण तारीख महीने वार ज्योतिष की अन्य विधियों से मालूम होता है जिनका आगे के अध्यायों में विस्तार से वर्णन किया जायगा।

वेदांग ज्योतिष में नभ–नभस्य मास वर्षा ऋतु के माने गये हैं। ये सौर मास आधुनिक प्रचलित काल गणना से २२ जून से नभ और २३ जुलाई से नभस्य प्रारम्भ होता है। संस्कृत शब्द नभ का अर्थ है आकाश। आधुनिक चन्द्रमास 'चैत्र वैशाखो वसन्तः' के ऋतु विभाजन के अनुसार श्रावण और भाद्रपद मुख्य रूप से वर्षा के महीने माने गये हैं प्रायः आषाढ़ मास से वर्षा की संभावना होती है और छिटपुट रूप से आश्विन कृष्ण पक्ष तक पानी बरसता है।

ज्योतिष की दृष्टि से सूर्य के आर्द्रा प्रवेश से वर्षा का आरम्भ माना जाता है। यहीं से मानसून की नियमित वर्षा शुरू होती है। वृहत्संहिता के सद्योवर्षणाध्याय श्लोक २० में कहा है–

प्रायो ग्रहाणामुदयास्तकाले समागमे मण्डल संक्रमेच।
पक्षक्षये तीक्ष्णकरायनान्ते वृष्टिर्गतेऽर्के नियमेन चार्द्रामि॥

'वृष्टिगतेऽर्के नियमेन चार्द्राम्' अर्थात् सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र में जाने पर नियमित वर्षा प्रारम्भ होती है। सामान्यतः आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पू० फाल्गुनी, उ० फाल्गुनी, हस्त, चित्रा इन ९ नक्षत्रों में सूर्य के संचरण काल में वर्षा होती है। सूर्य एक नक्षत्र में १३-१४ दिन रहता है। इस प्रकार चार महीने कुछ न कुछ वर्षा होती रहती है। अंग्रेजी तारीखों से सूर्य का आर्द्रा प्रवेश २१-२२ जून को और चित्रा से निष्क्रमण २४ अक्टूबर के आस-पास होता है। वर्षा के इन चार महीनों को लोक भाषा में चौमासा कहते हैं। संन्यासी इन दिनों चातुर्मास करते हुए एक ही स्थान पर निवास करते हैं।

आर्द्रा प्रवेश लग्न क्यों ?

जिस प्रकार मनुष्य के जन्म समय का जन्मांग चक्र बनाकर विभिन्न भावों में उदित राशियों और उनमें तत्कालीन ग्रहों की स्थिति के आधार पर जातक के भविष्य को मालूम करते हैं उसी प्रकार सूर्य के आर्द्रा प्रवेश के क्षण को वर्षा ऋतु का जन्म मानकर उस समय की लग्न बना कर भविष्य को मालूम किया जाता है। जातक की कुंडली में विभिन्न भाव जीवन के विभिन्न पक्ष हैं और आर्द्रा प्रवेश लग्न में यही भाव विभिन्न दिशायें हैं। जैसे जातक के जन्मांग में लग्न की प्रमुखता है वैसे ही आर्द्रा प्रवेश लग्न में भी लग्न में किस तत्व की राशि उदय हुई है, वहां कौन ग्रह है या किस ग्रह की दृष्टि है इसका फल है, इसके अतिरिक्त विभिन्न भावों (दिशाओं) में पूर्णजल, पादजल, या निर्जल कौन राशियाँ और शुष्क, उष्ण, वायुतत्व या जलीय कैसे ग्रह हैं इनका अपना प्रभाव है। इसके नियम आगे स्पष्ट करेंगे। इसके पूर्व आर्द्रा नक्षत्र का संक्षिप्त परिचय देना आवश्यक है।

आर्द्रा नक्षत्र

आर्द्रा नक्षत्र मिथुन राशि के अन्तर्गत है। मिथुन राशि का क्षेत्र भचक्र में ६० अंश से ९० अंश के मध्य है। आर्द्रा नक्षत्र का क्षेत्र ६६ अंश ४० कला से ८० अंश तक है। कुछ नक्षत्र कई तारों से मिलकर बने हैं। जिनमें एक योग तारा होता है, कुछ में केवल एक ही देदीप्यमान तारा होता है। आर्द्रा भी अकेला है। आर्द्र शब्द का अर्थ है

गीला, भीगा हुआ, नभ, जलीय। वेदों में आर्द्रा के देवता रुद्र बताये गये हैं।

आधुनिक विज्ञान ने इस तारे को वर्ण क्रम में M श्रेणी में माना है। तारे का रंग लाल है, और तापमान ५५०० F अंश है। आर्द्रा की नेत्रों से दिखाई देने वाली द्युति (Magnitude) ०.६ है। इसे अंग्रेजी में Betelguese कहते हैं। यह पृथ्वी से ६५० प्रकाश वर्ष की दूरी पर है। (प्रकाश की गति १८६००० मील प्रति सेकेन्ड है) इस तारे में Titanium Oxide की प्रचुरता है। आर्द्रा प्रथम द्युति का तारा है। इसकी निरयन स्थिति आधुनिक खगोलज्ञों के मत से मिथुन राशि के ४°–५३'-५१" पर है।

भारतीय मत से मिथुन राशि के ६० अंश ४० कला पर मृगशिरा नक्षत्र समाप्त होता है और आर्द्रा होता है। इस बिन्दु को जिस समय सूर्य स्पर्श करता है वह सूर्य का आर्द्रा प्रवेश माना जाता है। इस समय की जो लग्न बनाती है वह आर्द्रा प्रवेश लग्न कहलाती है। यह देश की विभिन्न दिशाओं में वर्षा की स्थिति बताती है।

लग्न किसी खास समय और स्थान की बनाई जाती है। सूर्य आर्द्रा में किस ता० को किस समय प्रवेश करेगा यह पंचांग या एफेमेरीज से मालूम हो जाता है। लग्न का स्थान कौन सा लिया जाय यह प्रश्न सामने आता है। देश की विभिन्न दिशाओं में वर्षा की स्थिति मालूम करनी है इसलिए यह स्थान भारत के केन्द्र में होना चाहिए। प्राचीन काल में कूर्म चक्र के अनुसार केन्द्र बिन्दु उज्जैन था। अब भारत की मौजूदा भौगोलिक सीमायें क्या हैं इसे देखना है।

भारत का वर्तमान उत्तरी सिरा कश्मीर में अक्षाँश ३७-०६ उ० पर है और दक्षिणी छोर कन्याकुमारी अक्षांश ८.०४ उ० पर है। पूर्व–पश्चिम भारत की सीमा देशान्तर ३८-०७५ पू. से ९७-२५ पू० तक है। इसका मध्य बिन्दु अक्षांश २२-३५ उ०, रेखांश ८२-४३ पू० है। इसी बिन्दु की लग्न बनानी चाहिए। वैसे भारत की मध्य रेखा रेखांश ८२-३० है।

कुंडली में विचार विन्दु भाव, राशि और ग्रह होते हैं। लग्न का अर्थ है पूर्व दिशा। पूर्वी क्षितिज पर जो राशि जितने अंश की

पताका

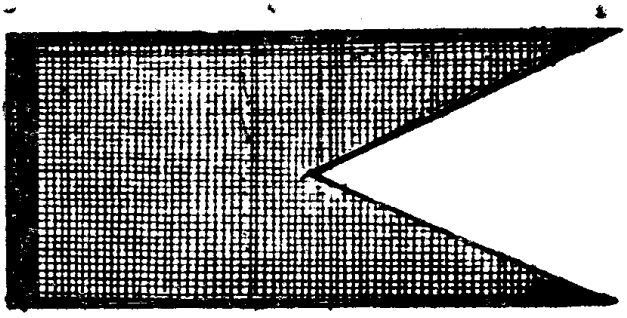

दिग्साधन वृत्त

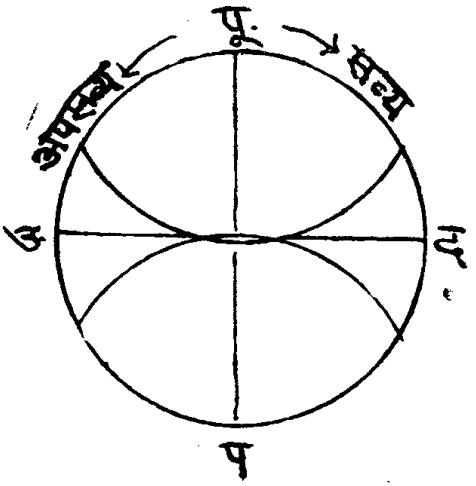

आर्द्रा प्रवेश लग्न दिशाएँ

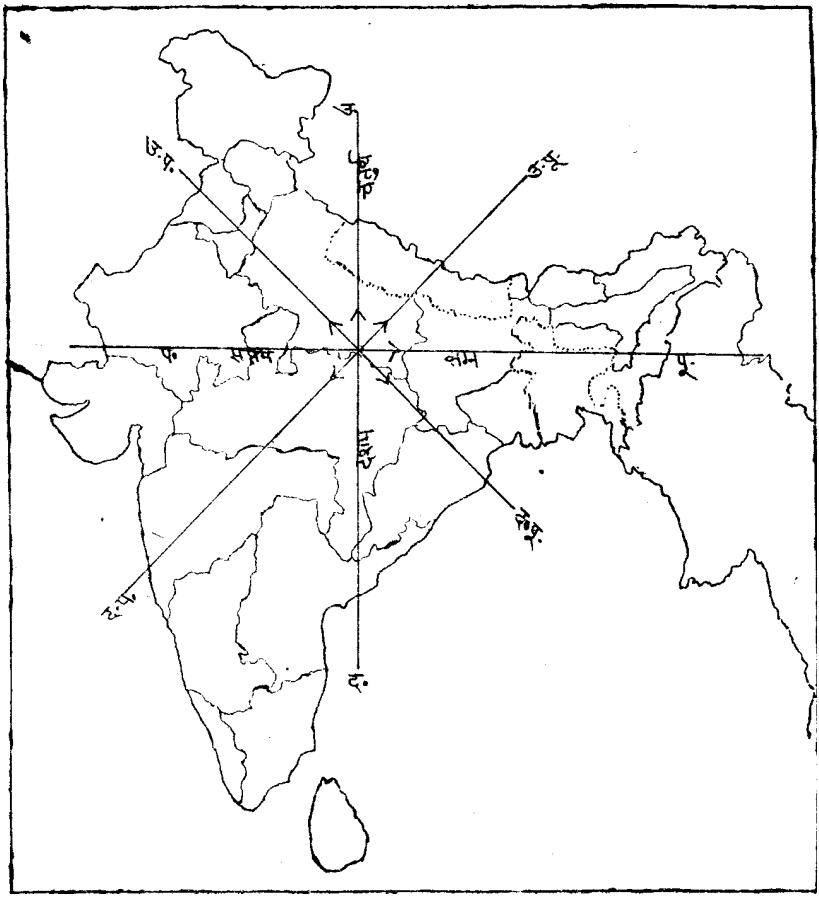

किसी स्थान विशेष पर किसी समय पर लगी होती है वह उस समय की उस स्थान की लग्न है। अतः सूर्य के आर्द्रा प्रवेश के समय जो राशि लग्न में उदित होगी वह तथा जो ग्रह लग्न में होंगे वे पूर्व दिशा पर प्रभाव डालेंगे। लग्न के सामने १८० अंश पर सप्तमभाव पश्चिम दिशा है। दशम भाव दक्षिण दिशा और उसके ठीक सामने चतुर्थ भाव उत्तर दिशा है। इन चार दिशाओं के मध्य उपदिशायें हैं। ये पूर्व दक्षिण के मध्य से आरम्भ कर परिक्रमा क्रम से (Clock wise) आग्नेय, नैऋत्य, वायव्य ईशान नाम से जानी जाती हैं। प्रमुख चार दिशाओं पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर के सूचक क्रमशः लग्न, दशम, सप्तम, चतुर्थ में तथा इनके मध्यवर्ती भावों में जो राशियाँ और ग्रह होंगे और वहां जैसी ग्रह दृष्टियाँ होंगी वैसे ही प्रभाव होंगे। प्रभाव कैसा होगा ? वह राशियों और ग्रहों के गुण धर्मानुसार होगा। अतः राशियों और ग्रहों का गुण धर्म जानना आवश्यक है। चूंकि हम वर्षा पर विचार कर रहे हैं इस लिए राशि और ग्रह के तत्व तथा किस राशि में क्या जलांश है इसकी जानकारी होना अनिवार्य है। यह आगे की तालिका में दे रहे हैं–

राशिगुण की तालिका

राशि	तत्व	जलांश (प्रतिशत)
मेष	अग्नि	२५
वृष	पृथिवी	५०
मिथुन	वायु	०
कर्क	जल	१००
सिंह	अग्नि	०
कन्या	पृथिवी	०
तुला	वायु	२५
वृश्चिक	जल	२५
धनु	अग्नि	५०
मकर	पृथिवी	१००
कुंभ	वायु	५०
मीन	जल	१००

ग्रह गुण तालिका

ग्रह	मूल तत्व	गुण
सूर्य	तेजस्	शुष्क अति उष्ण
चन्द्र	जल	पूर्ण जलीय
मंगल	अग्नि	दाहक-उष्ण
बुध	पृथिवी	सहयोग से जलीय या शुष्क
गुरु	आकाश	जलीय ग्रहों का सहायक-शुभ
शुक्र	जल	जलीय-वर्षाकारक
शनि	वायु	शुष्क-शीत

टिप्पणी–

गुरु, चन्द्र, शुक्र, की दृष्टि वर्षा कारक है। शनि वर्षा अवरोधक सूर्य राहु मंगल से सम्बन्ध दृष्टि युति का होने पर आँधी, तूफान, अति वृष्टि या शीत का कारक है।

इन तालिकाओं से यह स्पष्ट हुआ कि कर्क, मकर और मीन में पूर्ण जलांश है।

वृष, धनु, कुंभ में ५० प्रतिशत जलांश है।

मेष, तुला, वृश्चिक में २५ प्रतिशत जलांश है।

मिथुन, सिंह और कन्या जलांश में शून्य हैं।

ग्रहों की तालिका से यह परिणाम निकला कि वर्षा के लिए चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्र लाभदायक हैं। इनमें चन्द्र और शुक्र का मूल तत्व जल है इसलिए वर्षा के लिए ये विशेष शुभ हैं उसके बाद पृथ्वी तत्व का बुध और आकाश तत्व का वृहस्पति है।

सूर्य और मंगल शुष्क और अग्नि तत्व के हैं, इसलिए ये वर्षा अवरोधक हैं। शनि वायु तत्व का ग्रह है। यह भी शुष्क है किन्तु ठण्डा और शुष्क है। अतः यह आँधी, वायु चला सकता है। तापमान गिरा सकता है। इससे जल की आशा नहीं करनी चाहिए, ठंड उत्पन्न कर सकता है। सूर्य से सम्बन्ध हो जाय या मंगल से सम्बन्ध हो तो तूफान पैदा करेगा। सम्बन्ध का अर्थ युति या प्रतियोग (दृष्टि परिवर्तन) से है। साथ में चन्द्रमा का सम्बन्ध भी हो तो तूफान के साथ हानिकारक वर्षा भी होगी।

जैसे ज्योतिष के हीरा स्कन्ध में ग्रह दृष्टि का महत्व है उसी प्रकार इस आर्द्रा प्रवेश लग्न में भी है। ग्रह का जो गुण होगा वैसा प्रभाव वह उस दिशा में डालेगा जिस दिशा में उनकी दृष्टि है। वर्षा में सप्तम दृष्टि विशेष प्रभाव देती है। दृष्टि उस समय अधिक प्रभाव डालती है जब किसी भाव में बैठे हुए ग्रह पर उसकी दृष्टि होती है। इन सूत्रों को हम उदाहरण द्वारा स्पष्ट कर रहे हैं।

संवत् २०४५ विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी मंगलवार उत्तरा-फाल्गुनी नक्षत्र तदनुसार २१ जून १९८८ को ६-३५ पर सूर्य आर्द्रा

नक्षत्र में प्रवेश करेगा। भारत की वर्तमान सीमायें अक्षांश देशान्तर में हम बता चुके हैं इसका केन्द्र स्थान अक्षाँश २२-३५ उ० तथा देशान्तर ८२-४६ पू० गणना करने पर आता है। अतः इसी स्थान को आर्द्रा प्रवेश लग्न ले रहे हैं।

आर्द्रा प्रवेश लग्न १६८८

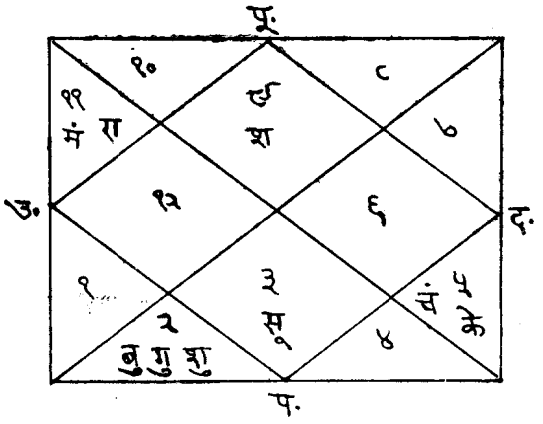

नवांश

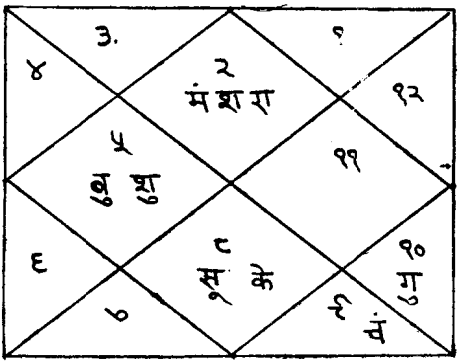

उपर्युक्त स्थान की लग्न आर्द्रा प्रवेश (६-३५ P.M.) की धनु-राशि की ४ अंश ४८ कला १५ विकला बनी। नवांश वृष राशि का होगा। धनुराशि तेजस तत्व की है। अर्धजल राशि (५०%जलांश) है। लग्न का स्वामी गुरु आकाश तत्व का है और जलीय है अर्थात् वर्षा में सहायक ग्रह है। यह वृष राशि में बुध शुक्र के साथ छठे भाव में हैं, वृष राशि भी अर्धजलीय है। बुध शुक्र, वक्री है। बुध, शुक्र, गुरु पर मंगल की दृष्टि है जो कि शुष्क उष्ण ग्रह है।

लग्न, लग्नेश का राशिगत प्रभाव और मंगल की दृष्टि तथा नवांश इनके विश्लेषण से यह परिणाम निकलता है कि वर्ष १९८८ में वर्षा की कमी या सूखा पड़ने की कोई संभावना नहीं है। बुध शुक्र दोनों ही वक्री हैं। गुरु सहित ये दोनों वक्री ग्रह मंगल की दृष्टि में भी हैं। अतः बुध और शुक्र जब तक मार्गी नहीं होंगे आर्द्रा प्रवेश के साथ ही व्यापक वर्षा का योग विशेषकर मध्य और पश्चिमी भारत में नहीं बनता है। ४ जुलाई को शुक्र के मार्गी हो जाने पर वर्षा होगी। १२ जुलाई से बुध के नक्षत्र परिवर्तन आर्द्रा में जाने के साथ व्यापक वर्षा होगी। सप्तम भाव में मिथुन निर्जल राशि में उष्ण शुष्क ग्रह सूर्य हैं और शनि से प्रतियोग है इसलिये पश्चिमी क्षेत्र में तेज वायु आंधी का योग है कुछ विलंब से भारी वर्षा का यह सूचक है। पंजाब हरियाणा और राजस्थान में अच्छी वर्षा होगी।

लग्न पूर्व दिशा है। उसमें धनु अर्धजल राशि है। लग्न में शीत ग्रह शनि है जो कि वक्री है। १२ जुलाई को चन्द्रमा मिथुन राशि में आ जायेगा। यह स्थिति आंधी तूफान के साथ पूर्वी क्षेत्र में भारी वर्षा एवं बाढ़ की सूचक है। पूर्वी भाग में भारी वर्षा, वायु और जल प्लावन से हानि होगी। नवांश भी यही सूचित करता है। लग्न में शनि-मंगल-राहु सप्तम में सूर्य केतु।

चतुर्थ भाव (उत्तर दिशा) में मीन पूर्ण जलीय राशि होने से भारी वर्षा होगी।

द्वितीय भाव (पूर्वोत्तर) में मकर राशि पूर्ण जलीय हैं और वृहस्पति की दृष्टि है। अतः उत्तरी पूर्वी भारत में सामान्य से अधिक

वर्षा होगी। अनेक स्थानों में बाढ़ से हानि होगी।

अष्टम भाव में कर्क (पूर्ण जलीय) राशि है इसका स्वामी चन्द्रमा भी जलीय है अतः भारत के दक्षिणी पश्चिमी भाग में लाभदायक वर्षा होगी।

दशम भाव (दक्षिण दिशा) में कन्या राशि (निर्जल) है इस भाव पर शनि मंगल गुरु की दृष्टि है इसलिये कुछ देर से वर्षा होगी। यहां अति वृष्टि की संभावना नहीं है। सामान्यतः मई के अन्त तक यहां मानसून आ जाता है वह इस वर्ष शनि की दृष्टि के कारण कुछ विलम्ब से आयेगा, किन्तु गुरु की दृष्टि वर्षा का अभाव नहीं होने देगी। लाभदायक वर्षा होगी।

इस प्रकार आर्द्रा प्रवेश लग्न से ग्रहों के गुण, राशियों के जलांश और भावों से दिशा ज्ञान कर सम्पूर्ण भारत में वर्षा का क्या रुख रहेगा इसकी जानकारी हो जाती है। यह लग्न मानसून का सामान्य रुख (General Trend) बताती है। इससे अतिवृष्टि, अनावृष्टि या सामान्य वृष्टि होगी इसका पूर्वाभास हो जाता है। दिशायें मालूम हो जाने पर कूर्मचक्र से प्रदेश या क्षेत्र भी ज्ञात हो जाते हैं।

टिप्पणी

आर्द्रा प्रवेश लग्न के आधार पर वर्षा का यह दीर्घकालीन पूर्वाभास (LONG RANGE FORECAST) विक्रम संवत् २०४५ के आरम्भ मार्च १९८८ में लिखा गया था। यह विषय को स्पष्ट करने के लिये बतौर उदाहरण दिया गया है। ३० मई १९८८ को कानपुर में वर्षा पर आयोजित सेमिनार में उपर्युक्त विवरण प्रस्तुत करते हुये इस लेखक ने स्पष्ट शब्दों में कहा गया था कि पिछले वर्ष १९८७ में 'सूखा' पड़ा था, इस वर्ष १९८८ में 'गीला' पड़ेगा। प्रयाग से आगे पूर्वी भारत में अतिवृष्टि होगी बाढ़ आयेगी और फसल नष्ट होगी। इसके पश्चात् ८ जून १९८८ के नवभारत टाइम्स (लखनऊ) में पूरे वर्ष १९८८ की वर्षा की भविष्य वाणी प्रकाशित की थी जिसे यथावत् यहां दे रहे हैं–

इस साल शीघ्र नहीं देर से वर्षा होगी

"कानपुर ७ जून में मौसम विशेषज्ञ जहाँ इस वर्ष शीघ्र तथा व्यापक वर्षा होने की भविष्यवाणी कर रहे हैं वहीं पर यहाँ के एक प्रख्यात भविष्यवक्ता ने देर से वर्षा होने की भविष्यवाणी की है।

रश्मिविज्ञान ज्योतिष पत्रिका के सम्पादक तथा ज्योतिषाचार्य पं० उमाशंकर दुबे ने एक भेट में इस वर्ष के अन्त तक मौसम के बारे में भविष्यवाणी की। उन्होंने बताया कि वृष संक्रांति १४ मई को वायु-मण्डल में पड़ी है इसलिए जून के पूर्वार्द्ध तक व्यापक मानसून वर्षा का योग नहीं है। खण्ड वृष्टि के रूप में १०, १४, १६, २०, २१ जून को कुछ स्थानों में वर्षा होगी। उन्होंने बताया कि २०–२१ जून को आँधी तूफान के साथ वर्षा होगी।

पंडित उमाशंकर ने बताया कि अगले माह ७ जुलाई से व्यापक वर्षा होगी। वर्षा के साथ वायु का जोर रहेगा तथा ७, ६, १२, २० जुलाई को उत्तर भारत के अधिकांश भागों में वर्षा हो जायेगी।

उन्होंने बताया कि जुलाई में इलाहाबाद के पूर्व से आरम्भकर पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, असम, नागालैण्ड में भारी वर्षा होगी बाढ़ भी आयेगी। १६ जुलाई से १६ अगस्त तक उत्तर भारत में व्यापक रूप से सभी स्थानों पर वर्षा होगी।

अगस्त के पूर्वार्द्ध में अच्छी वर्षा का योग है। इस महीने १४, १८, २१, २५ अगस्त को अधिकांश स्थानों में वर्षा होगी। सितम्बर मास में छिटपुट वर्षा तथा कड़ी धूप निकलेगी, तापमान बढ़ेगा।

अक्टूबर मास में १६ ता० से तुला संक्रांति वरुण मंडल में पड़ती है। अतः १६ अक्टूबर से १५ नवम्बर तक रबी की फसल के बहुत लाभदायक वर्षा होने की संभावना है उन्होंने बताया कि दिसम्बर मास में धनु संक्रांति वरुण मण्डल में होने के कारण आरम्भ में कुछ स्थानों पर ओला वृष्टि और पाला पड़ने के योग हैं। दिसम्बर के उत्तरार्द्ध में उत्तर प्रदेश, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब और आन्ध्र प्रदेश में अच्छी वर्षा होगी। उन्होंने कहा कि खरीफ की फसल को जहाँ इस वर्ष क्षति पहुँचेगी वहीं पर रबी की फसल के अच्छी होने की संभावना है।

मानसून के विषय में जो पूर्वाभास महीनों पहिले दिया गया था वह पूर्ण रूप से सही उतरा। पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल आसाम में भारी वर्षा और बाढ़ से काफी नुकसान हुआ। राजस्थान में जिस क्षेत्र में चार वर्ष से वर्षा का अभाव था वहां भी काफी वर्षा हुई। राज-

स्थान में सूखी झीलें और तालाब भर गये और सूखे क्षेत्रों में हरियाली छा गई।

सन् १९८९ का मानसून

सूर्य की आर्द्रा प्रवेश लग्न के आधार पर संवत् २०४६ वि. (सन् १९८९) की वर्षा का क्या रुख रहेगा ? इसका पूर्वाभास इस प्रकार है–

२१ जून १९८९ को रात्रि १२ बजकर ५५ मिनट पर सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेगा। पूर्वोक्त अक्षांश देशान्तर पर उस समय मीन लग्न २४ अंश ३६ कला २० विकला उदय होगी। कुंभ राशि का नवांश होगा। लग्न में ग्रहों की स्थिति निम्नांकित होगी।

आर्द्रा प्रवेश लग्न सन् १९८९ ई.

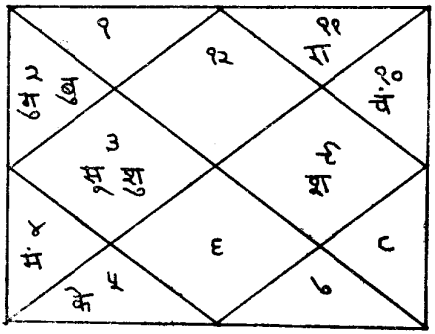

नवांश–कुंभ, लग्न में चन्द्र। चतुर्थ में बुध, शुक्र, केतु। अष्टम में मंगल, शुक्र, शनि। दशम में सूर्य, राहु। ज्योतिष के पूर्वोक्त नियमों के अनुसार विश्लेषण इस प्रकार होगा–

लग्न में उदित राशि मीन १०० प्रतिशत जलांश। नवांश लग्न कुंभ ५० प्रतिशत जलांश। लग्न में कोई ग्रह नहीं। नवांश लग्न कुंभ में पूर्ण जल तत्व का ग्रह चन्द्रमा है। अतः मानसून की अच्छी वर्षा होगी। प्रयाग से पूर्व-पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल में भारी वर्षा होगी।

तृतीय भाव पूर्वोत्तर दिशा में वृष अर्धजलीय राशि में बुध और

गुरु हैं। असम, अरुणाचल, भूटान, मेघालय में भारी वर्षा का योग बनता है ।

चतुर्थ भाव उत्तर दिशा में मिथुन निर्जल राशि है। सूर्य शुष्क-उष्ण ग्रह स्थित हैं। उन पर शनि की दृष्टि है। नवांश में चतुर्थ भाव में वृष अर्धजल राशि में बुध-शुक्र है उत्तरी भाग कश्मीर, हिमांचल प्रदेश, नेपाल के पश्चिमी भाग में कुछ विलंब से लाभदायक वर्षा होगी।

उत्तर पश्चिम में मंगल और केतु सामान्य से न्यून वर्षा के सूचक हैं।

पश्चिम दिशा में निर्जल कन्या राशि है। शनि की दृष्टि है। नवांश में सप्तम में निर्जल सिंह राशि है। गुरु की दृष्टि भी सप्तम भाव पर है, अतः कुछ विलम्ब से पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, में सामान्य वर्षा होगी। राजस्थान के कुछ भागों में वर्षा का अभाव होगा, गुजरात में लाभदायक वर्षा होगी।

नवम भाव दक्षिण पश्चिम में वृश्चिक २५ प्रतिशत जलीय राशि है। अष्टम में तुला भी २५ प्रतिशत जलीय है किन्तु नवम पर बुध और गुरु की दृष्टि है अतः महाराष्ट्र, केरल में अच्छी वर्षा होगी। यहां वर्षा शीघ्र प्रारम्भ हो जायगी। नवांश में इस दिशा में शनि, मंगल, शुक्र हैं। कुछ समुद्र तटवर्ती भागों में आँधी तेज हवा के साथ बरसात होगी।

दक्षिण दिशा में अर्धजलीय राशि धनु में शनि हैं। नवांश में दशम में सूर्य और राहु हैं। कुछ विलम्ब से दक्षिणी मध्य प्रदेश, आन्ध्र, कर्नाटक, में आँधी तूफान के साथ वर्षा होगी। एकादश भाव दक्षिण पूर्व में मकर पूर्ण जलीय राशि में चन्द्रमा है यहां भारी वर्षा का योग है।

वर्षा का सामान्य रुख अच्छा है। विशेष बात यह रहेगी कि खण्ड वृष्टि रहेगी। जब एक दिशा में वर्षा होगी तो दूसरी दिशा में वर्षा नहीं होगी। १९८९ की मानसून में खण्ड वृष्टि वायु का जोर और भाद्रपद मास में वर्षा अनियमित होगी। इस प्रकार आगे के वर्षो की ग्रह स्थिति देखकर मानसून की लांगरेन्ज फोरकास्ट भारत के प्राचीन वर्षा विज्ञान के सिद्धान्तों के आधार पर की जा सकती है। यह कोई कल्पना नहीं वास्तविकता है। भारतीय पंचांग कर्ता हर साल अपने

पंचांगों में ऐसा कर रहे हैं। यह अवश्य है कि आर्द्रा प्रवेश लग्न से मानसून का सामान्य रुख किस दिशा में कैसा रहेगा यही मालूम होता है। वर्षा का क्षेत्र, मात्रा, संभावित तारीखों को मालूम करने की विधि अगले अध्यायों में दी जा रही है।

सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश

आर्द्रा नक्षत्र में सूर्य २१ या २२ जून को प्रवेश करता है। यह ज्येष्ट मास का शुक्ल पक्ष या आषाढ़ का महीना होता है। सन् १९७३ से १९८९ की तालिका प्रस्तुत है।

सन् ई.	ता.	समय घं. I.S.L.	मास-पक्ष-तिथि
१९७३	२१ जून	२२-२९	आषाढ़ कृ-६
१९७४	२१ जून	१८-२७	आषाढ़ शु-१
१९७५	२१ जून	१०-३६	ज्येष्ठ शु-१४
१९७६	२१ जून	१६-५३	आषाढ़ शु-१०
१९७७	२१ जून	२३-०२	आषाढ़ शु-५
१९७८	२१ जून	२९-१६	आषाढ़ कृ-२
१९७९	२२ जून	११-२१	आषाढ़ कृ-१३
१९८०	२१ जून	१७-३१	ज्येष्ठ शु-(शुद्ध) ९
१९८१	२१ जून	२३-४८	आषाढ़ कृ-४
१९८२	२२ जून	५-४६	आषाढ़ शु-१
१९८३	२२ जून	११-५३	ज्येष्ठ शु-१३
१९८४	२१ जून	१८-०१	आषाढ़ कृ-८
१९८५	२१ जून	२४-१५	आषाढ़ शु-४
१९८६	२२ जून	६-२२	ज्येष्ठ पूर्णिमा
१९८७	२२ जून	१२-२६	आषाढ़ कृ-१२
१९८८	२१ जून	१८-३५	ज्येष्ठ शुक्ल (शुद्ध) ७
१९८९	२१ जून	२४-५५	आषाढ़ कृ-२

अध्याय ३

मध्यम कालीन भविष्यवाणी

MEDIUM RANGE FORECAST

मेघ गर्भ

सूर्य के आर्द्रा प्रवेश के समय की लग्न से देश की विभिन्न दिशाओं में मानसून की वर्षा का रुख मालूम होता है। यह स्थूल विचार है क्यों कि पूर्व पश्चिम आदि दिशाओं का दायरा बहुत बड़ा है। यह सभी का अनुभव है कि वर्षा किसी क्षेत्र में एक स्थान पर हुई किन्तु उसी दिशा में दस बीस मील या कभी-कभी इससे भी कम दायरे में वर्षा नहीं होती। ऐसा भी होता है कि सैकड़ों मील के दायरे में और कभी पूरे प्रदेश में व्यापक रूप से एक ही समय में बरसात होती है। यह कैसे मालूम हो कि कहां पर किस समय कितने समय तक कितनी मात्रा में वर्षा होगी। इसका पूर्व ज्ञान सूक्ष्म विचार है।

आर्द्रा प्रवेश से वर्षों आगे की वर्षा का सामान्य रुख मालूम होता है किन्तु निश्चित स्थान, समय, अवधि मात्रा का केवल आर्द्रा प्रवेश लग्न से ज्ञान नहीं होता। इस अध्याय में यही बताया जायेगा। यह मध्यम कालीन भविष्यवाणी होगी। मध्यम कालीन का अर्थ ६-७ मास आगे की वर्षा व्योरेवार बताना। इसके सूत्र वृहत्संहिता में गर्भधारणा-ध्याय में दिये हैं। इस व्योरेवार वर्षा का पूर्व ज्ञान भारत ऐसे विशाल खेतिहर देश में परमावश्यक है क्यों कि ६-७ मास पूर्व यदि आगामी वर्षा का विवरण मालूम हो जाये और ऐसा दिखाई दे कि आगामी मानसून में वर्षा का अभाव होगा, और कहां अभाव होगा तो ६-७ महीने में इसका उपाय अन्नसंग्रह सिचाई के साधनों को दुरस्त कर सरकार कर सकती है। इससे फसल का नुकसान और जनता की तकलीफें बहुत कुछ कम की जा सकती हैं। भारत की दो तिहाई कृषि वर्षा पर ही

निर्भर है। अन्न कोई ऐसी चीज नहीं है जिसका कारखानों में उत्पादन होता हो। वह भारत ऐसे विशाल कृषि प्रधान देश में वर्षा पर ही निर्भर है। अन्न कोई "लक्जरी आइटम" नहीं है कि यदि उपलब्ध न हो तो भी काम चल जायेगा, जिन्दगी कायम रहेगी। भारत के प्राचीन लोग इस बात को भली भाँति जानते थे इसीलिये वर्षा विज्ञान को इतना विकसित कर लिया था कि आधुनिक विज्ञान अभी उस सीमा तक नहीं पहुंच सका है। गर्भधारणाध्याय के प्रथम श्लोक में वराहमिहिर कहते हैं–

अन्नं जगतः प्राणाः प्रावृट्कालस्य चान्नमायत्तम्।
यस्मादतः परीक्ष्यः प्रावृट् काल प्रयत्नेन॥

"अन्न इस जगत का प्राण है और अन्न का उत्पादन वर्षा पर निर्भर है, अतः वर्षा ऋतु आगे कैसी होगी इसका प्रयत्न पूर्वक सावधानी से परीक्षण करना चाहिये।"

वर्षा का भविष्य जानने की विद्या कितनी प्राचीन है यह आचार्य के निम्नांकित कथन से स्पष्ट होता है–

तल्लक्षणानि मुनिभिर्यानि निबद्धानि तानि दृष्टवेदम्।
क्रियते गर्ग पराशर काश्यप वज्रादि रचितानि॥

"वर्षा सम्बन्धी जिन नियमों को गर्ग, पराशर, काश्यप, वज्र आदि मुनियों ने सूत्र बद्ध किया है, उन्हें समझ कर मैं वर्षा के लक्षणों को कह रहा हूं। आदि शब्द से वराहमिहिर के पूर्ववर्ती आचार्य बादरायण, असित देवल, विष्णुगुप्त से आशय है। इससे यह साफ जाहिर होता है कि यह विज्ञान भारत में बहुत प्राचीन काल गर्ग, पराशर, कश्यप के समय से चला आ रहा है।

इस महत्वपूर्ण लोक हितकारी विज्ञान का अध्ययन किस प्रकार करना चाहिये और ध्यान पूर्वक अध्ययन कर लिया गया है तो यह कितना सही उतरता है इसके लिये कहते है–

दैवविदविहितचित्तो द्यु निशं यो गर्भलक्षणे भवति।
तस्य मुनेरिव वाणी न भवति मिथ्याम्बुनिर्देशे॥

"जो दैवज्ञ एकाग्रता पूर्वक दिन रात गर्भ लक्षणों का अध्ययन

निरीक्षण करता रहता है वर्षा के विषय में उसकी भविष्यवाणी मुनियों की वाणी की तरह कभी मिथ्या नहीं होती।"

आचार्य की यह अतिशयोक्ति या गर्वोक्ति नहीं है वरन् आत्म-विश्वास है जो कि उनके स्वानुभव और गहन अध्ययन परीक्षण पर निर्भर है।

गर्भ क्या है ?

संसार में जो घटनाएं घटती हैं उनमें कार्य कारण सम्बन्ध होता है, कोई भी घटना आकस्मिक रूप से नहीं घटित होगी। यह अलग बात है कि जिसका कारण हम नहीं जान पाते उसे संयोग या आकस्मिक कह देते हैं। वर्षा होना यह भी आकस्मिक नहीं है, इसके भी कारण हैं। इसका भी कहीं बीज- होना चाहिये जो वर्षा के फल के रूप में प्रकट होता है। जब कोई बालक जन्मता है तो प्रसव एक घटना है। इसका बीजारोपण १० चान्द्रमास पूर्व किसी समय हुआ होगा जिसे गर्भाधान कहते हैं, प्रसव उसका फल है। वर्षा का गर्भ भी इसी प्रकार है। डाक्टर परीक्षण कर गर्भ की स्थिति और अनुमानित प्रसव काल बताता है। दैवज्ञ बादलों का परीक्षण कर आगामी वर्षा की स्थिति का पूर्वाभास कराता है। जिस प्रकार चन्द्र की स्थिति से प्रसव काल का अनुमान होता है उसी प्रकार चन्द्रमा की स्थिति से ही मेघों के प्रसव काल को मालूम करते हैं। गर्भ का प्रसव और बादलों का बरसना गर्भ धारण के काल के आधार पर एक गणितागत नियम में बंधे हैं। गर्भ धारण के पश्चात् प्रतिकूल परिस्थितियां उत्पन्न होने पर गर्भस्राव भी हो जाता है, वही नियम मेघ पर भी लागू है। हजारों वर्ष निरीक्षण और अनुभव करके भारत के प्राचीन ऋतु वैज्ञानिकों ने इस संदर्भ में प्राकृतिक नियमों को सूत्र बद्ध किया है। मेघ गर्भ का अर्थ है वर्षा ऋतु के ६ मास पूर्व मेघों का परीक्षण अर्थात् जाड़े की ऋतु में ही आगे आने वाली बरसात की स्थिति को मालूम करने के लिये शीत ऋतु के बादलों का निरीक्षण और परीक्षण तथा तत्कालीन प्रकृति के लक्षणों और मुख्य रूप से चन्द्रमा की नाक्षत्रिक स्थिति और गौण रूप से ग्रहों की स्थिति नोट करना।

गर्भ परीक्षण कब से आरम्भ करें, कब समाप्त करें ?

गर्भ याने मेघों का परीक्षण कब प्रारम्भ किया जाय इसमें प्राचीनों में कुछ मतान्तर हैं। इसका उल्लेख वराहमिहिर ने प्रारम्भ में ही कर दिया है। वे लिखते हैं–

केचित् वदन्ति कार्तिक शुक्लान्तमतीत्य गर्भदिवसाः स्युः।
न च तन्मतं बहूनां गर्गादीनां मतं वक्ष्ये ।।

"कुछ का मत है कि कार्तिक पूर्णिमा की समाप्ति से गर्भकाल प्रारम्भ होता है, किन्तु यह कथन सर्वसम्मत नहीं है। अतः गर्भ आदि अधिकांश आचार्यों का जो मत है उसे मैं यहाँ कहता हूँ।

कार्तिक पूर्णिमा के पश्चात से गर्भ विचार के लिए आचार्य सिद्धसेन ने कहा है–

शुक्लपक्षमतिक्रम्य कार्तिकस्य विचारयेत् ।
गर्भाणां सम्भवं सम्यक् सस्य सम्पतिकारणम् ।।

गर्ग का मत दूसरा है, वे कहते हैं–

शुक्लादौ मार्गशीर्षस्य पूर्वाषाढा व्यवस्थिते।
निशाकरे तु गर्भाणां तत्रादौ लक्षणं वदेत् ।।

"मार्ग शीर्ष पक्ष में जब चन्द्रमा पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में हों वहाँ से गर्भ लक्षण कहना चाहिए। जैसे कि सन् १९८९ में तारीख १० दिसम्बर मार्गशीर्ष शुक्ल २ को चन्द्रमा पूर्वाषाढा नक्षत्र में रात्रि १० बजकर १ मिनट पर प्रवेश करेगा अतः यहीं से गर्भ देखें। काश्यप का भी ऐसा ही मत है–

सितादौ मार्गशीर्षस्य प्रतिपद्दिवसे तथा।
पूर्वाषाढगतेचन्द्रे गर्भाणां धारणं भवेत् ।।

वराह ने सिद्धसेन के मत को मान्यता नहीं दी है। गर्ग और कश्यप के वचनों को माना है। वे कहते हैं-

मार्गशिरः सितपक्ष प्रतिपत्प्रभृति क्षपाकरे अषाढाम्।
पूर्वा वा समुपगते गर्भाणां लक्षणं ज्ञेयम् ।।

अतः मेघ परीक्षण मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष में जब चन्द्रमा पूर्वाषाढा नक्षत्र में जाय वहाँ से आरम्भ करना चाहिए। मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष में

चंद्रमा पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में द्वितीया तृतीया या चतुर्थी तिथि में होता है। अंग्रेजी कलेन्डर से यह तिथियाँ नवम्बर के उत्तरार्द्ध और दिसम्बर के पूर्वार्द्ध में पड़ती हैं। नीचे पिछले १७ वर्ष की तालिका देखें।

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष में पूर्वाषाढा में चन्द्र की तिथियाँ

सन्	अंग्रेजी ता०	चान्द्रतिथि
१९७३	२८ नवम्बर	३
१९७४	१६ दिसम्बर	३
१९७५	५ दिसम्बर	३
१९७६	२५ नवम्बर	४
१९७७	१२ दिसम्बर	२
१९७८	३ दिसम्बर	४
१९७९	२३ नवम्बर	४
१९८०	१० दिसम्बर	३
१९८१	३० नवम्बर	४
१९८२	१८ नवम्बर	४
१९८३	७ दिसम्बर	३
१९८४	२६ नवम्बर	४
१९८५	१४ दिसम्बर	३
१९८६	१४ दिसम्बर	३
१९८७	४ दिसम्बर	३
१९८७	२४ नवम्बर	४
१९८८	११ दिसम्बर	२
१९८९	१० दिसम्बर	२

गर्भ परीक्षण विधि

आगे परीक्षण विधि और उनके आधार पर परिणाम के विषय में स्पष्ट किया गया है।

यन्नक्षत्रमुपगते गर्भश्चन्द्रे भवेत् स चन्द्र वशात्।
पञ्चनवते दिनशते तत्रैव प्रसवमायाति ॥

"चन्द्रमा के जिस नक्षत्र में जाने से गर्भ होता है। १९५ दिन के पश्चात् उसी नक्षत्र में चन्द्रमा के जाने पर प्रसव होता है।"

यह श्लोक बहुत महत्वपूर्ण है। पहले यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि गर्भ का क्या अर्थ है। इसका आशय यह है कि मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष में जिस दिन चन्द्रमा पूर्वाषाढा नक्षत्र में हो उस दिन से यह देखना चाहिए कि आकाश में जिस दिन बादल दिखाई दिये वह मेघ का गर्भ कहा जाता है। वादल किसी भी दिन आकाश में आ सकते हैं उनका कोई समय निश्चित नहीं है, अतः नित्य दिन रात आकाश को देखनाहोगा। जिन दिनों में मेघ दिखाई दे उन दिनों में चन्द्रमा किस नक्षत्र में है इसे नोट करना पड़ेगा। यह निरीक्षण मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष से चैत्रशुक्ल तक चलेगा। इस निरीक्षण द्वारा आगामी वर्षा ऋतु में कब वर्षा होगी इसका ज्ञान होता है। यह परीक्षण आगामी आषाढ, श्रावण, भाद्रपद, अश्विन और कार्तिक मास की वर्षा की जानकारी देगा। निरीक्षण जिस प्रकार होगा यह आगे स्पष्ट किया जाएगा।

ऊपर के श्लोक में "पंचनवते दिन शते" तथा "स चन्द्रवशात" लिखा है। इसे स्पष्ट करना आवश्यक है।

"स चन्द्रवशात्" का अर्थ है कि जब मेघ आकाश में उठा उस दिन जो चान्द्र नक्षत्र था उसी नक्षत्र में १९५ दिन के अनन्तर जब चन्द्रमा आयेगा तब जिस स्थान पर मेघ परीक्षण किया गया है उस क्षेत्र में वर्षा होगी। यहाँ यह प्रश्न उठता है कि चान्द्रमान, नाक्षत्रमान या सौरमान किस मान से दिनों की गणना होगी। दिनों की गणना चान्द्र-मास से नहीं सोगी। वृहत् संहिता के टीकाकार भट्टोत्पल ने सावन दिन की गणना बताई है सावन दिन का अर्थ है एक सूर्योदय से आरम्भ होकर दूसरे सूर्योदय तक का एक दिन। भट्टोत्पल लिखते हैं–

यन्नक्षत्रेचन्द्रे गर्भसम्भूतः स सावनमानवशात्तन्नक्षत्रस्थे
प्रसवं याति।

अर्थात् चन्द्रमा के जिस नक्षत्र में गर्भ हुआ, बादल उठे सावन-मान से दिनों की गणना से १९५ दिन के उपरान्त चन्द्रमा जब उसी नक्षत्र में होगा तब वर्षा होगी। इसके प्रमाणस्वरूप समास संहिता का

कथन है–

पौषासित पक्षाद्यैः श्रावणशुक्लादयो विनिर्देश्याः ।
सार्द्धे षडभिर्मासैर्गभ विपाकः स नक्षत्रे ।।

"पौष आदि के कृष्णपक्ष से श्रावणशुक्ल आदि मासों में गर्भकाल के साढ़े छः महीने [१९५ दिन] उपरान्त गर्भ का विपाक अर्थात् वर्षा उसी नक्षत्र में होगी जिस नक्षत्र में चन्द्रमा उस समय था जब गर्भ यानी मेघ आकाश में दिखाई दिया ।"

एक उदाहरण से इसे स्पष्ट करते हैं–

दिनाँक ११ जनवरी १९८८ की रात को बादल कानपुर नगर में दिखाई दिये । तारीख ११ को चन्द्रमा हस्त नक्षत्र में रात को ४ बज कर २० मिनट तक था । प्रातः ४ बजे से बूंदा बाँदी शुरू हुई जो १२ तारीख को दोपहर तक चित्रा नक्षत्र में जारी रही, हल्की वर्षा हुई ।

सावनमान से जो एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक एक दिन मान कर गणना किया जाता है उससे २५ जुलाई १९८८ को १९५ दिन पूरे होंगे । ता० २० जुलाई हस्त नक्षत्र में चन्द्रमा होगा किन्तु वे १२ जनवरी से गिनने पर १९० दिन होंगे । पुनः हस्त नक्षत्र पर चन्द्रमा २६ अगस्त को दिन में १०-५३ पर आयेगा और १७ अगस्त मध्यान्ह १-५० तक रहेगा । इसके बाद चित्रा में १८ अगस्त घं० १६-२५ तक रहेगा । अतः १६ अगस्त घं० १०-५३ से १८ अगस्त घं० १६-२५ तक वर्षा का योग है ।

यह वर्षा किस क्षेत्र में होगी । यह गर्भनिरीक्षण कानपुर में किया गया अतः क्षेत्र उसी के आस-पास होना चाहिए । १२ जनवरी १९८८ को मौसम रिपोर्ट से यह मालूम हुआ कि उत्तर प्रदेश के मध्य और पश्चिमी भाग में ११ जनवरी को वर्षा हुई । पर्वतीय क्षेत्र में हिमपात शिमला में वर्षा हुई । इसलिए इन्हीं क्षेत्रों में १६ और १८ अगस्त के मध्य हस्त और चित्रा नक्षत्र के चन्द्रमा में वर्षा होगी । २०-२१ जुलाई को भी वर्षा हो सकती है ।

यदि हम भविष्यवाणी का और निश्चयात्मक रूप देना चाहें तो सप्तनाडी चक्र का भी उपयोग कर सकते हैं । १६ अगस्त ८८ को सूर्य

मधा अमृता नाडी, चन्द्र हस्त सौम्या नाड़ी, बुध पूर्वाफाल्गुनी जल नाडी और शुक्र आर्द्रा सौम्या नाड़ी में होंगे । वृहस्पति रोहिणी वायु नाडी में है । सभी ग्रह सौम्य नाडियों में हैं अतः वायु के साथ निश्चित रूप से उपयुक्त क्षेत्र में वर्षा होगी ।

वर्षा का पक्षमास समय

सित पक्षभवाः कृष्णे कृष्णाद्यसम्भवा रात्रौ ।
नक्तं प्रभवाश्चाचहनि संध्याजाताश्च सन्ध्याम् ।।

"शुक्ल पक्ष का पैदा हुआ गर्भ कृष्ण पक्ष में और कृष्ण पक्ष का शुक्ल पक्ष में, दिन का गर्भ रात्रि में और रात्रि का गर्भ दिन में और संध्या का गर्भ विपरीत संध्याकाल में प्रसव को प्राप्त होता है ।"

दिन और रात्रि के सन्धिकाल को संध्याकाल कहते हैं । विपरीत संध्या का अर्थ है यदि मेघ प्रातःकाल उठे हैं तो वर्षा ऋतु में वे सायंकाल बर्षा करेंगे और सायंकाल उठे तो प्रातः वर्षा करेंगे ।

मृगशीर्षाद्या गर्भा मन्दफला पौषशुक्ल जाताश्च ।
पौषस्य कृष्णपक्षेण निर्दिशेत् श्रावणस्यसितम् ।।
माद्यसितोत्था गर्भा श्रावणकृष्णे प्रसूतमायान्ति ।
माद्यस्य कृष्णपक्षेण निर्दिशेद् भाद्रपदशुक्लम् ।।
फाल्गुनशुक्ल समुत्था भाद्रपदस्यासिते विनिर्देश्योः ।
तस्यैव कृष्णपक्षोद्भवास्तु ये ते अश्वयुक् शुक्ले ।।
चैत्रसितपक्षजातोः कृष्ण अश्वयुजस्य वारिदागर्भाः ।
चैत्रासित सम्भूता कार्तिक शुक्लेऽभिवर्षन्ति ।।

मार्गशीर्ष और पौष शुक्ल के गर्भ मन्दफलदायक हैं, अर्थात् कम वर्षा करेंगे । जो गर्भ पौष कृष्ण का होगा वह श्रावण शुक्ल पक्ष में वर्षा करेगा । माघ शुक्ल का गर्भ श्रावण कृष्ण पक्ष में, माघ कृष्ण पक्ष का भाद्र शुक्ल में, फाल्गुन शुक्ल का भाद्र कृष्ण में, फाल्गुन कृष्ण पक्ष का गर्भ अश्विन शुक्ल में, चैत्र शुक्ल का अश्विन कृष्ण में, चैत्र कृष्ण का गर्भ कार्तिक शुक्ल में वर्षा करेगा । निम्नांकित तालिका देखें–

गर्भ मास पक्ष	वर्षा मास पक्ष
पौष कृष्ण	श्रावण शुक्ल

माघ शुक्ल	श्रावण कृष्ण
माघ कृष्ण	भाद्र शुक्ल
फाल्गुन शुक्ल	भाद्र कृष्ण
फाल्गुन कृष्ण	आश्विन शुक्ल
चैत्र शुक्ल	आश्विन कृष्ण
चैत्र कृष्ण	कार्तिक शुक्ल

गर्ग का कथन इस प्रकार है–

माघेन श्रावणं विन्द्यान्नभस्यं फाल्गुनेन तु ।
चैत्रेणाश्वयुजं प्राहुर्वैशाखेन तु कार्तिकम् ।।
शुक्लपक्षेण कृष्णं तु कृष्णपक्षेण चेतरम् ।
रात्र्य अन्होश्च विपर्यासं कार्यकाले विनिश्चयः ।।

मेघ गर्भ के विषय में पराशर बचन इस प्रकार है–

अथ माघेनश्रावणं फाल्गुनेन भाद्रपदं चैत्रेणाश्वयुजं वैशाखेन तु कार्तिकम् शुक्लेन कृष्णं कृष्णेन शुक्लं दिवसेन रात्रि रात्र्या दिवसं गर्भा प्रवर्षन्ति ।

महर्षि गर्ग और पराशर के अनुसार माघ मास का गर्भ श्रावण में, फाल्गुन का भाद्रपद में, चैत्र मास का अश्विन में, और वैशाख मास का कार्तिक में वर्षा करता है । शुक्ल पक्ष का कृष्ण पक्ष में, कृष्ण पक्ष का शुक्ल पक्ष में, रात्रि का गर्भ दिन में और दिन का गर्भ रात्रि में बरसता है ।

वराहमिहिर तथा पराशर और गर्ग के कथन में अन्तर दिखाई देता है ।

वराहमिहिर का कहना है कि मार्गशीर्ष और पौषशुक्ल के गर्भ मन्द वर्षा कारक हैं । उन्होंने यह कहने के पश्चात पौष कृष्ण पक्ष से चैत्र कृष्ण पक्ष तक के गर्भों के वर्षा के आगामी मास पक्ष बताये हैं । उन्होंने वैशाख का कोई जिक्र नहीं किया है । कार्तिक शुक्ल तक की वर्षा का तारतम्य निश्चित किया है ।

गर्ग और पराशर ने पक्ष का वर्णन करते हुए माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख के गर्भों से श्रावण भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक तक की वर्षा बताई है ।

वराह, गर्ग, पराशर ने कार्तिक तक की वर्षा बताई है इसमें कोई अन्तर नहीं है। वराह ने चैत्र कृष्ण से गर्भ निरीक्षण समाप्त कर दिया किन्तु गर्ग, पराशर उसे वैशाख तक ले जाते हैं, फल तीनों ही आचार्य कार्तिक तक के कहते हैं। वराह चैत्र कृष्ण के गर्भ से कार्तिक को जोड़ते हैं जब कि गर्ग और पराशर वैशाख को कार्तिक से जोड़ रहे हैं। यहाँ संशय की स्थिति उत्पन्न होती है, मतभेद प्रतीत होता है जो कि नहीं होना चाहिए क्योंकि वराहमिहिर ने प्रारम्भ में ही कहा है कि गर्ग, पराशर, कश्यप ने जो सिद्धान्त निश्चित किये हैं मैं उन्हें कह रहा हूँ। संशय की इस स्थिति का स्पष्टीकरण सर्वप्रथम आवश्यक है क्योंकि बिना इसे साफ हुए गणना में गलती हो सकती है।

मास पद्धति

प्रतीत होने वाला मतान्तर मास पद्धति का है अन्यथा कोई मत-भेद नहीं है। भारत में वैदिक काल से पूर्णिमान्त और अमान्त दो प्रकार के चान्द्रमास प्रचलित हैं। पूर्णिमान्त का अर्थ है वह मास जो पूर्णिमा को समाप्त हो। पूर्णिमा और पूर्णमासी शब्द का अर्थ ही यह है कि मास पूर्ण हो गया। जिस पद्धति में मास कृष्ण प्रतिपदा से प्रारम्भ होकर शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को समाप्त हो वह पूर्णिमान्त है। जिसमें शुक्ल प्रतिपदा से आरम्भ होकर कृष्ण पक्ष की अमावश्या को समाप्त हो वह अमान्त है।

काल चक्र में तीन विन्दु हैं— उत्पत्ति, विकास का चरम विन्दु और विनाश। विनाश के बाद पुनः उत्पत्ति और विकास एवं विनाश। यह चक्र निरन्तर चलता रहता है। चन्द्र की बढ़ती घटती कलायें, उसका पूर्णिमा को पूर्ण होना और अमावस्या को आकाश में लोप होना इसी का सूचक है।

शुक्ल पक्ष क्रमिक विकास का और कृष्ण पक्ष क्रमिक ह्रास का, सूचक है। क्रमिक विकास से प्रारम्भ होकर पूर्णिमा की चरम विन्दु पर पहुँच कर क्रमिक ह्रास की प्रक्रिया से गुजर कर अमावस्या को समाप्त होता है वह अमान्त है।

पूर्णिमान्त विकास के चरम बिन्दु के पश्चात् ह्रास की प्रक्रिया

से प्रारम्भ होकर अमावस्या को अवसान विन्दु पर पहुँच कर क्रमिक विकास से गुजर कर पूर्णिमा को विकास के चरम विन्दु पर होता है।

अमान्त मास में प्रथम पक्ष शुक्ल पक्ष होता है और पर पक्ष कृष्ण पक्ष होता है। पूर्णिमान्त में प्रथम पक्ष कृष्ण पक्ष और द्वितीय पक्ष शुक्ल पक्ष होता है, केवल क्रम का यह अन्तर है।

मासो में जो मतान्तर प्रतीत होता है उसका कारण यह है कि वराहमिहिर ने अमान्त मास लिए हैं, गर्ग और पराशर ने पूर्णिमान्त मास माने हैं।

उत्तर भारत में पूर्णिमान्त मास तथा दक्षिण में अमान्त का प्रचलन है। पूर्णिमान्त और अमान्त दोनों के शुक्ल पक्ष एक ही नाम के मास बोले जाते हैं। उसमें मास के नाम का अन्तर नहीं है, किन्तु दक्षिण का कृष्णपक्ष जिस मास का होगा पूर्णिमान्त वाले उसे अग्रिम मास का कृष्ण पक्ष कहेंगे। उत्तर और दक्षिण में चैत्र शुक्ल समान है किन्तु दक्षिण अमान्त वाले जिसे चैत्र कृष्ण कहते हैं उसे पूर्णिमान्त वाले वैशाख कृष्ण कहते बस इतना अन्तर नामों का है।

"वृहत्संहिता के टीकाकार भट्टोत्पल ने इस अन्तर को स्पष्ट करते हुए लिखा है–

मृगशीर्षो मार्गशीर्षस्तदाद्या प्रथमपक्ष जाता गर्भामन्दफलःस्वल्प वर्षदाभवन्ति। प्रथम पक्ष शुक्लपक्षस्तत्र जाता सम्भूताः। अस्मिन् गर्भ-लक्षणे चैत्रसिताद्या मासा विज्ञातव्याः। यथा चैत्रस्यशुक्लपक्षो वैशाखस्य कृष्णपक्ष इत्येष चैत्र मासः। एवमन्येषां मासानामपि परिकल्पना कार्या। एवमेतच्चान्द्रमानम्।

"मृगशीर्षाद्या अर्थात् मार्ग शीर्ष के प्रथम पक्ष का गर्भमन्द फल-दायक होता है कम वर्षा १६५ दिन के बाद करता है। यहाँ प्रथम पक्ष का आशय शुक्ल पक्ष है। जैसे चैत्र का शुक्ल पक्ष और वैशाख कृष्ण मिलकर अमान्त चैत्र होगा"। भट्टोत्पल की उपर्युक्त टिप्पणी से स्पष्ट है कि वराहमिहिर ने अमान्त मास लिए हैं। भट्टोत्पल ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि "चैत्र शुक्ल और वैशाख कृष्ण पूर्णिमान्त मास को मानने वाले मिलाकर अमान्त चैत्र समझें। इसी प्रकार अन्य मासों की भी परिकल्पना करें।"

मासों के नाम और क्रम दोनों पद्धतियों के एक ही हैं। उत्तर भारत के पंचागों में भी पूर्णिमा की संख्या १५ और अमावस्या की संख्या ३० दी जाती है अर्थात् मास की समाप्ति की संख्या ३० है अधिमास की गणना अमान्त को लेकर करते हैं।

वर्ष के पूरे मासों की मान्यता का अन्तर निम्नांकित तालिका में स्पष्ट करते हैं–

अमान्त का	पूर्णिमान्त का
चैत्र	चैत्र शुक्ल व वैशाख कृष्ण
वैशाख	वैशाख शुक्ल व ज्येष्ठ कृष्ण
ज्येष्ठ	ज्येष्ठ शुक्ल व आषाढ़ कृष्ण
आषाढ़	आषाढ़ शुक्ल व श्रावन कृष्ण
श्रावण	श्रावण शुक्ल व भाद्र कृष्ण
भाद्र	भाद्र शुक्ल व आश्विन कृष्ण
आश्विन	आश्विन शुक्ल व कार्तिक कृष्ण
कार्तिक	कार्तिक शुक्ल व मार्गशीर्ष कृष्ण
मार्गशीर्ष	मार्गशीर्ष शुक्ल व पौष कृष्ण
पौष	पौष शुक्ल व माघ कृष्ण
माघ	माघ शुक्ल व फाल्गुन कृष्ण
फाल्गुन	फाल्गुन शुक्ल व चैत्र कृष्ण

मेघ और वायु की दिशा

बादलों के निरीक्षण में यह भी देखना चाहिए कि बादल किस दिशा से उठे और हवा किस दिशा से बह रही है। इससे यह पता लगेगा कि मानसून की वर्षा में जो कि गर्भ के १९५ दिन के अनन्तर होगी उस समय बादल किस दिशा में उठ कर वर्षा करेंगे और हवा किस दिशा से चलेगी। इसका नियम इस प्रकार है–

पूर्वोद्भूताः पश्चाद्परोत्थाः प्राग्भवन्ति जीमूताः।
शेषास्वपि दिक्ष्वेवं विपर्यो भवति वायोश्च ॥

यदि गर्भ समय मेघ पूर्व दिशा में उठते हैं तो वर्षा ऋतु में वे पश्चिम दिशा से उठेंगे। गर्भकाल में बादल जिस दिशा में उठेंगे, वर्षा

ऋतु में उससे विपरीत दिशा से उठकर बरसेंगे। यही स्थिति वायु की भी होगी। गर्भ काल में हवा जिस दिशा से चल रही थी वर्षा ऋतु में उससे विपरीत दिशा से चलेगी।

गर्भ समय शुभाशुभ लक्षण

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष से चैत्र तक गर्भ निरीक्षण का समय है। क्या इन महीनों में उठने वाला हर बादल बरसात में होने वाली वर्षा का एक ही प्रकार का परिणाम बताता है? जिस समय बादल का निरीक्षण किया जा रहा है उस समय के लक्षणों को नोट करना चाहिए। कुछ ऐसे चिन्ह हैं जो अच्छी लाभदायक वर्षा के सूचक हैं, और ऐसे भी लक्षण हैं जो वर्षा के अभाव को बतायेंगे। अगर इन लक्षणों की ओर ध्यान न दिया गया तो वर्षा ऋतु की भविष्यवाणी में फर्क पड़ जायेगा या वह बिल्कुल गलत हो जायेगी। पहिले शुभ लक्षणों को बताया जा रहा है–

शुभ लक्षण

ह्वादिमृदूदक्शिवशक्र दिग्भवो मारुतो वियद्विमलम्।
स्निग्धसित बहुल परिवेश परिवृतौ हिममयरवाकौ॥
पृथु बहुल स्निग्धघनं घनसूचीक्षुरक लोहिताभ्रयुतम्।
काकाण्डमेचाकाभं वियद्विशुद्धेन्दु नक्षत्रम्॥
सुरचापमन्द्र गर्जित विद्युन्प्रति सूर्यका शुभासन्ध्या।
शशिशिवशक्रास्थाः शान्तरवाः पक्षिमृगसंघाः॥
विपुला प्रदक्षिणचराः स्निग्ध मयूखा ग्रहानिरुपसर्गाः।
तरवश्चः निरुपसृष्टांकरा नर चतुष्पदाहृष्टाः॥
गर्भाणां पुष्टिकराः सर्वेषामेव योऽतु तु विशेषः।
स्वर्त्तुस्वभाव जनितो गर्भ विवृद्धयै तमभिधास्ये॥

गर्भ समय निम्नांकित लक्षण आगामी वर्षा ऋतु में अच्छी बरसात के सूचक हैं–

१. उत्तर दिशा, उत्तर पूर्व अथवा पूर्व दिशा से आनन्दायक शीतल मन्द वायु बह रही हो।
२. आकाश स्वच्छ हो।

३. सूर्य/चन्द्र स्निग्ध परिवेश [मण्डल] से घिरे हों।
४. आकाश में स्निग्ध घने बादल हों।
५. मेघ सुई या छूरे की शक्ल के हों।
६. मेघ लोहित रंग लालिमा लिए हुए हों। बादलों का यह रंग प्रातः सायं दिखाई देता है।
७. बादलों का रंग कौये के अण्डे या मोर की गर्दन की तरह हो।
८. चन्द्रमा और तारा स्वच्छ द्युति से युक्त हों, धुँधले या मटमैले न हों।
९. प्रातः या सन्ध्या समय इन्द्रधनुष दिखाई दे।
१०. बादल गर्जे और बिजली की चमक दिखाई दे।
११. प्रतिसूर्य दिखाई दे।
१२. पशु-पक्षियों के समूह प्रसन्नता से पूर्व, उत्तर पूर्व या उत्तर दिशा में कलरव कर रहे हों किन्तु वे सूर्य की ओर मुख न किये हों।
१३. ग्रह चमकदार दिखाई दे रहे हों नक्षत्र के उत्तर की ओर संचरण कर रह हों।
१४. शुभ ग्रह क्रूर ग्रहों से पीड़ित न हों अर्थात् क्रूर ग्रहों से युत न हो।
१५. वृक्षों के अंकुर स्वस्थ हों।
१६. मनुष्य और पशु प्रसन्न चित्त हों।

उपर्युक्त लक्षणों में गर्भ समय जितने अधिक लक्षण होंगे आने वाले मानसून में उतनी अच्छी वर्षा होगी।

सामान्य से अधिक वर्षा चिन्ह

कभी-कभी बरसात में मूसलाधार वर्षा भी होती है जो हानिकारक हो जाती है। इसका पूर्वाभास गर्भ समय के लक्षणों से हो जाता है। वे चिन्ह इस प्रकार हैं-

मुक्तारजत निकाशास्तमाल नीलोत्पलाञ्जनाभासाः।
जलचर सत्वाकारा गर्भेषु घनाः प्रभूतजला ।।

गर्भकाल में बादल मोती या चाँदी की तरह श्वेत हो अथवा तमाल या नील कमल के रंग के हों। जलचर जीवों का उनका आकार हो जैसे मछली, कछुवा, मगर, सूंस के आकार के हों। सूर्य की तीव्र

किरणों से तप्त मेघ हों। हल्की हवा चल रही हो यदि ऐसे चिन्ह दिखाई दे रहे हों तो वर्षा काल में बादल मानों क्रोधित होकर जल बरसायेंगे। भावार्थ यह कि मूसलाधार अतिवृष्टि होगी।

वर्षा कहाँ और कब होगी ? उस क्षेत्र में होगी जहां मेघ निरीक्षण उपर्युक्त प्रकार का हुआ है और सम्बन्धित मास पक्ष में उस समय होगी जब चन्द्रमा साढ़े छः महीने बाद उसी नक्षत्र में आयेगा जिस चान्द्र नक्षत्र में ये चिन्ह देखे गये हैं।

टिप्पणी–

सारांश यह है कि गर्भ समय चन्द्रमा का नक्षत्र, मास पक्ष तिथि बादलों और वायु की दिशा के साथ ही यह भी नोट करना चाहिए कि बादलों का रंग और आकार क्या है। इसके लिए सर्वोत्तम उपाय यह है कि बादलों का कलर फोटोग्राफ ले लिया जाय।

मास अनुसार गर्भ के शुभ लक्षण

मार्ग शीर्ष से वैशाख तक गर्भ निरीक्षण का विधान है। किस महीने के गर्भ में कौन से शुभ लक्षण हैं इनका उल्लेख है–

पौषे समार्गशीर्षे सन्ध्या रागोऽम्बुदाः सपरिवेषाः।
नात्यर्थं मृगशीर्षेशीतं पौषेऽतिहिमपातः॥
माघे प्रबलो वायुस्तुषार कलुषद्युती रवि शशांकौ।
अतिशीतं सघनस्य च भानोरस्तोदयौ धन्यौ॥
फाल्गुनमासे रूक्ष चण्डः पवनोऽभ्रसंप्लवाः स्निग्धाः।
परिवेषाश्चासकलाः कपिलस्ताम्रो रविश्च शुभः॥
पवन घनवृष्टि युक्ताश्चैत्रे गर्भाः शुभा सपरिवेषा।
घन पवन सलिल विद्युत्स्तनितैश्च हिताय वैशाखे॥

मार्गशीर्ष पौष मास

यदि इन महीनों में सूर्यास्त के समय क्षितिज पर लाल रंग का प्रकाश हो। बादल परिवेष (HALO) युक्त हों तो ये शुभ चिन्ह हैं। मार्गशीर्ष और पौष मास में एक अन्तर यह बताया है कि मार्गशीर्ष में अधिक शीत नहीं होना चाहिए और पौष मास में तुषार (पाला) और हिमपात नहीं होना चाहिए।

माघ मास

माघ मास के गर्भ उसी स्थिति में शुभ अर्थात् मानसून में अच्छी वर्षा करेंगे जब कि निम्नाँकित लक्षण हों–

१. इस महीने तेज हवा चले।
२. सूर्य और चन्द्र कुहरे के कारण चमकदार न हों।
३. कड़ी सर्दी पड़े।
४. सूर्योदय और सूर्यास्त के समय पूर्वी और पश्चिमी क्षितिज पर कुछ बादल दिखाई दें।

फाल्गुन मास

१. रूखी और तेज हवा चले।
२. स्निग्ध बादल आकाश में तैर रहे हों।
३. चन्द्र सूर्य के आस-पास अपूर्ण मण्डल हो।

चैत्रमास

इस महीने में वायु चले, बादल आयें, कुछ वर्षा हो और परिवेष हो।

वैशाख मास

इह मास में बादल, वायु, कुछ वर्षा, विद्युत और बादलों का गरजना शुभ है। प्रत्येक मास के जो शुभ लक्षण बताए हैं यदि उनसे विपरीत लक्षण हों तो जिस मास में विपरीत लक्षण दिखाई दिए हैं। उससे सम्बन्धित वर्षा ऋतु के महीने में वर्षा अच्छी नहीं होगी प्रकारान्त से यह निष्कर्ष निकलता है। अतः प्रत्येक मास के उपरोक्त शुभ लक्षणों को भी ध्यान में रखना चाहिए।

गर्भोपघात

जिस प्रकार मानवों में गर्भ स्थिर होने के पश्चात गर्भपात की भी संभावना रहती है, उसी प्रकार मेघों का भी गर्भोपघात हो सकता है अर्थात सामान्य गर्भ लक्षण ठीक होने पर भी वर्षाकाल में जल नहीं बरसता। कुछ ऐसे 'उत्पात' हैं, जिनके होने पर गर्भ उपघात की स्थिति बनती है। उत्पात क्या है पहिले इसे समझ लेना चाहिए। प्रकृति या स्वभाव के विपरीत दिखाई देने वाले लक्षण संक्षेप में वे

सब उत्पात कहे जाते हैं। तीन प्रकार के उत्पात कहे गये हैं। उनके नाम हैं – भौम, अन्तरिक्ष और दिव्य। ये उत्तरोत्तर एक दूसरे से अशुभ हैं।

यः प्रकृति विपर्यासः संक्षेपतः उत्पातः।
क्षितिगगनदिव्य जातो यथोत्तरं गुरुतरोभवति॥

–संमाससंहिता

दिव्य, अंतरिक्ष और भौम उत्पात कौन से हैं और ये क्यों उत्पन्न होते हैं इन्हें भली भांति जान लेना आवश्यक है क्यों कि मानव मात्र इनसे प्रभावित होता है।

दिव्य उत्पात

ग्रह और नक्षत्रों में विकृति, उल्कापात, सूर्य और चन्द्र के चारो ओर घेरा, धूमकेतु का उदय ये दिव्य (दैवी) उत्पात हैं।

अन्तरिक्ष उत्पात

आकाश में गन्धर्वपुर, इन्द्र धनुष, दिग्दाह, किसी दिशा में आकाश का लाल हो जाना, परिध दिखाई देना, (सूर्योदय या सूर्यास्त के समय सूर्य को काटती हुई पतली मेघ रेखा को परिध कहते हैं), तूफान आना ये अन्तरिक्ष उत्पात हैं।

भौम या क्षिति उत्पात

भूमि की स्थिर और चलायमान वस्तुओं द्वारा उत्पन्न उत्पात भौम उत्पात हैं। भूकम्प, भूस्खलन, बाढ़ आना, आग लगना, विस्फोट गैस रिसना जैसा भोपाल में हुआ और २५ अगस्त १९८६ को कैमरून में अचानक प्राकृतिक गैस के निकलने से दो हजार व्यक्तियों की मृत्यु हो गई थी–ये स्थावर भौम उत्पात हैं। चर उत्पात चर जनित होते हैं जैसे वायुयान, रेल और सड़क दुर्घटनाजों का तांता लग जाना, युद्ध क्रान्ति, आतंकवादी हत्याएं जैसी कि पंजाब में नित्य हो रही हैं। उत्पातों के विषय में गर्ग कहते हैं–

स्वर्भानुकेतुनक्षत्र ग्रहतारार्क जेन्द्रजम्।
दिविचोत्पद्यते यच्च तद्दिव्यमिति कीर्तितम्।

वाय्वभ्र सन्ध्या दिग्दाह परिवेषतमांसि च ।।
खपुरं चेन्द्रचापं च तद्विन्दयादन्तरिक्षम् ।।
भूमावुत्पद्यते यच्च स्थावरं वाथ जंगमम् ।
तदैकशिकं भौममुत्पातं परिकीर्तितम् ।।

धूमकेतु का उदय, ग्रह का अतिचारी या मन्दचारी होना जैसे वृहस्पति एक राशि पर लगभग एक वर्ष संचरण करता है किन्तु सन् १९८७ में वृहस्पति २ फरवरी को मीन में आया आया और १६ जनवरी को मीन राशि छोड़ दी। ४ मास १४ दिन इस राशि में रहा। यह अतिचार है इसका दुष्प्रभाव भयंकर सूखा के रूप में प्रगट हुआ और नरसंहार कितना हुआ वह अभी लोगों को स्मरण होगा। सन १९४२ में वृहस्पति १३ मई से ४ अक्टूबर तक कुल ४ मास २१ दिन मिथुन राशि में रहा था। १९४२ को अगस्त आन्दोलन में देश के सभी नेता और लाखों देशवासी जेलों में डाल दिये गये। सन् १९८८ में वृहस्पति ४ मास १७ दिन में ही मेष राशि में रहेगा, अतः यह अतिचार घातक ही होगा। इसी प्रकार क्रूर ग्रह का मन्दचार अर्थात मध्यम मान से जितने दिन एक राशि में रहना चाहिये उससे बहुत अधिक दिन रहे तो उसे मन्दचार कहते हैं। यह मन्दचार भी अनेक प्रकार की आपत्तियों का सूचक है। जैसे कि सन १९३९ में मंगल ६ मई से ८ नवंबर तक मकर राशि में रहा था। ६ महीने के इस मन्दचार में ही द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारम्भ हुआ था। पुनः ३० दिसम्बर १९८३ से २५ सितम्बर १९८४ तक ८ महीना २५ दिन तुला और वृश्चिक राशियों में ही भ्रमण करता रहा। ३१ अक्टूबर १९८४ को प्रधान मन्त्री इन्द्रा गांधी की हत्या उसके बाद नवम्बर में जातीय दंगों में नरसंहार की घटनाएँ हुईं।

१जुलाई १९८८ से ७ जनवरी १९८९ तक मंगल पुनः मन्दचारी होकर मीन राशि में ६ मास ६ दिन रहेगा। इस काल में पृथ्वी पर सामूहिक जन हानि, हत्याकाण्ड दुर्घटनायें' राजनेताओं के जीवन पर संकट तथा अनेक प्रकार से धन जन हानि होनी निश्चित है इसका १९८९ के मानसून पर भी बुरा प्रभाव पड़ेगा। अनुभव से ऐसा

प्रतीत होता है कि ग्रह का अतिचार और मन्दचार न केवल वर्षा पर वरन् व्यापक रूप से पृथ्वी पर उपद्रव और विनाश का सूचक है उसके अनेक प्रकार हो सकते हैं। अतिचार के विषय में कहा गया है।

यदा शुभ ग्रहः कश्चित् अतिचारं करोति च।
तदा नृपाः क्षयं यान्ति दुर्भिक्षं तत्र दारुणम्॥

इसी प्रकार तूफान, भयंकर सर्दी या गर्मी, हिमपात, ओले गिरना, अतिवृष्टि सूखा महावारी ये गन्तरिक्ष उपद्रवों की मिसालें हैं। इन सभी उपद्रवों का परिणाम सामूहिक नर संहार के रूप में प्रकट होता है।

ये उत्पात क्यों उत्पन्न होते हैं। आधुनिक भौतिकवादी पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित तथाकथित वैज्ञानिक इनके कारणों की खोज करें। भारतीय ज्योतिष जो कि कार्य कारण की व्याख्या करता है। वह उत्पातों के कारण को हजारों वर्ष पूर्व खोज कर चुका है। वराह मिहिर इन उत्पातों का कारण बताते हैं–

अपचारेण नराणामुपसर्गः पापसंचयात् भवति।
संसूचयन्ति दिव्यान्तरिक्ष भौमास्त उत्पातः॥

"मनुष्यों के दुष्कर्मो से जो पाप इकट्ठा होता है उसकी दिव्य अन्तरिक्ष और भौम उत्पात सूचना देते हैं अर्थात् वे संकेत करते हैं कि निकट भविष्य में नरसंहार होने वाला है। महर्षि गर्ग ने भी यही कहा है–

अतिलोभादसत्याद्वा नास्तिक्याद्वा ग्रधर्मतः।
नरापचारान्नियतमुपसर्गः प्रवर्तते॥

"अत्यन्त लोभ, असत्य, नास्तिकता, पापाचरण मनुष्यों के ये अपचार जब बहुत बढ़ जाते हैं तब उत्पात होते हैं। वर्तमान स्थिति पर ध्यान दें, विनाश की प्रक्रिया चल रही है। हम जानते हैं कि भोगवादी संस्कृति में पले लोग गर्ग ओर पराशर के इन बचनों को हंसी में उड़ा देंगे किन्तु इससे प्रकृति के अटूट नियमों में परिवर्तन करना उनकी शक्ति के बाहर है। मुझे याद आता है कि सन् १९३४ में बिहार में जब भयंकर भूकम्प आया तो महात्मा गाँधी की टिप्पणी थी यह बिहार

के लोगों के पाप का परिणाम है जो सवर्णों ने हरिजनों पर किया है। 'क्या गाँधी ऐसा दयालु व्यक्ति बिहार के इस विनाश से द्रवित नहीं था, किन्तु उन्होंने सत्य बात कही। मुझे यह भी याद है कांग्रेस के कुछ प्रमुख नेताओं को गांधी जी को यह टिप्पणी बुरी लगी और उन्होंने इसके प्रतिकूल टिप्पणी की थी।

वस्तुतः ये उत्पात भगवान का सफाई अभियान है जिसमें वह मानव समाज की दुराचरण और पाप की गन्दगी को जब वह बहुत एकट्ठा हो जाती है तो उसे प्रकृति के द्वारा साफ करवा देता है। गीता में भी ऐसा ही कहा है। वर्तमान में पाप और भ्रष्टाचार की गन्दगी इकट्ठा हो गई है। दैव का सफाई अभियान चल रहा है।

अस्तु, अब हम मुख्य विषय पर आ जाते हैं। गर्भकाल में जो उत्पात ऊपर बताये हैं यदि वे प्रकट होते हैं तो गर्भ के मास, पक्ष और नक्षत्र की गणनानुसार वर्षा ऋतु में जिस समय वर्षा होनी चाहिए उस समय वर्षा नहीं होगी।

इसके अतिरिक्त जिस मास के जो ऋतु जनित स्वाभाविक लक्षण हैं जैसे मार्ग शीर्ष और पौष में सूर्योदय सूर्यास्त के समय क्षितिज पर आकाश का लाल होना, शीतल मन्द पवन चलना आदि लक्षण न हों तो भी भविष्य में वर्षा का अभाव जानना।

गर्भ समय के वर्षा कारक प्रमुख नक्षत्र

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष में जब चन्द्रमा पुर्वाषाढ़ा नक्षत्र में आये उस समय से गर्भ देखना चाहिए। गर्भ का अर्थ बादलों का आकाश में दिखाई देना। किसी भी दिन आकाश में बादल उठ सकते हैं। उस दिन चन्द्रमा २७ में से किसी भी नक्षत्र में हो सकता है। यहाँ आचार्य ने १९५ दिन बाद आने वाली मानसून की वर्षा का नक्षत्रों के आधार पर सूक्ष्म विवेचन किया है। सभी नक्षत्रों का चन्द्रमा एक समान वर्षा नहीं करता। इसी को बताते हैं–

भद्रपदाद्वय विश्वाम्बुदेव पैतामहेष्वथर्क्षेषु।
सर्वेष्वृतुषु विवृद्धोगर्भो बहुतोयदोभवति॥

उपर्युक्त श्लोक में पांच नक्षत्रों में से किसी में भी गर्भ समय

चन्द्रमामें होने पर बहुत वर्षा होगी ऐसा कहा है। 'बहुतोयदः' वहुत जल देने वाले ये नक्षत्र हैं। वे नक्षत्र हैं–

भद्रपदाद्वय–

पूर्वाभाद्रपद और उत्तराभाद्रपद।

विश्वेदेव–

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र इसके देवता विश्वेदेब हैं इसलिए देवता के नाम से नक्षत्र को इंगित किया है।

अम्बुदेव–

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र। पूर्वाषाढ़ा के देवता आपः हैं। आपः का अर्थ है जल, अम्बु।

पैतामह– रोहिणी नक्षत्र के देवता प्रजापति (पितामह), अतः रोहिणी को पैतामह कहा है।

टिप्पणी

इस प्रकार पाँच नक्षत्रों रोहिणी, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद को बहुतोयदः कहा है।

मार्गशीर्ष शुक्ल में चन्द्रमा के पूर्वाषाढ़ा में आने पर गर्भ निरीक्षण क्यों बताया, अन्य नक्षत्रों में क्यों नहीं। यह रहस्य उपर्युक्त श्लोक में खुलता है। पूर्वाषाढ़ा के देवता आपः या अम्बु देव जल के हैं ये उनका धर्म है कि वे प्राणियों को जल प्रदान करते हैं– जल का दूसरा पर्यायवाची नाम 'जीवन' है।

चन्द्रमा के रोहिणी प्रवेश में वायु परीक्षण क्यों बताया ये भी यहाँ स्पष्ट होता है। रोहिणी के देवता प्रजापति हैं। प्रजापति का का अर्थ है सम्पूर्ण प्राणियों को उत्पन्न और पालन करने वाला प्राणियों का जीवन आधार पानी है, अतः रोहिणी योग में वायु और मेघ निरीक्षण बताया गया है। पूर्वाभाद्रपद के देवता अजेकपाद और उत्तराभाद्रपद के अहिर्बुध्न्य हैं। ये वैदिक देवता भी सौम्य हैं। अतः इन पांच नक्षत्रों को बहुत जल देने वाला कहा गया है।

आगे अन्य पांच नक्षत्र बताए जिनमें भी चन्द्रमा के रहते गर्भ होने से शुभ फल होता है।

शतभिषगाश्लेषार्द्रास्वातिमघा संयुतः शुभोगर्भः।
पुष्णाति बहून् दिवसान् हंत्युत्पातैर्हतस्त्रिविधैः ।।

शतभिषा, आश्लेसा, आर्द्रा, स्वाती, मघा, संयुक्त गर्भ सुखदाई हैं। बहुत दिनों तक पोषण करते हैं किन्तु तीन उत्पातों से हत हुए हों तो हनन करते हैं।

दिव्य, अंतरिक्ष और भौम ये तीन उत्पात बता चुके हैं। बहुतोयदा और शुभ इनमें यह अन्तर है कि ये पाँच नक्षत्र भी वर्षा कारक हैं, किन्तु उतने नहीं जितने कि पूर्व के ५ नक्षत्र हैं। इस प्रकार तारतम्य करके वर्षा की भविष्यवाणी करना चाहिए। दस नक्षत्रों के निकल जाने पर शेष १७ नक्षत्र भी शुभ निमित्तों से युक्त होने पर, शुभ ग्रह योग होने पर वर्षा कारक होते हैं। एक बात ध्यान रखने की है कि १० शुभ नक्षत्रों में ३ उत्पात नहीं होने चाहिए। कोई भी नक्षत्र हो शुभ लक्षण होने पर अपनी-अपनी अवधि में वर्षा करते हैं। इस संदर्भ में महर्षि गर्ग के वचन भी उल्लेखनीय हैं।

प्राजापत्यं मघाश्लेषा रौद्रं चानिल वारणम्।
आषाढ़ाद्वितयं चैव तथा भद्रपदाद्वयम् ।।
नक्षत्रं दशकं चैतद्यदिस्यात् ग्राह दूषितम्।
नगर्भाः सम्पदं यान्ति योगक्षेमं न कल्पते ।।
उल्कयाभिहतं वापि केतुनावाप्यधिष्ठितम्।
न गर्भाः सम्पदं यान्ति वासवश्च न वर्षति ।।

उपर्युक्त श्लोकों में वही १० नक्षत्र बताए हैं। उत्पातों का उल्लेख भी किया है कि इनके होने पर गर्भ का शुभ फल नहीं प्राप्त होता गर्ग जी ने एक बिशेष बात और बताई है जिसे वराहमिहिर ने नहीं कहा- वह यह कि नक्षत्र ग्रह से दूषित न हो इसका आशय ये है कि उपर्युक्त १० नक्षत्रों में से किसी नक्षत्र में चन्द्रमा है तो उस नक्षत्र में शनि, राहु, मंगल, केतु को नहीं होना चाहिए।

वर्षा कितने दिन होगी

वर्षा कब होगी यह जानने के बाद प्रश्न उठता है कि वर्षा की अवधि क्या होगी वर्षा घन्टे दो घन्टे कुछ मिनट या कई दिनों तक

हो सकती है। यह सब कैसे मालूम होगा इसका सूत्र निम्नलिखित श्लोक में है।

मृगमासादिष्वष्टौ षड् षोडश विंशतिश्चतुर्युक्ता।
विंशतिरथ दिवसत्रयमेकतमर्क्षेण पंचम्यः॥

पूर्व में कहे १० नक्षत्रों में यदि उत्पात रहित गर्भ होता है तो मार्गशीर्ष, पौष, माघ फाल्गुन, चैत्र बैशाख इनमें से जिस मास के गर्भ हैं। वे १९५ दिन के पश्चात उनके वर्षा के दिन इस प्रकार होंगे–

गर्भ मास	वर्षा के दिन मानसून में
मार्गशीर्ष	८
पौष	६
माघ	१६
फाल्गुन	२४
चैत्र	२०

ओला और विद्युत पात

यदि गर्भ नक्षत्र पर क्रूर ग्रह हो तो वर्षा के साथ ओले और विद्युत पात होता है, मछलियों की वर्षा होती है। चन्द्रमा गर्भ के समय जिस नक्षत्र में है उस नक्षत्र में क्रूर ग्रह होने से ओला वृष्टि विद्युत पात होगा।

यदि गर्भ नक्षत्र सूर्य चन्द्र से अथवा शुभ ग्रह से युत या दृष्टि हो तो बहुत वर्षा होती है।

यहाँ दो योग बताये हैं– क्रूर ग्रह (राहु, केतु, शनि, मंगल) से युत नक्षत्र से ओलों की वर्षा शुभ ग्रह (गुरु, शुक्र, बुध) से युत या दृष्ट होने से बहुत वर्षा होगी।

गर्भ नष्ट लक्षण

गर्भसमयेऽतिवृष्टिर्गर्भाभावाय निर्निमित्तकृता।
द्रोणाष्टांशेऽभ्यधिके वृष्टे गर्भस्तु तो भवति॥

गर्भ के समय अतिवृष्टि गर्भ के अभाव का लक्षण है। अति वृष्टि को स्पष्ट करते हुए है कहा कि गर्भ समय में यदि १/८ द्रोण से अधिक वर्षा हो जाय तो समझना चाहिए गर्भ नष्ट हो गया अर्थात १९५ दिन के पश्चात वर्षाऋतु में वर्षा नहीं होगी। यहाँ पूरी

वर्षा ऋतु से तात्पर्य नहीं है वरन् गर्भ से १९५ दिन के उपरान्त जो दिन पक्ष मास आयेगा उसमें वर्षा नहीं होगी ।

टिप्पणी–

इस श्लोक में "निर्निमित्तकृता" अतिवृष्टि कहा है अर्थात बिना किसी लक्षण के गर्भ काल में अतिवृष्टि हो जाय तब गर्भ नष्ट मानना चाहिए । वे निमित्त कौन हैं जो स्वभाविक रूप से भारी वृष्टि करते हैं । इसका उल्लेख सद्योवर्षणा ध्याय २८ श्लोक २० में किया है–

प्रायोग्रहाणामुदयास्तकाले समागमे मण्डल संक्रमे च ।
पक्षक्षये तीक्ष्णकरायनान्ते वृष्टिर्गतेऽर्के नियमेन चार्द्राम् ।।

भारी वर्षा कारक निमित्त उपर्युक्त श्लोक के अनुसार निम्नांकित हैं–

१. ग्रह के उदय और अस्त के दिन ।
२. चन्द्रमा की ग्रह से युति ।
३. छः मण्डलों में किसी में ग्रहों का प्रवेश काल ।
४. पक्ष की समाप्ति पर ।
५. सूर्य के उत्तरायन या दक्षिणायन में प्रवेश के समय ।
६. सूर्य का आर्द्रा में प्रवेश (विशेष विवरण सद्यः वृष्टि लक्षण में देखें)

समय पर गर्भ न बरसने का प्रभाव

गर्भः पुष्टः प्रसवे ग्रहोपघातिभिर्यदि न वृष्टः ।
आत्मीय गर्भसमये करकमिश्रं ददात्यम्भः ।।

यदि पुष्ट गर्भ ग्रहों के अशुभ प्रभाव के कारण अपने समय (गर्भ से १९५ दिन पश्चात) जल नहीं बरसाता है तो पुनः जब वही गर्भकाल आयेगा ती ओलों से मिली जुली वृष्टि होगी ।

उदाहरणार्थ मानाकि माघ शुक्ल पक्ष में किसी नक्षत्र में गर्भ स्थित हुता तो पराशर के कथनानुसार श्रावण कृष्ण पक्ष में उसे उसी नक्षत्र में बरसना चाहिए, किन्तु उसी मास में तीन प्रकार के उत्पातों अथवा मंगल आदि क्रूर ग्रहों के योग के कारण उसने श्रावण में वर्षा नहीं की तो पुनः जब माघ शुक्ल पक्ष में वही नक्षत्र आयेगा जिसमें कि गर्भ स्थिति हुआ था तो ओलों से मिली हुई वर्षा उस समय होगी ।

काठिन्यंयाति यथा चिरकाल धृतं पयः ।
कालातीत तद्बत सलिलं काठिन्मुपयाति ॥

जिस प्रकार दूध अधिक समय तक रखने से जमकर कड़ा हो जाता है वैसे ही पानी (मेघों का) अधिक समय रहने से कठोर हो जाता है ।

यहाँ उपमा के द्वारा पानी के जमकर ओले का रूप धारण करने का वर्णन है ।

गर्भ समय के वर्षा कारक लक्षण

पवन सलिल विद्युत् गर्जिताऽभ्रान्वि तोय : ।
सभवति बहुतोयः पंच रूपाश्युपेतः ॥
विसृजति यदि तोयं गर्भकालेस्ति भूरि ।
प्रसवसमयभित्वा शीकराम्भः करोति ॥

पवन, वायु, विद्युत, गर्जन, मेघ इन पाँच लक्षणो से युक्त गर्भ प्रसवकाल (१९५ दिन के पश्चात) बहुत जल बरसाता है, किन्तु गर्भ काल में ही बहुत जल बरस जाय [१/८ द्रोण से अधिक]तो प्रसव काल आने पर केवल जल की फुहारें ही पड़ेगी ।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष में वायु-वर्षा परीक्षण

गर्भ लक्षण में शुक्ल पक्ष आगहायण मास से लेकर चैत तक जब आकाश में मेघ दिखाई दें तब उनके निरीक्षण और अध्ययन विधि का वर्णन किया है । इस अध्ययन से वर्षा की दूरगामी अर्थात ६-७ महीने आगे की भविष्यवाणी होती है । चैत्र में निरीक्षण अवधि समाप्त होने पर वह काल आ जाता है, जिसमें ग्रीष्म का जोर होता है, तापमान वढ़ता है, वायु का जोर रहता है, लू [गरम हवा] चलती है । सामान्य रूप से ज्ष्येठ मास में लू चलती है । सूर्य के कृत्तिका रोहिणी और मृगशीर्ष के संचरण काल में गर्मी का विशेष जोर रहता है । मृगशीर्ष नक्षत्र में सूर्य के संचरण काल में गर्मी को अपनी चरम सीमा पर होना चाहिए । ग्रीष्म काल मई मास के उत्तरार्द्ध से जून के पूर्वार्द्ध तक सामान्यतः अधिक गर्मी का होता है । उत्तर भारत में १५ जून के पश्चात लोग वर्षा का इन्तजार करने लगते हैं । सूर्य का मृग-

शीर्ष नक्षत्र में संचरण ७जून से २१ जून के मध्य होता है। इसमें एक दिन आगे पीछे हो सकता है।

गर्भधारणाध्याय में आचार्य ने ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष के अध्ययन निरीक्षण को बताया है जिससे निकट भविष्य में आने वाली वर्षा ऋतु की क्या स्थिति रहेगी इसका ज्ञान होता है।

वायु धारण

ज्यैष्ठसितेऽष्टम्याद्याश्चत्वारो वायुधारणाः दिवसाः।
मृदु शुभ पवनाः शस्ताः स्निग्ध घन स्थगित गगनाश्च॥

"ज्येष्ठ शुक्लपक्ष अष्टमी से आरम्भ कर चार दिन 'वायु धारण दिवस' है। इनमें यदि मृदु स्पर्श में सुखदायक शुभ वायु चले, आकाश में स्निग्ध बादल हों तो यह शुभ चिन्ह हैं।"

वायु धारण का अर्थ है कि इन चार दिनों में देखें कि वायु कैसी चल रही है, वह गर्म कष्टदायक है या मृदु आनन्ददायक। वायु किस दिशा से चल रही है इसे परखें। श्लोक में 'मृदु शुभ पवनाः' कहा है। वायु की दिशा देखने से वायु का शुभत्व मालूम होगा। क्योंकि उस समय पूर्व दिशा उत्तर या उत्तर पूर्व से हवा चल रही है तो उसे शुभ मानेंगे। पश्चिम और दक्षिण से चलने वाली अशुभ होगी इन दिनों पुरवा हवा यदि चलती है तो वह आर्द्र होगी, तापमान को कम करेगी, गर्मी से व्याकुल प्राणियों को राहत देगी, साथ ही शीघ्र आने वाले सूर्य के आर्द्रा प्रवेश में वर्षा की अच्छी संम्भावना की सूचक है इसलिए इसे शुभ माना है। यही बात उत्तरी और उत्तर पूर्व की ओर चलने वाली वायु के लिए लागू है। पश्चिम से चलने वाली अशुभ इसलिए कि वह गर्म हवा होगी जो कि निकट भविष्य में वर्षा के अभाव की सूचक है।

सूर्य आर्द्रा प्रवेश आषाढ मास में या कभी-कभी ज्येष्ठ शुक्ल के जन्तिम दिनों में होता है। ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी से ज्येष्ठ शुक्ल एकादशी तक वायु का रुख परखने से आर्द्रा में वर्षा का रुख मालूम हो जाता है अर्थात आषाढ़ की वर्षा का ज्ञान होता है।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की वर्षा

तत्रैवस्वात्याद्ये वृष्टे भचतुष्टये क्रमान्मासाः ।
श्रावण पूर्वाज्ञेयाः परिसुता धारणास्ताः स्युः ॥

"ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा के स्वांती से चार नक्षत्रों के भ्रमण में यदि बर्षा हो तो श्रावण को आदि लेकर आगामी चार मासों में यथाक्रम वर्षा का अभाव होगा।"

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष में स्वाती नक्षत्र में चन्द्रमा हो और उस समय वर्षा हो जाय तो श्रावण में वर्षा नहीं होगी। चन्द्र के विशाखा भ्रमण में वर्षा हो तो भाद्रपद में वर्षा का अभाव होगा। इस प्रकार अनुराधा की वर्षा से आश्विन और ज्येष्ठा के चन्द्र में वर्षा से कार्तिक में वर्षा नहीं होगी।

टिप्पणी

यह फल कहाँ पर लागू होंगे। उन क्षत्रों में जहाँ पर ज्येष्ठ शुक्ल में इन नक्षत्रों में वर्षा होगी। सारे देश पर लागू नहीं होंगे।

विशेष लक्षण

यदि ताः स्युरेकरूपाः शुभास्ततः सान्तरास्तु न शिवाय।
तास्करभयदाश्चोक्ता श्लोकाश्चाप्यत्र वसिष्ठाः ॥

"यदि वायु धारण के चार दिन वातावरण सामान्य रहे तो यह शुभ लक्षण हैं। यदि इन चार दिनों में वातावरण में अन्तर हो तो वह शुभ नहीं है। इस सम्बन्ध में वशिष्ठ के श्लोक लिख रहे हैं।"

इसके आगें वराहमिहिराचार्य के वशिष्ठ के पाँच श्लोक वृहत्संहिता में दिये हैं। इनमें वशिष्ठ ऋषि ने इन चार दिनों के लक्षण बताये हैं।

सविद्युतः सप्रषतः सपांशूत्कर मारुताः।
सार्कचन्द्र परिच्छन्ना धारणाः शुभधारणाः ॥
यदा तुविद्युतः श्रेष्ठाः शुभाशाः प्रत्युपस्थिताः।
तदापि सर्व सस्यानां वृद्धिं ब्रूयाद्विचक्षणः ॥
सपांशु वर्षाः सापश्च शुभा बालक्रिया अपि।
पक्षिणां सुस्वरा वाचः क्रीड़ा पांशु जलादिषु ॥

रविचन्द्र परीवेषाः स्निग्धामात्यन्तदूषिताः ।
वृष्टिस्तदापि विज्ञेया सर्वसस्यार्थ साधिका ।।
मेघाः स्निग्धा संहताश्च प्रदक्षिण गतिक्रियाः ।
तदास्यान्महती वृष्टिः सर्वसस्याभिवृद्धये ।।

"दामिनी चमके, जलकण और धूरि मिला पवन चले, चन्द्र सूर्य का मेघाच्छन्न होना शुभ है। श्रेष्ठ दिशाओं [पूर्व-उत्तर पूर्व-उत्तर] में बिजली चमके तो विद्वान दैवज्ञ को कहना चाहिए कि सब अनाजों की वृद्धि होगी। यदि धूल भरी आँधी के साथ जल बरसे बालक मैदान में प्रसन्नतापूर्वक खेल रहे हों, पक्षी प्रसन्नता से चहक रहें हों और धूरि या जल में क्रीड़ा करें तो शुभ है। यदि सूर्य चन्द्र के आस-पास मण्डल हो जो कि स्निग्ध हो टूटा हुआ न हो तो सम्पूर्ण धान्यो की वृद्धि करने वाली अच्छी वर्षा होती है। यदि मेघ स्निग्ध हों इकट्ठे हो रहे हों और सव्य दिशा में [Clockwise]चल रहे हों तो भारी वर्षा होगी जो कि सभी अनाजों को अच्छी उपज देगी।"

प्रवर्षण

ज्येष्ठ शुक्ल की समाप्ति के पश्चात आषाढ़ मास प्रारम्भ होता है। जैसा कि पूर्व में कहा है कि इसी मास में आर्द्रा में सूर्य का प्रवेश होता है। इस मास में सामान्यतः वर्षा प्रारम्भ हो जाती है। इस अध्याय में इसी का निरूपण किया है।

जेष्ठयां समतीतायां पूर्वाषाढादि सम्प्रवृष्टेन ।
शुभमशुभं वा वाच्यं परिमाणं चाम्भसस्तज्ज्ञैः ।।

ज्येष्ठ की पूर्णिमा के पश्चात पूर्वाषाढा नक्षत्र से बर्षा का परिमाण और शुभाशुभ दैवज्ञ मालूम करे।

गर्ग का बचन भी इसी प्रकार है-

ज्येष्ठे मूलमतिक्रम्य मासप्रतिपदग्रतः ।
वर्षासु वृष्टिज्ञानार्थं निमित्तान्युपलक्षयेत् ।।

गर्ग ने 'मूलम् अतिक्रत्य' कहा है भाव एक ही है। मूल के पश्चात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र आता है। प्रतिपदग्रतः से आषाढ प्रतिपदा से आगे वर्षा को जानने के लिए निमित्तों कों देखें।

वर्षा की मात्रा जानने के लिए कहते हैं–

हस्तविशालं कुण्डकमधिकृत्याम्बु प्रमाणनिर्देशः ।
पंचाशत्पलमाढकमनेन मिन्नुयाज्जलं पतितम् ॥

इस श्लोक का अर्थ है कि एक हाथ विस्तार का कुंड एक आढक [५० पल] धारता का लेकर उसमें वर्षा का कितना जल आया है इसे देखें ।

आषाढ की प्रथम वर्षा किसे मानना चाहिए । मान लें बादल आये और जल के कुछ छींटे पड़ गये तो क्या उसे प्रथम वर्षा मान लेंगे इसके लिए आचार्य वास्तविक वर्षा की पहिचान बताते हैं ।

येन धरित्री मुद्राजनिता वा बिन्दवस्तृणाग्रेषु ।
वृष्टेन तेन वाच्यं परिमाणं वारिणः प्रथमम् ॥

जिस वर्षा से धरती की धूल बैठ जाय अथवा घास के शिरों पर जल बिन्दु दिखाई दें उसे वर्षा मानना चाहिए ।

आषाढ़ मास में पूर्वाषाढा नक्षत्र के चन्द्रमा के पश्चात् जिस नक्षत्र में उपर्लिखित अनुसार वर्षा हो उस नक्षत्र को ध्यान में रखें ।

केचिद्यथाभिवृष्टं दश योजन मण्डलं वदन्तन्ये ।
गर्ग वसिष्ठ पराशर मतमेतद् द्वादशान्नपरम् ॥

कुछ [काश्यप आदि] का मत है कि यदि किसी क्षेत्र में प्रारम्भ में वर्षा होती है तो उस क्षेत्र में वर्षाऋतु में आगे अच्छी बरसात होगी ।

यथा काश्यप वचन है ।

प्रवर्षणे यथादेशं वर्षणं यदि दृश्यते ।
वर्षाकालं समासाद्य वासवो बहुवर्षति ॥

इस विषय में देवल का मत है–

प्रवर्षणं यदा दृष्टं दश योजन मण्डलम् ।
वर्षाकालं समासाद्य वासवो बहुवर्षति ॥

काश्यप केवल प्रवर्षण कहते हैं । देवल ने उसका विस्तार दस योजन हो उसे प्रवर्षण माना है । गर्ग का कथन है–

आषाढादिषु वृष्टेषु योजन द्वादशात्मके ।
प्रवृष्टे शोभनं वर्ष वर्षाकाले विनिर्दिशेत् ।

पूर्वाषाढा नक्षत्र से यदि १२ योजन के दायरे में वर्षा हो तो यह समझना चाहिए कि वर्षा के मौसम में अच्छी बर्षा होगी। यही मत वसिष्ठ परासर का भी है। यहाँ आचार्य ने दोनों मतों का उल्लेख कर दिया है, अपना मत व्यक्त नहीं किया है। दस योजन और बारह योजन में विशेष अन्तर नहीं है। केवल दो योजन का अन्तर है। फिर भी गर्ग पराशर ओर वसिष्ठ के मत को विशेष महत्व देना चाहिए।

आगे एक महत्वपूर्ण बात बताई गई है–

येषु च भेष्वभिवृष्टं भूयस्तेष्वेव वर्षति प्रायः ॥
यदि नाप्यादिषु वृष्टं सर्वेषु तदात्वनावृष्टिः ॥

पूर्वाषाढ़ा से लेकर आगे जिन नक्षत्रों में आषाढ मास में वर्षा होती है प्रायः उन्हीं नक्षत्रों में चन्द्रमा के आने पर आगे आने वाले वर्षाऋतु के महीनों में पुनः अच्छी वर्षा होती है। यदि पूर्वाषाढा से आरम्भ कर मूल नक्षत्र तक किसी में वर्षा न हो तो अनावृष्टि होती है अर्थात् आगे उस क्षेत्र में पानी नहीं बरसता है। इसका आशय यह है कि आषाढ मास में वर्षा होना आवश्यक है। यदि इस महीने २७ नक्षत्र खाली निकल गये पानी नहीं बरसा तो सूखा पड़ेगा ऐसा समझें [जैसा कि सं० २०४४ मैं हुआ आषाढ़ मास में किस नक्षत्र में प्रथम वर्षा होने पर पूरी ऋतु में कितनी मात्रा में उस क्षेत्र में वर्षा होगी यह बताया है –

हस्ताप्य सौम्यचित्रा पौष्ण धनिष्ठा सुषोडशद्रोणाः।
शतभिषगैन्द्र स्वातिषु चत्वारः कृत्तिकासुदश ॥
श्रवणेमद्यानुराधाभरणीमूलेषु दश चतुर्युक्ता।
फल्गुन्यां पंचकृतिः पुनर्वसौ विंशति द्रोणाः ॥
ऐन्द्राग्न्याखे वैश्वे च विंशतिः सार्धभेदशत्र्यधिकाः।
आहिर्बुध्न्यार्यम्ण प्राजापत्येषु पंचकृतिः ॥
पंचदशाजेपुष्ये च कीर्तिता दाजिभे दश द्वौच।
रौद्रेऽष्टादश कथिता द्रोणा निरुपद्रवेष्वेते ॥

इन श्लोकों को आगे तालिका में स्पष्ट कर रहे हैं।

नक्षत्र	वर्षा की मात्रा द्रोण में
हस्त- पूर्वाषाढ़ा- मृगशिरा- चित्रा- रेवती- धनिष्ठा	१६
शर्ताभषा- ज्येष्ठा- स्वाती	४
कृत्तिका	१०
श्रवण- मघा- अनुराधा- भरणी- मूल	१४
पूर्वा फाल्गुनी	२५
पुनर्वसु	२०
विशाखा– उत्तराषाढ़ा	२०
आश्लेषा	१३
उ० भाद्रपद– उ० काल्गुनी– रोहिणी	२५
पू० भाद्रपद-- पुष्य	१५
अश्विनी	१२
आर्द्रा	१८

टिप्पणी–

१. वर्षा की उपर्युक्त मात्रा पूरे मौसम की है ।

२. यह मात्रा उस क्षेत्र की है जहाँ आषाढ़ में पहली वृष्टि होगी ।

३. वर्षा का क्षेत्र १२ योजन है, अर्थात १२० मील तक प्रथम वर्षा होनी चाहिए वर्षा का यह अर्थ है ।

४. जिस नक्षत्र में चन्द्रमा है वह नक्षत्र शुद्ध हो निरूपद्रव का यह अर्थ है जो कि आचार्य ने अन्निम श्लोक में बताया है । अर्थात् उस नक्षत्र में शनि, मंगल, राहु , केतु न हों ।

५. चार आढक का एक द्रोण होता है ।

प्रथम वर्षा में अशुभ योग

रविरविसुत केतु पीडितेभे ।
क्षितितनय त्रिविधाद्भुता हते च॥
भवति च न शिवं न चापि वृष्टिः ।
शुभ सहिते निरुपद्रवे शुभं च ॥

१· जिस नक्षत्र के चन्द्रमा में प्रथम वर्षा हो रही है यदि उसी नक्षत्र में सूर्य, शनि या केतु हों ।

२. मंगल से हत हो। वक्री मंगल नक्षत्र के योग तारा को वेध कर रहा हो।

३. दिव्य, अन्तरिक्ष, भौम उपद्रव से हत हो।

ये उपद्रव हैं। यदि ये हैं, तो वर्षा के लिए शुभ नहीं हैं अर्थात् वृष्टि कम होगी या अधिक उपद्रवों के एकत्र होने पर वर्षा नहीं होगी। यदि कोई भी उपर्युक्त अशुभ निमित्त नहीं हैं और नक्षत्र में बुध, गुरु या शुक्र हैं तो वह शिव [शुभ] है अर्थात् ऊपर जो वर्षा मात्रा बताई गई है उतनी वर्षा होगी।

ऐसा ही गर्ग का वचन है–

सूर्य सौराहते वाच्यं नक्षत्रे भौम घातिते।
उत्पातैस्त्रिविधैर्वापि राहुणा केतुनापिवा।
अवृष्टमशुभं विन्द्याद्विपरीते शुभं वदेत्।

वर्षा की मात्रा–प्राचीन माप

वर्षा की अवधि दायरा इसके बाद वर्षा की मात्रा का प्रश्न सामने आता है कि वर्षा कितनी होगी। इसे माप की परम्परागत प्राचीन यूनिट में बताया है।

द्रोणः पंचनिमित्तेगर्भे त्रीण्याढकानि पवनेन।
षड् विद्युता नवाभैः स्तनितेन द्वादश प्रसवे॥

यदि गर्भ समय पाँच लक्षण– वायु, जल। विद्युत, गर्जन, मेघ हैं तो वर्षाकाल में एक द्रोण पानी बरसेगा। यदि केवल वायु है तो ३ आढक वर्षा होगी। यदि विद्युत है तो ६ आढक, यदि मेघ है तो ९ आढक, यदि गर्जन है तो १२ आढक वर्षा होगी।

मात्रा के विषय में गर्ग का कथन है–

वाते तु आढ़कं विन्द्यात्स्तनिते द्वादशढकम्।
नवाढकं तथाभ्रेषु द्योतितेषे षडाढकम्।
निमित्त पंचकोपेते द्रोणं वर्षति वासवः।

गर्ग बायु निमित्त में एक आढकवर्षा बताते हैं, वराह ने तीन आढक लिखा है। शेष निमित्तों में दोनों की मात्राओं में कोई अन्तर नहीं है।

द्रोण और आढक क्या है

द्रोण और आढक धारिता माप की प्राचीन प्रणाली है। जिस प्रकार यव, अंगुल, दण्ड योजन फासला नापने की प्राचीन माप है। महर्षि पराशर और गर्ग ने ये ही माप दिये हैं, इससे स्पष्ट है कि ये बहुत प्राचीन माप है। कौटल्य ने भी अपने अर्थशास्त्र में ये मापें दी हैं।

माप के इन नामों से आज के पाठक को कोई अनुमान नहीं लगता कि ये क्या और कितनी हैं। महर्षि पराशर ने एक आढक कितना होता है इसे एक श्लोक में बताया है।

समे विंशांगुलानाहे द्विचतुष्कागुलोच्छ्रिते ।
माण्डे वर्षति सम्पूर्ण ज्ञेयमाढक वर्षणम् ।

"एक गोल पात्र २० अंगुल व्यास का और ८ अंगुलकहरा वर्षा के जल से पूरा भर जाय। यो वह एक आढक वर्षा होगी।

पराशर ने द्रोण की माप के लिए कहा है-- ४ आढक का एक द्रोण होता है।

अब इन प्राचीन मापों की आधुनिक मापों में परिवर्तित करते हैं जिससे पाठकों को समझने में आसानी हो।

कोटिलीय अर्थशास्त्र में माप इस प्रकार है--

४ कुडव = १ प्रस्थ
४ प्रस्थ = १ आढक
४ आढक = १ द्रोण (२०० पल)
१०० पल = १ तुला
२० तुलार = १ भार

पराशर ने पात्र की माप अंगुल में बताई है। अंगुल की माप क्या है इसका स्पष्टीकरण वृहत्संहिता अध्याय ५८ श्लोक २ में है--

परमाणु रजो जालग्र लिक्ष यूकं यथास्ङगुलंचेति ।
अष्ट गुणानि यथोत्तर मङ्गुलमेक भवति संख्या ॥

इससे निम्नांकित नाप बनती है--

८ परमाणु = १ रज
८ रज = १ बालाग्र
८ बालाग्र = १ लिक्षा
८ लिक्षा = १ यूका
८ यूका = १ यव
८ यव = १ अंगुल

८ यव पेट से पेट मिलाकर रखें जायं तो वे इक अंगुल होते हैं अंगुल का अर्थ हैं एक मध्यम कोटि के पुरुष की मध्यमा अंगुली की चौड़ाई। २४ यव इसी प्रकार रखें जायं तो वे आधुनिक माप में २ इंच होते हैं। अर्थात ३ अंगुल = २ इंच के होता है। पराशरोक्त एक आढक धारिता के पात्र में जिसका व्यास २० अंगुल और गहराई ८ अंगुल है उसकी धारिता आधुनिक माप में क्या है इसे मालूम करना है इसका गणित इस प्रकार होगा--

अतः प्राचीन माप को आधुनिक माप में इस प्रकार परिवर्तित करें --

४ कुडव = १ प्रस्थ = १८६. २५ घं. इ.
४ प्रस्थ = १आढक = ७४५ ,,
४ आढक = १ द्रोण = २९८० ,,

१ द्रोण = २०० पल
१ आढक = ५० पल
१ प्रस्थ = १२.५ प ल
१ पल = १४.९ घं. इ.

वर्षा के जल की माप के लिए पल सबसे छोटी यूनिट प्राचीन माप में थी।

गर्भ निरीक्षण– परीक्षण प्रयोग

१. मेघ कब आकाश में उठे इसके परीक्षण की तैयारी अंग्रेजी कलेण्डर से नवम्बर मास के प्रारम्भ में कर लेना चाहिए क्यों कि मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष में पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में चन्द्रमा नवम्बर के उत्तरार्द्ध और दिसम्बर के पूर्वार्द्ध के बीच होता है।

२. मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष में किस तारीख को चन्द्रमा पूर्वाषाढ़ा में होगा इसे नोट कर लें परीक्षण के लिए सम्पूर्ण देश में जितने अधिक केन्द्र होंगे उतना ही विस्तृत वर्षा का विवरण मालूम होगा। कूर्म चक्र में ९ दिशा विभाग हैं- पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर इनकी मध्यवर्ती दिशाएँ और मध्य भाग। इन ९ भागों के पुनः ९ भाग प्रत्येक के करने से कुल ८१ केन्द्र कम से कम हों। इससे अधिक हों तो और उत्तम है।

३. प्रत्येक निरीक्षण केन्द्र में ऐसा निरीक्षक हो जिसे ज्योतिष गणना का ज्ञान हो।

४. जिस समय आकाश में बादल उठें उनका निरीक्षण रिपोर्ट पत्रक में भर लें। रिपोर्ट फार्म का प्रारूप इस प्रकार होगा।

मेघ रिपोर्ट पत्रक

१. तारीख महीना
२. समय [घड़ी के टाइम में]
३. चान्द्र नक्षत्र
४. बादलों को दिशा
५. बादलों का रूप रंग
६. वायु किस दिशा से
७. वायु सामान्य या तेज
८. क्या पानी बरसा, यदि वर्षा हुई तो हल्की या भारी
९ बादल कितने समय तक रहे
१०. वर्षा कितने समय तक हुई
११. बादल गरजे या बिजली चमकी

नोट–

१. बादल के सही रूप रंग जानने के लिए यदि उनका कलर फोटोग्राफ हो तो नतीजे बहुत सही आयें गे। इसलिए प्रत्येक केन्द्र में इसकी व्यवस्था होनी चाहिए।

२. एक सप्ताह की रिपोर्ट तैयार होने पर फोटोग्राफ सहित उसे तुरन्त

केन्द्रीय मौसम कार्यालय को भेज दिया जाय। फोटो के बैक पर फोटो लेने की तारीख और स्थान लिखा हो।

३. एक सप्ताह की इस रिपोर्ट पर केन्द्रीय कार्यालय में नियुक्त मौसम विज्ञान के जानकार ज्योतिषी विश्लेषण करके जिस स्थान की रिपोर्ट है वहाँ की वर्षा का भविष्य यथाशीघ्र तैयार कर लें।

४. मेघ वर्षा का यह निरीक्षण आग्रहायण से आरम्भ होकर वैशाख कृष्ण के अन्त [उत्तर भारतीय पूर्णिमान्त मास] तक चलेगा। दक्षिण भारतीय अमान्त मास में चैत्र के अन्त तक होगा।

इस रिपोर्ट से साढ़े छः महीने आगे की वर्षा की स्थिति मालूम होगी।

—०—

अध्याय ४

वायु-मेघ परीक्षण

रोहिणी योग

रोहिणी योग का उपयोग वायु परीक्षण के लिये है। वर्षा ऋतु सन्निकट होने पर आषाढ़ मास के कृष्ण पक्ष में जब चन्द्रमा रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश करता है उसे रोहिणी योग कहते हैं। उस समय वायु का निरीक्षण कर निकट भविष्य में आने वाली वर्षा ऋतु में जल वर्षा कैसी होगी इसकी जानकारी की जाती है। यह वायु परीक्षण केवल बरसात के मोसम की स्थिति बताता है। इस अध्याय में वृहत् संहिता के रोहिणीयोगाध्याय तथा अन्य प्राचीन आचार्यों के मत पर अध्ययन प्रस्तुत करेंगे ।

चन्द्रमा का रोहिणी योग ही क्यों लिया अन्य नक्षत्रों के योग (स्वाती को छोड़कर क्यों कि रोहिणी के पश्चात् स्वाती योग भी ६ श्लोकों में वर्णन किया है) क्यों नहीं दिये यह एक रहस्य है। श्रीमद् भागवत के छठे स्कंध के अध्याय ६ में एक आख्यान है कि "दक्ष प्रजापति ने अपनी पत्नी के गर्भ से ६० कन्यायें उत्पन्न कीं। उनमें १० कन्यायें धर्म को, १३ कश्यप को, २७ चन्द्रमा को, २ भूत को, २ अंगिरा को, २ कृशाश्व को और शेष ४ तार्क्ष्य नामधारी कश्यप को व्याह दी। आगे कहा है कि कृत्तिकादि सत्ताइस नक्षत्राभिमानी देवियां चन्द्रमा की पत्नियां हैं। रोहिणी से विशेष प्रेम करने के कारण (अन्य की अवहेलना से) दक्ष ने चन्द्रमा को शाप दे दिया जिससे उन्हें क्षय रोग हो गया। उन्हें कोई सन्तान नहीं हुई। चन्द्रमा ने दक्ष को फिर प्रसन्न करके कृष्ण पक्ष की क्षीण कलाओं के शुक्ल पक्ष में पूर्ण होने का वर प्राप्त किया।"

यह आख्यान खगोलिक घटना का अलंकारिक भाषा में वर्णन

है। इसका यह आशय है कि प्रजापति-सम्पूर्ण सृष्टि के निर्माता ने चन्द्रमा एवं नक्षत्रों की रचना कर चन्द्रमा के २७ नक्षत्रों में भ्रमण को सुनिश्चित किया। २७ नक्षत्रों में चन्द्रमा का भ्रमण मानों चन्द्रमा का अपनी पत्नियों से मिलन है। रोहिणी नक्षत्र से चन्द्रमा का विशेष प्रेम है। चन्द्रमा की कृष्ण पक्ष में क्षीण होती कलायें क्षय रोग से इंगित किया है। शुक्ल पक्ष में कलाओं की वृद्धि दक्ष प्रजापति के वरदान के रूप में वर्णन किया है। इस पौराणिक आख्यान से यह बात अवश्य स्पष्ट होती है कि चन्द्रमा का रोहिणी नक्षत्र से कोई गहरा प्रभावकारी सम्बन्ध है। ज्योतिष में इसी विन्दु को पकड़ कर रोहिणी योग का वर्णन किया गया है। विशोत्तरी दशा में भी रोहिणी हस्त और श्रवण चन्द्रमा के नक्षत्र माने गये हैं। अबश्य इन तीन नक्षत्रों का चन्द्रमा से कोई विशेष संबंध होगा जिसमें रोहिणी का सर्वाधिक है।

अन्य आख्यान

ऐतरेय ब्राह्मण (१३/६) में रोहिणी, मृग और मृगव्याध की कथा है। इसमें भी प्रजापति का नाम आया है। उसमें लिखा है–"या रोहित् सा रोहिणी"। तै० ब्रा० में कहा है-"सा तत ऊर्ध्वारोहत्। सा रोहिण्यभवत्। तद्रोहिण्ये रोहिणत्वम्।" आकाश में आरोहण करने के कारण रोहिणी में रोहिणीत्व आया।"

इसी ग्रन्थ में रोहिणी शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार है–

प्रजापति रोपिण्यामग्निमसृजत्। तं देवा रोहिण्यामादधत। ततो वै तेसर्वान्रोहानरोहन्। तद्रोहिण्यै रोहिणित्वम्। रोहिण्यामग्निमाधत्ते। ऋध्नोत्येव सर्वान् रोहान्रोहति।

इन वैदिक वर्णनों से यह स्पष्ट होता है कि श्रीमद्भागवत् के प्रजापति और रोहिणी के आख्यान का उद्गम वेदांत ज्योतिष से लिया गया है और रोहिणी एक विशेष प्रभाव वाला नक्षत्र है जिसमें आषाढ़ कृष्ण पक्ष में चन्द्रमा के संचरण का दूरगामी प्रभाव वर्षा पर होता है।

रोहिणी का खगोलिक विवरण

रोहिणी नक्षत्र का राशिचक्र में क्षेत्र वृष राशि के १० अंश से २३ अंश–२० तक माना जाता है। कुछ नक्षत्रों में एक, कुछ में दो और

कुछ में दो से अधिक तारे हैं। तैत्तरीय श्रुति में रोहिणी की तारा संख्या एक कही है। परवर्ती ग्रन्थों "गर्गसंहिता," नारद संहिता, वराह मिहिर आदि सभी ने इस नक्षत्र की तारा संख्या पांच बताई हैं। वस्तुतः रोहिणी में पांच तारे हैं। रोहिणी योग अध्याय २४ श्लोक ३० में वराह मिहिर ने कहा है–

रौहिणीशकट मध्य संस्थिते चन्द्र....."

शकट का अर्थ है "गाड़ी" शकट की आकृति का या किसी भी शक्ल का निर्माण केवल एक तारा से नहीं हो सकता। पांच तारों से आकाश में शकट (गाड़ी) की आकृति बनती है अतः जैसा कि सभी का मत है रोहिणी में पांच तारे हैं (देखें चित्र) १

सूर्य सिद्धान्त में कहा है–

वृषे सप्तदशे भागे यस्ययाम्योऽशकद्वयात्।
विक्षेपोऽभ्यधिकोभिन्द्याद्रोहिण्याशकटंतुसः ॥

इस श्लोक में रोहिणी शकट शब्द आया है। इसमें रोहिणी शकट भेद का निश्चित स्थान वृष राशि का १७ अंश और दक्षिण विक्षेप २ अंश बताया है। सूर्य सिद्धान्त में नक्षत्रों के योग तारा जानने की विधि में कहा है–रोहिणी, पुनर्वसु, मूल, आश्लेषा के पूर्व स्थित तारे योग तारा है।

भचक्र में वृष राशि का क्षेत्र ३०° से ६०° तक है और रोहिणी नक्षत्र वृष राशि के १० अंश से २३°-२० में है। इसमें जब चन्द्रमा या कोई ग्रह १७° एवं दक्षिण विक्षेप २° पर होगा तो वह रोहिणी शकट वेध करेगा।

आधुनिक खगोलज्ञों ने वृष में सात तारे प्रदर्शित किये हैं। इनमें एक तारा प्रथम द्युति (FIRST MAGNITUDE) का, चार तारे चतुर्थ, पंचम द्युति के, एक तारा तृतीय द्युति का और एक द्वितीय द्युति का है। प्रथम द्युति का एक तारा और चार तारे चतुर्थ-पंचम द्युति के निकट होकर शकट की शक्ल बनाते हैं। ऐसी संभावना है कि तैत्तरीय श्रुतिकार ने केवल योग तारा को ही लक्षित किया हो और बाद में निकटवर्ती अन्य मन्द द्युति के चार तारे देखे गये हों और

इस कारण तैत्तरीय श्रुति में रोहिणी की तारा–संध्या एक हो दो हो आगे आधुनिक खगोलिक वर्णन में यह बात स्पष्ट करेंगे ।

रोहिणी का आधुनिक खगोलिक विवरण

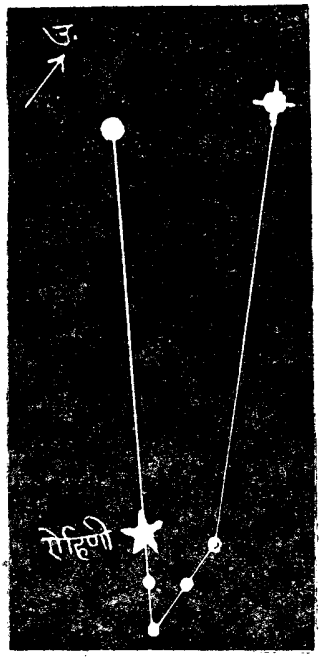

वृष राशि-रोहिणी नक्षत्र

सात तारों से मिलकर वृष राशि का रूप बनता है । वह वृष (बैल) के दोनों सींग का आकार है । इसमें नीचे के ५ तारे रोहिणी नक्षत्र के हैं । इनमें प्रथम द्युति का विशाल तारा योग तारा ALDEBARAN है । रोहिणी के पांचो तारे शकट (बैलगाड़ी) का आकार बनाते हैं ।

जैसा कि इसके पूर्व बताया है कि रोहिणी नक्षत्र में भारतीय ज्योतिष ने पांच तारे माने हैं । सूर्य सिद्धान्त ने इस तारा समूह में पूर्व में स्थित तारा को योग तारा माना है । आधुनिक खगोल विज्ञान में

रोहिणी का नाम अल्डेबरान (ALDEBARAN) है। यह प्रथम द्युति (FIRST MAGNITUDE) का तारा है जो पृथ्वी से ६८ प्रकाश वर्ष की दूरी पर है।

इसकी नेत्रों से दिखाई देने वाली द्युति १.१ है। यह "डबल स्टार" है। यह तारा वर्ग में K वर्ग का है। इसका तापमान ७५०० F गणना किया गया है। इसका रंग नारंगी (ORANGE) है इसमें हाइड्रोजन की प्रचुर मात्रा है।

रोहिणी नक्षत्र का योगतारा वृष राशि के १५ अंश ५५ कला ५५ विकला पर स्थित है। यह क्रान्तिवृत्त से ५०–२८' दक्षिण पर है।

रोहिणी योग

वृहत्संहिता के लेखक वराहमिहिर में एक विशेषता यह है कि उन्होंने अनेक स्थलों पर यह स्पष्ट शब्दों में उल्लेख किया है कि प्रस्तुत विषय को उन्होंने कहाँ से लिया है। रोहिणी योगाध्याय के प्रारम्भिक श्लोकों में ही उन्होंने अलंकारिक शैली में उन पूर्वाचार्यों को स्मरण किया है जिन्होंने कि इस योग को उनसे पूर्व अध्ययन किया था। वराह के कथनानुसार वृहस्पति ने नारद से सर्वप्रथम इस योग को कहा। उसके पश्चात् गर्ग, पराशर, कश्यप और मयासुर ने इसे अपने शिष्यों को बताया।

इस योग को वृहस्पति ने नारद को सुमेरु पर्वत के उपवन में बताया था। "सुरनिलय शिखरि शिखरे" का अर्थ है देवताओं के निवास स्थान पर्वत शिखर। वह उपवन देवांगनाओं के मधुर संगीत और पुष्पों पर गुंजार करते हुए भ्रमरों से सुशोभित था, और वहाँ वृक्षों पर अनेक प्रकार के पक्षी चहचहा रहे थे। वराहमिहिर कहते हैं कि इन पूर्वाचार्यों के कथन को मैं यहाँ लिख रहा हूँ। प्रारम्भिक तीन श्लोक भूमिका रूप में इसी के हैं–

कनकशिलाचय विवरजतरु कुसुमासङ्गि मधुकरानुरते।
बहुविहग कलह सुरयुवति गीत मन्द्रस्वनो पवने ॥१॥
सुरनिलय शिखरि शिखरे वृहस्पतिनारदाय यानाह।
गर्ग पराशर काश्यप मयाश्च यान् शिष्य संघेभ्यः ॥२॥

तानवलोक्य यथावत् प्राजापत्येन्दु संप्रयोगार्थान् ।
अल्प ग्रन्थेनाहं तानेवाम्युद्यतो वक्तुम् ।।३।।

रोहिणी नक्षत्र के देवता प्रजापति हैं इसलिए रोहिणी नक्षत्र को प्राजापत्य कहा है। इन्दु का अर्थ चन्द्रमा है। चन्द्रमा के योग का कब निरीक्षण करना चाहिए आगे इसे बताया है।

प्राजेशमाषाढ़ तमस्रि पक्षे क्षपाकरेणोपगतं समीक्ष्य ।
वक्तव्यमिष्टं जगतोऽशुभं वा शास्त्रोपदेशात् ग्रहचिन्तकेन ।।४।।

"ग्रह चिन्तक (दैवज्ञ) अषाढ़ मास के कृष्ण पक्ष में चन्द्र जब रोहिणी नक्षत्र में जाये तो उनकी भली प्रकार समीक्षा कर जैसा कि ज्योतिष शास्त्र में बताया गया है उस अनुसार संसार का शुभ और अशुभ फल कहे।"

योगोयथानागत एव वाच्यः सधिष्ण्य योगः करणेमयोक्तः ।
चन्द्रप्रमाण द्युति वर्ण मार्गैरुत्पात वातैश्च फलं निगद्यम् ।।५।।

इस श्लोक में यह बताया है कि चन्द्र के रोहिणी योग को किस प्रकार ज्ञात करें। आचार्य कहते हैं कि मेरे द्वारा लिखित पंच सिद्धान्तिका में यह बताया गया है इसमें चन्द्र विम्ब परिणाम, द्युति, वर्ण, मार्ग, उत्पात, वायु का निरीक्षण कर फल कहना चाहिए।

रोहिणी योग निरीक्षण विधि

श्लोक ६, ७, ८, में रोहिणी चन्द्र योग के निरीक्षण का शास्त्रीय विधान इस प्रकार बताया है–

पुरादुदग्यत् पुरतोऽपि वा स्थलं
व्यूहोषितस्तत्र हुताशतत्परः ।
ग्रहान् सनक्षत्र गणान् समालिखेत्
स धूप पुष्पैर्बलिभिश्च पूज्येत् ।।६।।
सरत्न तोयौषधिभिश्चतुर्दिशं
तरु प्रवाला पिहितैः सु पूजितैः ।।
अकालमूलैः कलशैरलंकृतं
कुशास्तृतं स्थण्डिलमावसेद् द्विजः ।।७।।

आलभ्य मंत्रेण महाव्रतेन
बीजानि सर्वाणि निधाय कुम्भे ।
प्लाव्याति चामीकर दर्भतोयै
र्होमोमरुद्वारण सोम मन्त्रैः ॥८॥

ग्रह संस्थान को जानने वाला द्विज नगर की पूर्वोत्तर दिशा (ईशान) में नगर के बाहर आकर ग्रहों एवं नक्षत्रों को लिखकर धूप, दीप आदि से पूजन करे। यह कर्मकाण्ड तीन दिन होगा। फिर चारों दिशाओं में ऐसे घट स्थापित करे जिनकी पेंदी काली न हो घट कोपलों से ढके हुए, रत्न सहित जल और औषधि युक्त हों। कुश के आसन पर द्विज बैठे। महाव्रत के मन्त्रों से अभिमंत्रित कर सब प्रकार के बीज घड़े में डाल कर सुवर्ण और दर्भ युत जल से उन्हे प्लावित करे। फिर मरुत, वरुण और सोम (चन्द्रमा) के मन्त्रों से हवन करे।

इसी प्रकार का आदेश महर्षि गर्ग का भी है। गर्ग कहते हैं–

नगरादुपनिष्क्रम्य दिशं प्रागुत्तरां शुचिः ।
विविक्ते प्रस्थलेदेशे देवतायनेऽपिवा ॥
राज्ञानियुक्तो दैवज्ञः कृतशौचो जितेन्द्रियः ।
निमित्त कुशलोधीरः शुक्लाम्बर समावृतः ॥
उपवासमथा तिष्ठेदष्टमीं संयतव्रतः ।
ततो अष्टम्याः परे यस्मिन् दिने संयुज्यते शशी
प्राजापत्येन च ततो निमित्तान्युपलक्षयेत् ॥

गर्ग ने कहा है कि राजा के द्वारा नियुक्त पवित्र जितेन्द्रिय, ज्योतिष ज्ञान में कुशल दैवज्ञ श्वेत वस्त्र धारण कर नगर की उत्तर पूर्व दिशा में जाकर व्रत करते हुए उपर्युक्त कर्मकाण्ड पूजनादि करे। अष्टमी के उपरान्त जब चन्द्र का रोहिणी से योग हो तो लक्षणों को देखे।

टिप्पणी–

वराहमिहिर और गर्ग के वचनों से यह स्पष्ट होता है कि–

१. यह राजा का कर्तव्य है कि वह रोहिणी योग के निरीक्षण के लिए कुशल दैवज्ञ की नियुक्ति कर हवन पूजन की सारी व्यवस्था करे।

२. दैवज्ञ पवित्र जितेन्द्रिय और ज्योतिष शास्त्र का विद्वान होना चाहिए। विद्वता के साथ शुचिता और जितेन्द्रियता की शर्त भी है क्यों कि हिन्दू धर्म में प्रकृति की शक्तियों की उपासना उन्हें देवता मानकर की गई है। उपासना-पूजन में पवित्रता अनिवार्य है। नवग्रह–नक्षत्रों की स्थापना उनका पंचोपचार पूजन, मरुत (वायु) जल के देवता वरुण और सोम [चन्द्रमा] के मंत्रों से हवन इसलिए करने को कहा है कि जल वर्षा के कारणभूत देवता दैवज्ञ की अन्तर्दृष्टि में सत्य भविष्य फल प्रस्फुटित करें।

आधुनिक मौसम विज्ञानी के लिए शुचिता, जितेन्द्रियता की कोई शर्त नहीं है। अपने विषय का सामान्य ज्ञान चाहिए। उसके बाद उसे जड़ वैज्ञानिक यन्त्रों का सहारा है। चेतन प्राकृतिक तत्वों की उपासना निरर्थक मानी जाती है। मनुष्य एक ऐसा चेतन यन्त्र है जो कि प्रकृति के रहस्यों को उनसे तादात्म्य स्थापित कर साधना द्वारा जान सकता है और चेतन तत्व के द्वारा ही चेतन की सही जानकारी भी होगी। वर्तमान में आचरण एवं आराधना की निरर्थकता का परिणाम यह होता है कि जड़ यन्त्रों द्वारा प्राप्त जानकारी भी मौसम विज्ञान की निरर्थक हो जाती है।

रोहिणी योग में वायु परीक्षण

रोहिणी यौग का अर्थ है चन्द्रमा का रोहिणी नक्षत्र में संचरण आषाढ़ कृष्ण पक्ष में रोहिणी योग देखने को बताया गया है। आषाढ कृष्ण पक्ष की १२-१३-१४ चान्द्र तिथि में यह योग बनता है। अंग्रेजी कलेन्डर से जून के उत्तरार्द्ध और जुलाई के पूर्वार्द्ध के मध्य विभिन्न तारीखों में यह योग आता है। सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश वर्तमान में २१–२२ जून को होता है। यह १६वीं सताब्दी के अन्त में २० जून को भी हुआ है। रोहिणी चन्द्र योग और आर्द्रा में सूर्य का प्रवेश कुछ दिनों के अन्तर से आगे पीछे होता है। कभी रोहिणी योग आर्द्रा प्रवेश के पूर्व होता है, कभी बाद में होता है। दोनों योग एक ही तारीख को भी पड़ सकते हैं। जैसे कि सन् १६७६ को २२ जून को घं० ११–२१ पर आर्द्रा में सूर्य ने प्रवेश किया और इसी दिन आषाढ़ कृष्ण १३ को

चन्द्रमा ने घं० ११-२६ पर रोहिणी में प्रवेश किया ।

पिछले १७ वर्ष सन् १९७३ से सन् १९८९ तक की रोहिणी प्रवेश की तालिका दे रहे हैं जिससे उपर्युक्त कथन स्पष्ट हो जाय ।

रोहिणी चन्द्र योग

सन् ई०	रोहिणी प्रवेश ता. समय	निष्क्रमण ता. समय	प्रवेश कालीन मासपक्ष तिथि
१९७३	२८ जून घं. ९-२५	२९ जून घं. ६-४५	अषाढ़ कृ० १३
१९७४	१८ जून घं. १७-२२	१९ जून घं. १५-२७	आषाढ़ कृ. १४
१९७५	६ जुलाई घं. ६-५६	७ जुलाई घं. ६-५५	आषाढ़ कृ. १२
१९७६	२५ जुलाई घं. ६-४	२६ जुलाई घं. ७-५९	आषाढ़ कृ. १३
१९७७	१४/१५ जून घं. २७-३२	१६ जून घं. ६-५३	आषाढ़ कृ. १४
१९७८	२ जुलाई घं. ८-१०	३ जुलाई घं. १०-४४	आषाढ़ कृ. १२
१९७९	२२ जून घं. ११-२६	२३ जून घं. १२-१०	आषाढ़ कृ. १३
१९८०	८/९ जुलाई घं. २६-१३	९/१० जुलाई घं. २५-१७	आषाढ़ कृ. १२
१९८१	२९ जून घं. १३-४०	३० जून घं. ११-१३	आषाढ़ कृ. १३
१९८२	१९ जून घं. २३-५१	२० जून घं. २१-४	आषाढ़ कृ. १३
१९८३	७ जुलाई घं. १७-२४	८ जुलाई घं. १५-५२	आषाढ़ कृ. १२
१९८४	२६ जून घं. २०-१८	२७ जून घं. २०-३३	आषाढ़ कृ. १३
१९८५	१६ जून घं. १९-३१	१७ जून घं. २१-४४	आषाढ़ कृ. १४
१९८६	३ जुलाई घं. २३-२९	४ जुलाई घं. २६-१४	आषाढ़ कृ. १२
१९८७	२३ जून घं. २२-३८	२४ जून घं. २४-५६	आषाढ़ कृ. १३
१९८८	१० जुलाई घं. ८-३२	११ जुलाई घं. ९-१४	आषाढ़ कृ. १२
१९८९	३० जून घं. १७-५२	१ जुलाई घं. १६-३०	आषाढ़ कृ. १२

प्रयोग विधि–उपकरण

निम्नांकित श्लोक में वायु परीक्षण कैसे करें तथा इसके लिए क्या सामान चाहिए इसे बताया है–

श्लक्ष्णां पताकांमसिता विदध्या
दण्ड प्रमाणं त्रिगुणोच्छितांच ।
आदौकृते दिग्ग्रहणे नभस्वान्
ग्राह्यस्तदा योगगते शशांके ॥६॥

रोहिणी नक्षत्र में चन्द्रमा जिस दिन हो उस दिन पहले दिग् साधन करें। दिग् साधन का अर्थ है यह मालूम करना कि पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण सही रूप से किस तरफ हैं। वराहमिहिर ने दिग् साधन की विधि पंच सिद्धान्तिका में इस प्रकार बताई है–

शंकुचतुर्विस्तारे वृत्ते छायाप्रवेश निर्गमनात्।
अपरेन्द्रोदिक्सिद्धिर्यवाच्च याम्योत्तरे साध्ये ॥

समतल भूमि पर २४ अंगुल का अर्धव्यास लेकर एक वृत्त बनायें इसका व्यास ४८ अंगुल होगा वृत्त के केन्द्र में १२ अंगुल का एक शंकु गाड़ दें। प्रातःकाल पूर्वी क्षितिज पर जब सूर्य उदय हो उस समय शंकु की छाया जहां वृत्त को काट रही है वहाँ एक निशान (विन्दु) लगा दें। यह विन्दु पश्चिम दिशा का है। सायं जब सूर्य पश्चिमी क्षितिज पर हो तो शंकु की छाया वृत्त को जहाँ काट रही है वहाँ विन्दु लगायें। यह विन्दु पूर्व दिशा का है।

इसके बाद वृत्त की परिधि पर चिन्हित इन दोनों विन्दुओं को केन्द्र लेकर २४ अंगुल अर्धव्यास के दो वृत्त खींचें। ये दोनों वृत यव के आकार में दो विन्दुओं पर परस्पर काटेंगे। ये दोनों कटान विन्दु उत्तर-दक्षिण दिशा के सूचक हैं। इस प्रकार चार दिशायें ज्ञात हो जाने पर उनके मध्य की आग्नेयादि दिशायें सरलता से मालूम हो जायेंगी।

टिप्पणी

प्राचीन ग्रन्थों में माप यव, अंगुल, हस्त, दण्ड, धनु[क्रोश],योजन में बताई गयी हैं। प्रथम दृष्टि में ये माप बहुत स्थूल और अनिश्चित सी मालूम पड़ती है और ऐसा मालूम पड़ता है कि प्राचीन काल में सूक्ष्म और निश्चित माप का अभाव था, किन्तु ऐसी बात नहीं है। कौटलीय अर्थशास्त्र में सूक्ष्माति सूक्ष्म माप यूनिट दी हैं। अब से दो हजार वर्ष पूर्व वराहमिहिर के समय में "मागध मान" की माप यूनिट का प्रचलन सारे देश में था। मागध मान का अर्थ है मगध में प्रचलित माप। कौटलीय अर्थशास्त्र में माप इस प्रकार है–

८ परमाणु= १ रज [हवा में उड़ता धूल कण]
८ रज= १ लिक्षा

८ लिक्षा = १ यूका

८ यूका = १ यव [यव की मध्य भाग चौड़ाई]

८ यव = १ अंगुल

मध्यम कोटि के पुरुष की मध्यमा अंगुली की मौटाई एक अंगुल मानी जाती थी। इसके आगे की माप यूनिट भी थी।

४ हाथ = १ धनु

२००० धनु = १ क्रोश

आधुनिक माप में इसे बदलें तो एक धनु ७९.२ इंच होगा। ४ हाथ का एक धनु होता है। इसलिए ७९.२ को ४ से विभाजित करें तो एक हाथ १९.८ इंच का होगा। ३ अंगुल आधुनिक माप में २ इंच के बराबर होता है। यहाँ हमें प्रयोग के लिए अंगुल और दण्ड की आधुनिक माप जाननी है क्योंकि २४ अंगुल का अर्धव्यास लेकर वृत्त खींचना है।

३ अंगुल = २ इंच

इसलिए २४ अंगुल = १६ इंच

३ दण्ड (धनु) लम्बा पताका स्तम्भ (FLAG POLE) खड़ा करना है।

३ दण्ड = १२ हाथ

१ हाथ = १९.८ इंच

१९.८ × १२ = २३७.६ इंच पताका का बाँस होगा। इसे यदि हम स्थूल रूप से एक हाथ २० इंच का मान कर बाँस की लम्बाई २४० इंच अर्थात् २० फीट कर लें तो प्रयोग में कोई फर्क नहीं पड़ेगा।

ऊपर दिये श्लोकों के अनुसार प्रयोग के लिए आधुनिक माप इस प्रकार होगी–

[१] १६ इंच अर्धव्यास का वृत्त होगा।

[२] ८ इंच का शंकु केन्द्र में गाड़ा जायगा।

[३] दिशायें चिन्हित करने के बाद शंकु को हटा कर उस स्थान पर २० फीट का बाँस स्थापित किया जायेगा। बाँस की लम्बाई का १/३ याने ८० इंच लम्बी पताका होगी।

शंकु और पताका के बाँस की लम्बाई भूमि तल से है, अतः भूमि में गाड़ने के लिए शंकु १० इंच का और बाँस २२ फीट का लें। शंकु के एक सिरे पर दो इंच पर निशान लगा दें और बाँस में २ फीट पर चिन्ह लगायें। शंकु का दो इंच और बाँस का दो फीट भाग भूमि के अन्दर रहेगा। वायु परीक्षण के लिए इस प्रकार निम्नांकित सामग्री तैयार करें-

शंकु - १० इंच [२ इंच भूमि के अन्दर, इंच भूमि के ऊपर रहेगा]

बाँस- [२ फीट भूमि के अन्दर, २० फीट भूमि के ऊपर रहेगा]

सूत्र (सुतली)- १६ इंच वृत्त बनाने के लिए।

पताका- ६ फीट ८ इंच लम्बी, २ फीट ५ इंच चौड़ी।

पताका का अर्थ झण्डा है किन्तु पताका और झण्डे में अन्तर है। आजकल झण्डे आयताकार बनते हैं। पताका एक सिरे पर नुकीली होती है। धार्मिक स्थानों में आज भी नुकीली पताका उपयोग की जाती है। ये दो प्रकार की होती हैं। एक नोक को और चिरी हुई दो नोक की जैसी कि मन्दिरों के शिखर पर सर्प की जिह्वा के आकार की लगी होती हैं। इस प्रयोग में आयताकार झण्डा नहीं लगेगा, दो जिह्वा की पताका लगेगी।

पताका श्लक्ष्णाम् और असिताम् अर्थात महीन कपड़े की काले रंग की होना चाहिए महीन तंतु की और नुकीली होने से थोड़ी हवा चलने पर पताका फहराने लगेगी और काले रंग की होने से आकाश के बैकग्राउण्ड में साफ दिखाई देगी।

जैसा कि पूर्व में बताया जा चुका है यह सारा प्रयोग नगर के बाहर उत्तर पूर्व दिशा में समतल भूमि में होगा। जहाँ पर उदय और अस्त होते सूर्य का प्रकाश शंकु पर पड़ सके। दिग् साधन में एक प्रश्न उठता है कि दिग् साधन का इतना झंझट करने की क्या आवश्यकता जब कि दिशाओं का ज्ञान कुतबनुमा (COMPASS) से सरलता से हो जाता है। इसे भी भली-भाँति समझ लेना चाहिए। कुतबनुमा का निर्माण उत्तरी दक्षिणी ध्रुव के चुम्बकीय आधार पर हुआ है। उसकी

सुई सदा उत्तर दक्षिण रहती है। उत्तर दक्षिण निश्चित हो जाने पर उसके आधार पर पूर्व और पश्चिम का निर्णय करते हैं। उत्तरी दक्षिणी ध्रुव (MAGNETIC POLES) स्तिर हैं तो उनके आधार पर निश्चित की पूर्व और पश्चिम दिशा भी स्थिर होगी। जहाजरानी तथा अन्य सीमांकन कार्यों के लिए तो ये दिशायें ठीक हैं, परन्तु खगोलिक कार्यो के लिए नहीं हैं। वस्तुतः दिशाओं का निर्माता सूर्य है। दिक् साधन का ध्येय है वायु और वर्षा के लिए दिशाओं का ज्ञान। पूर्व दिशा वह है जहाँ सूर्य उदय होता है और पश्चिम वह है जहाँ सूर्य अस्त होता है ये खगोलिक दिशायें हैं। कुतबनुमा द्वारा सूचित स्थिर दिशायें भौगोलिक हैं।

सूर्य के उदय और अस्त का स्थान कोई स्थिर बिन्दु नहीं है, वह नित्य परिवर्तित होता रहता है। सूर्य की उत्तरा और दक्षिणा क्रान्ति तथा नित्य परिवर्तनशील क्रान्ति सूर्य के उदय और अस्त बिन्दु को नित्य परिवर्तनशील रखते हैं। इसलिए पूर्व और पश्चिम दिशा का दिग् साधन अनिवार्य है। इसे एक वास्तविक उदाहरण से स्पष्ट करते हैं।

संवत २०४५ विक्रमी आषाढ़ कृष्ण तृयोदशी तदनुसार ११ जुलाई को चन्द्रमा सूर्योदय के समय रोहिणी नक्षत्र में होगा। इस तारीख को सूर्य की उत्तरा क्रान्ति २२° – ७' है। ता० १२ जुलाई को उत्तरा क्रान्ति २१°–५८ है। ये ५.३० प्रातः की है।

११ जुलाई को कानपुर में सूर्योदय घं. ५-२६-४० I.S.T और सूर्यास्त घं. १९-०-५६ होगा। दिग् साधन में शंकु की छाया जिस बिन्दु पर वृत्त को काटेगी क्या सूर्यास्त के समय ठीक उसके सामने १८०° पर कटाव बिन्दु होगा? नहीं ऐसा नसीं क्योंकि सूर्योदय और सूर्यास्त के मध्य १३ घं. ३४ मिनट में सूर्य की क्रान्ति में परिवर्तन हो जायेगा। सूर्योदय के समय जो उ० क्रान्ति २२-७ थी वह सूर्यास्य के समय ५ कला घट जायेगी २२ - २ रह जायेगी। दिग् साधन में सूर्योदय और सूर्यास्त के समय वृत्त के दो कटाव बिन्दुओं को केन्द्र मानकर दो वृत्त खींचने को आचार्य ने बताया है और यह कहा है कि ये दोनों

वृत्त यव के आकार को बनाते हुए दो स्थानों पर काटेंगे, वे उत्तर दक्षिण दिशा के सूचक होंगें। यव का आकार इसी लिए बनता है कि पूर्व और पश्चिम के बिन्दु ठीक आमने सामने नहीं होते क्यों कि सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सूर्य की क्रान्ति एक समान नहीं होती। अस्तु खगोलिक शुद्ध सूक्ष्म दिशाओं के जानने के लिए दिग् साधन अनिवार्य है। यह नहीं भूलना चाहिए कि तापमान, हवा का दबाव वायु की दिशा, मेघ की दिशा, वर्षा और ऋतुओं का कारण सूर्य है। हमें वायु की दिशा ज्ञात कर भविष्य की वर्षा का जानना है रोहिणी योग वर्षा के प्रारम्भिक काल में पड़ता है। वायु का रूख हवा के दबाव के अनुरूप होता है। रोहिणी योग में यही सब मालूम होता है यह जिन तिथियों को पड़ता है उनमें चन्द्रमा सूर्य के निकट बढ़ता जाता है सूर्य चन्द्र का अन्तर १२° से ३६° के मध्य रहता है। सूर्य चन्द्र दोनों के संयुक्त प्रभाव से वायु और मेघ परीक्षण से बर्षा के दूरगामी परिणाम मालूम होते है अतः दिग् साधन का सूक्ष्म वैज्ञानिक आधार है, कुतबनुमा यह काम नहीं कर सकता। हमें ग्रहों के खगोलिक प्रभाव मालूम करने है, भूमि का सर्वेक्षण कर उसका नक्सा नही बनाना है।

वायु परीक्षण और उसके परिणाम

दिग् साधन और पताका स्थापित करने की विधि बताने के पश्चात् आगे आचार्य वायु परीक्षण और फल को बताते हैं–

तत्रार्धमासाः प्रहरैः विकल्प्या
वर्षानिमित्तं दिवसास्तदंशैः।
सव्येन यच्छन् शुभदः सदैव
यस्मिन् प्रतिष्ठा बलकान् सवायुः ॥१०॥

उपर्युक्त श्लाक में 'प्रहर' शब्द आया है। यह समय की एक प्राचीन युनिट है। हिन्दी भाषा में इसे 'पहर' कहते हैं। एक अहोरात्र [६० घटी] में आठ प्रहर होते हैं। एक प्रहर ७ घटी ३० पलका होता है। आधुनिक समय माप में एक प्रहर ३ घन्टे का होगा।

"वर्षा निमित्त" वर्षा के समय को जानने के लिए एक प्रहर [३ घन्टा] आधे मास के बराबर जानिये। एक सूर्योदय से दूसरे

सूर्योदय तक को अहोरात्र कहते हैं। इसे सावन दिन भी कहते हैं। सूर्योदय से एक प्रहर (३ घण्टे) तक यदि शुभ वायु चले तो श्रावण मास के प्रथम पक्ष में अच्छी वर्षा होगी। यदि दूसरे प्रहर में चलें तो श्रावण शुक्ल पक्ष में अच्छी वर्षा होगी। तृतीय प्रहर की वायु से भाद्र पक्ष, चतुर्थ प्रहर से भाद्र शुक्ल पक्ष। रात्रि के प्रथम प्रहर से आश्विन कृष्ण द्वितीय से आश्विन शुक्ल तृतीय से कार्तिक कृष्ण और रात्रि के चतुर्थ प्रहर से कार्तिक शुक्ल पक्ष में वर्षा समझे। 'दिवसास्तदंशैः' प्रहर (३घंटे) के अंशों से पक्ष के दिन समझें।

एक अर्द्ध मास (पक्ष) में सामान्यतः १५ दिन होते हैं। एक प्रहर (३ घण्टे) में १८० मिनट होते हैं। १८० को १५ से विभाजित करने का भागफल १२ मिनट होता है। इस प्रकार १२ मिनट एक दिन का सूचक है। यह कोई आवश्यक नहीं कि लगातार ३ घण्टे एक ही दिशा से वायु चले। वह एक घण्टा आधा घण्टा या कुछ मिनट चल सकती है ऐसी स्थिति में १२ मिनट = १ दिन के हिसाब से गणना करके फल बताना चाहिए। उदाहरणार्थ एक घण्टा एक ही दिशा से वायु चली तो यह पाँच दिन वर्षा की सूचक है। प्रथम प्रहर, द्वितीय प्रहर इत्यादि से मास पक्ष समझ कर उस पक्ष में पाँच दिन वर्षा कहें।

श्लोक की तीसरी पंक्ति में 'सव्येन गच्छन् शुभदः सदैव" कहा है। सव्य और अपसव्य दो शब्द संस्कृत में दिशा क्रम सूचक हैं। सव्य को "परिक्रमा क्रम" भी कहते हैं। सव्य (CLOCK WISE) और अपसव्य (ANTI CLOCK WISE) समझिये। सव्य शुभ है, अपसव्य अशुभ है। उदाहरणार्थ– पताका यदि पश्चिम की ओर मुख करके फहरा रही है तो इसका अर्थ है कि वायु पूर्व दिशा से चल रही है। कुछ समय पश्चात् वायु आग्नेय कोण दक्षिण पूर्व से बहने लगे तो यह क्रम सव्य होगा। यह शुभदः होगी अर्थात् वर्षा की सूचक है। पूर्व से बहती वायु दक्षिण की ओर रुख बदलने के बजाय उत्तर की ओर बदले तो वह अपसव्य अर्थात् अशुभ होगी। अर्थात् वह अवर्षण की सूचक है।

दिशाओं का सव्य क्रम (CLOCK WISE) इस प्रकार है– पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैवटव्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान। किसी भी

दिशा से वायु बह रही हो यदि वह उपर्युक्त क्रम में रुख बदलती है तो वह सव्य (शुभ) होगी।

पाठ भेद

वृहत्संहिता के प्रसिद्ध टीकाकार भट्टोत्पल (रचनाकाल ८८८ शकाब्द) ने बताया है कि उपर्युक्त श्लोक के प्रारम्भ में "तत्रार्द्धमासा" के स्थान पर "तेनात्रमासाः" पाठान्तर भी है। उन्होंने कुछ पाण्डुलिपियों में यह पाठ देखा होगा। भट्टोत्पल के मत से "तेनात्रमासाः" पाठ शुद्ध है। अपने कथन के समर्थन में उन्होंने गर्ग का वचन दिया है–

तदहश्चोदयाद्ध्वं चतुर्धाहो विभज्य च।
हिताहितार्थं मासानां चतुर्णामुपुक्षयेत्॥

भट्टोत्पल के मत से वायु परीक्षण केवल दिन के चार प्रहर में ही होना चाहिए। सूर्योदयात् प्रथम प्रहर पूरे श्रावण मास, द्वितीय भाद्रपद मास, तृतीय आश्विन मास और चतुर्थ प्रहर पूरे कार्तिक मास की वर्षा की स्थिति बतायेगा। 'तेनात्रमासाः' का यही अर्थ है।

इस पाठ के अनुसार ३ घण्टे (१८० मिनट) को ३० से विभाजित करना पड़ेगा। यहाँ ६ मिनट = १ दिन होगा। रोहिणी योग आषाढ़ कृष्ण द्वादशी, त्रयोदशी या चतुदर्शी को पड़ता है। इन दिनों में वाराणसी में सूर्योदय ५ घण्टा १३ मिनट और सूर्यास्त १८ घण्टा ४७ मिनट के आस-पास होता है। सूर्योदय से ३ घण्टा श्रावण मास, उसके पश्चात् के ३ घण्टे भाद्रपद मास उसके बाद ३ घण्टे आश्विन के और उसके बाद के ३ घण्टे कार्तिक मास की वर्षा की स्थिति बतायेंगे।

यद्यपि वृहत्संहिता की प्रकाशित पुस्तकों में "तत्रार्द्धमासाः" पाठ ही दिखाई दिया है किन्तु भट्टोत्पल का मत निम्नांकित कारणों से माननीय है–

१. रोहिणी योगाध्याय के प्रारम्भ में वराह मिहिराचार्य ने स्पष्ट कहा है कि गर्ग, पराशर, काश्यप और मय ने जो बताया है उसे मैं अपने ग्रंथ में लिख रहा हूँ। गर्ग का कथन एक प्रहर से एक मास लेने का है अतः तेनात्र मासाः शुद्ध है।

२. गर्ग के अनुसार सूर्योदय से चार प्रहर लेने चाहिए। ये चार

प्रहर दिन के हैं। वायु परीक्षण के लिए दिन का समय ही उपयुक्त है रात्रि में वायु परीक्षण कठिन है। फिर आषाढ़ मास में प्रायः वर्षा भी हो जाती है। ऐसी स्थिति में दिन में तो परीक्षण हो सकता है रात्रि में खुले मैदान में यह सम्भव नहीं है जब कि वर्षा हो रही हो। गर्ग ने कहा है–

यस्मिन दिने संयुज्यते शशी प्राजापत्येन च ततो निमित्तान्युपलक्षयेत्

इस कथन में दिन को ही इंगित किया है

यदि किसी प्रहर में विभिन्न दिशाओं से बायु बदल कर चले तो फल कथन किसके आधार पर करें। इसके लिए कहा है "यस्मिन् प्रतिष्ठा वलवान् स वायुः।" अर्थात जो वायु सबसे अधिक देर तक स्थिर रहे उसका फल कहें।

रोहिणी योग में शस्य परीक्षा

प्रारम्भ में बताया है कि मंत्रों से अभिमंत्रित कर घड़ों में विभिन्न प्रकार के बीज जल में भिगो कर रखें। उनका क्या उपयोग है इसे बताया है।

वृत्तेतुयोगेऽङ्कुरितानि यानि
सन्तीह बीजानि धृतानि कुम्भे।
येषां ते र्योऽशोऽङ्कुरितस्तदंश
स्तेषां विवृद्धि समुपैतिनान्यः ॥११॥

रोहिणी योग में जो बीज घड़ों में रखे गये थे उन्हें रोहिणी योग के बाद देखें कि किस अन्न के बीज किस अनुपात में अंकुरित हुए हैं। वे ही अन्न उसी अनुपात में उस वर्ष कृषि में पैदा होंगे।

वर्षा की उपयोगिता अन्न की उपज के लिए है इसलिए वर्षा के अनुमान के साथ ही शस्य परीक्षण की विधि भी बताई गई है।

रोहिणी योग में प्रकृति लक्षण

शान्तपक्षिमृगरावितादिशा
निर्मलं वियदनिन्दितोऽनलः।
शस्यते शशिनि रोहिणी गते
मेघ मारुत फलानि वच्यतः॥

उपर्युक्त श्लोक की प्रथम तीन पंक्तियों में बताया गया है कि रोहिणी योग में यदि दिशायें शान्त हों, आकाश निर्मल हो, पक्षी और पशु मनोहर शब्द करें, आनन्द दायक वायु बह रही हो तो यह शुभ शकुन हैं। अर्थात भविष्य वर्षा और उपज के लिए अच्छा है।

अन्तिम पंक्ति में आचार्य कहते हैं– अब आगे मैं मेघ (बादल) मारुत (वायु) के फल कहता हूँ।

मेघ लक्षण

रोहिणी योग के दिन आकाश निर्मल होने तथा अन्य लक्षणों को शुभ बताया है। रोहिणी योग और आर्द्रा प्रवेश अधिकांश आषाढ़ मास में ही आगे पीछे पड़ते हैं। आर्द्रा प्रवेश २१-२२ जून को होता है। रोहिणी योग जून जुलाई में पड़ता है। यह कभी आर्द्रा प्रवेश के पूर्व और कभी बाद में होता है। अतः रोहिणी योग के दिन आकाश में मेघों कीसंभावना भी रहती है। यदि आकाश में बादल हैं तो उनका आकार और वर्ण वर्षा के भविष्य की क्या सूचना देता है आचार्य ने श्लोक १३ से २० तक इसका भी वर्णन किया है। आगे उसे स्पष्ट कर रहे हैं।

क्वचिदसितसितैः सितैः क्वचिच्च
क्वचिदसितैर्भुजंगैरिवाम्बुवाहैः।
वलित जठर पृष्ठ मात्र दृश्यैः
स्फुरितडिद्रसनैर्वृत्तं विशालैः ॥१३॥
विकसित कमलोदरावदातै–
रुरुणकरद्युति रंजितोप कण्ठैः।
छुरितमिव वियद घनैर्विचित्रैः,
मधुकर कुंकुम किंशुकावदातैः ॥१४॥
असित घन निरुद्धमेव वा
चलित तडिन्सुर चापं चित्रितम्।
द्विप महिष कुलाकुलीकृतं
वनमिव दावपरीतमम्बरम् ॥१५॥
अथवाञ्जनशैल शिलानिचय प्रतिरूप धरैः स्थागितं गगनम्।
हिम मौक्तिक शंख शशांकर द्युतिहारि भिरम्बु धरै रथवा ॥१६॥

तडिद्धैम कक्ष्यैर्बलाकाप्र दन्तैः
स्रवद्वारि दानैश्चलत्प्रान्त हस्तैः ।
विचित्रेन्द्रचाप ध्वजोच्छाय शोभै-
स्तमालालिनीलैर्वृतं चाब्दनागैः ॥१७॥
संध्यानुरक्ते नभसि स्थितानां-
मिन्दीवरश्याम रुचां घनानाम् ।
वृन्दानि पीताम्बर वेष्टितस्य
कान्ति हरेश्चोरयतां यदा या ॥१८॥
सशिखिचातक दर्दुर निस्वनै-
यदि विमिश्रितमन्द्र पटुस्वप्नाः
खमवतत्य दिगन्त विलम्बिनः
सलिलदाः सलिलौघमुचः क्षितौ ॥१९॥
निगदित रूपैर्जल धर जालै-
स्त्र्यहमरुद्धं द्व्यहमथवाहः ।
यदि वियदेवं भवति सुभिक्षं
मुदितजना च प्रचुर जला भूः ॥२०॥

उपर्युक्त आठ श्लोकों में उन लक्षणों का वर्णन है जिनसे अच्छी वर्षा होती है । वे इस प्रकार हैं–

खिले कमल के समान निर्मल रंग वाले, आकाश में कहीं काले से मिले हुए श्वेत बादल, कहीं पर श्वेत, कहीं केवल काले इस प्रकार के मानो सर्प कुण्डली मारे बैठा है और उसका पृष्ठ और पेट दिखाई दे रहा है । बादलों में बिजली चमक रही हो जैसे सर्प अपनी जिह्वा लपलपाता है, भौंरा कुंकुभ, टेसू के फूल के रंग से युक्त मेघ । रंगीन बादल प्रातः और सायं दिखाई देते हों तो ये लक्षण शुभ है अर्थात् वर्षा अच्छी होगी ।

काले पर्वत के रंग और आकार वाले मेघ जिनमें विद्युत चमक रही हो, इन्द्र धनुष का निर्माण हो, विद्युत और इन्द्र धनुष से युक्त बादल जो ऐसे प्रतीत हो रहे हों मानों दावानल से युक्त वन में महिष हाथियों के झुण्ड हों, शुभ मेघ हैं ।

अंजन (काले सुरमई) रंग के बादलों से आकाश ढक जाय जो काले पत्थर के शिलाखण्ड से प्रतीत हो रहे हों अथवा हिम, मुक्ता, शंख और चन्द्र किरणों के समान शुभ श्वेत बादलों से आकाश आच्छादित हो जाय तो शुभ है।

बिजली रूप हेम कक्षा सम्पन्न, हंस पंक्ति रूप अग्रदन्त सम्पन्न, जल रूप मदचुवाता, अनेक रंगों का इन्द्र धनुष रूपी ध्वज से युक्त, तमाल वृक्ष या भौंरे के समान रंग वाले हाथी रूपी बादल शुभ है। इस श्लोक में मेघों की उपमा हाथी से दी है।

सन्ध्या कालीन बादल अरुण पीत रंग के इस प्रकार के हों मानों पीताम्बर धारण किये कृष्ण हैं तो ये शुभ मेघ हैं। संध्या कालीन मेघ (यहाँ संध्या का अर्थ सूर्योदय और सूर्यास्त काल से है) पीत और लाल रंग के और कहीं-कहीं नील श्याम वर्ण के होते हैं, अतः इनकी उपमा पीताम्बर धारी कृष्ण से दी है।

मेघ गंभीर शब्द से गरज रहे हों, उसी के साथ मोर, चातक और दादुर (मेंढक) बोल रहे हों, बादल क्षितिज पर निचाई पर हों तो ये अच्छी वर्षा के सूचक हैं।

ऊपर जिस प्रकार के बादलों एवं लक्षणों का वर्णन किया गया है वह स्थिति एक अहोरात्र, दो दिन या तीन दिन रहे तो सुन्दर वर्षा होगी, सुभिक्ष होगा और लोग आनंदित होंगे।

अशुभ लक्षण

इसके आगे रोहिणी योग में अशुभ निमित्त का वर्णन है—

रुक्षैरल्पैर्मारुताक्षिप्तदेहै–
रुष्टध्वाङ्क्ष प्रेत शाखामृगाभैः।
अन्येषां वा निन्दितानां स्वरूपै-
र्मूकैश्चाब्दैर्नो शिवं नापिवृष्टिः ।।२१।।

रूखे हल्की हवा से भी जो बिखर गये हैं, ऊंट, कौवा, प्रेतशव, बन्दर के आकार वाले शब्द रहित मेघ रोहिणी योग में दिखाई दे तो वे अशुभ होते हैं अर्थात् भविष्य में वर्षा के अभाव के सूचक हैं। वर्षा के लिए इसी प्रकार के अशुभ चिन्ह गर्ग ने भी कहे हैं।

छिन्नमूलाश्च वृक्षाश्च शुष्कावाष्पाकुली कृताः ।
पापसत्वानुकाराश्च मेघाः पापफलप्रदाः ॥

जिनकी जड़ कट गई है ऐसे वृक्षों के समान, शुष्क वायु से पीड़ित, अशुभ आकार के मेघ अशुभ फल के सूचक हैं ।

मेघ रहित आकाश के लक्षण

आगे के श्लोक में मेघ रहित आकाश के फल का वर्णन है–

विधतधने वा वियति विवस्वा-
न मृदुमयूखः सलिल कृदेवम् ।
सर इव फुल्लं निशि कुमुदाढ्यं
खमुडु विशुद्धं यदि च सुवृष्ट्यै ॥२२॥

आकाश मेघ शून्य हो, सूर्य की किरणें तीक्ष्ण हों, रात्रि में आकाश निर्मल नक्षत्रों से युक्त कुमुद सरोवर के समान प्रफुल्लित हो तो वृष्टि अच्छी होगी ।

इस प्रकार मेघ रहित आकाश और मेघ युक्त आकाश का निरीक्षण कर बरसात कैसी होगी इसकी आषाढ़ के प्रथम पक्ष में ही जानकारी हो जाती है ।

दिशा प्रभाव

रोहिणी योग में मेघों के आकार वर्ण का पूर्व पंक्तियों में बताया है । इसके आगे दो श्लोकों में मेघ किस दिशा से उठने पर क्या फल होगा इसे बताया है चार दिशायें पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर और इनके मध्य चार उप दिशायें आग्नेय, नैऋत्य, वायव्य, ईशान परिक्रमा क्रम से क्रमशः हैं । विभिन्न दिशाओं के फल इस भाँति हैं–

पूर्वोद्भूतैः सस्य निष्पत्तिरब्दै-
राग्नेयाशा सम्भवैरग्नि कोपः ।
याम्ये सस्यं क्षीयते नैऋतेऽर्द्धं
पश्चाज्जातैः शोभनावृष्टिरब्दैः ॥२३॥
वायव्योत्थैर्वाति वृष्टिः क्वचिच्च
पुष्टावृष्टिः सौम्यकाष्ठा समुत्थैः ।
श्रेष्ठं सस्यं स्थाणु दिक्सम्प्रवृद्धै-
र्वायुश्चैवं दिक्षु धत्ते फलानि ॥२४॥

पूर्व-इस दिशा से उठे बादलों से अनाज प्रचुर मात्रा में उत्पन्न होता है। अर्थात् अच्छी वर्षा होगी।

आग्नेय–(दक्षिण पूर्व)-दिशा से उठे मेघ से अग्नि का कोप होता है या गर्मी पड़ती है वर्षा नहीं होती।

दक्षिण–दिशा से उठे मेघ से धान्य का नाश होता है। यह वर्षा के अभाव का सूचक है।

नैऋत्य–(दक्षिण-पश्चिम) दिशा से उठे बादलों से धान्य का आधा विनाश होता है। यह खण्ड वर्षा का लक्षण है। कहीं वर्षा होगी कहीं नहीं होगी या असामयिक होगी।

पश्चिम–के बादलों से अच्छी वर्षा होती है।

वायव्य– उत्तर-पश्चिम)से उठे बादलों से वायु के साथ वर्षा होती है। किसी स्थान पर वृष्टि होती है कहीं पर नहीं होती। वर्षा के साथ तेज हवा चलती है।

उत्तर–दिशा के बादलों से सुन्दर भरपूर वर्षा होती है।

ईशान–(उत्तर-पूर्व) के बादलों से श्रेष्ठ फसल होती है। अर्थात् सामयिक अच्छी वर्षा होगी।

उपरोक्त फल की भांति विभिन्न दिशाओं से बहती वायु का भी ऐसा फल होता है। आशय यह कि रोहिणी योग में यदि आकाश में बादल न हों, स्वच्छ आकाश हो तो स्थापित की हुई पताका से यह ज्ञात करें कि वायु किस दिशा से बह रही है और जो फल विभिन्न दिशाओं से उठे मेघों का है वही उस दिशा से बहती वायु का भी है।

अशुभ लक्षण

उल्कानिपातास्तडितोऽशनिश्च
दिग्दाह निर्घात मही प्रकम्पा।
नादा मृगाणां सपतत्रिणांच
ग्राह्या यथैवाम्बु धरास्तथैव ॥२५॥

रोहिणी योग के दिन, उल्कापात, वज्रपात, दिग्दाह आकाश में शब्द हों, भूकम्प हो, जंगल के पशु-पक्षी क्रन्दन करें तो वैसा ही फल समझें जैसा कि मेघों के विषय में है। याने ये अशुभ लक्षण हैं। आगे वर्षा के अभाव के सूचक हैं।

वर्षासूचक प्रयोग

नामांकितैरुदगादिकुंभै
प्रदक्षिणं श्रावण मास पूर्वैः ।
पूर्णैः समासः सलिलस्य दाता
स्तुतैरवृष्टिः परिकल्प्यमूनैः ॥२९॥

उपर्युक्त श्लोक में वर्षा आगामी मासों में कैसी होगी इसका एक प्रयोग बताया है। इस प्रयोग में दिग्साधन के लिये वृत्त खींचा था उसका उपयोग होगा। यह प्रयोग उस दशा में होगा जब रोहिणी योग के दिन वर्षा हो रही हो। प्रयोग इस प्रकार है–

समान मात्रा के चार कुंभ (घट) लें। एक कुंभ उत्तर दिशा पर, दूसरा पूर्व पर, तीसरा दक्षिण दिशा पर, और चौथा पश्चिम दिशा पर रख दें। यह प्रदक्षिणा क्रम हुआ।

उत्तर दिशा का कुंभ श्रावण मास का, पूर्व का भाद्रपद मास, दक्षिण का आश्विन और पश्चिम का कार्तिक मास का होगा।

इनमें जो कुंभ वर्षा के जल से पूरा भर जाय वह जिस मास की दिशा में रखा है उस मास में अच्छी वर्षा का सूचक है। जो खाली रहे उसके महीने में अवर्षण होगा। यदि कुछ हिस्सा जल से भर गया है और कुछ खाली है तो जिस मात्रा में जल भरा है उसी अनुपात में वर्षा उस घट के मास में होगी।

टिप्पणी–

यह प्रयोग उस स्थिति में होगा जब रोहिणी योग में वर्षा हो रही हो। यह स्पष्ट है कि जब तक रोहिणी योग है उस समय तक ये कुंभ खुले आकाश के तले रखे रहेंगे। योग समाप्ति पर देखा जायेगा कि किस कुंभ में कितनी मात्रा में जल है।

आचार्य ने (कुंभ) शब्द लिखा है। कुंभ कितना बड़ा हो अर्थात् जल की कितनी धारता (CAPACITY) का हो इसे स्पष्ट नहीं किया है। कुंभ मिट्टी के होते हैं छोटे बड़े कई प्रकार के होते हैं। यदि एक ही मात्रा के बहुत बड़े कुंभ रख दिये गये तो शायद ही कोई कुंभ पूर्ण रूप से भरे। फिर कुंभ के मुख संकरे होते हैं इसलिये वर्षा की

बूंदे बहुत सीमित दायरे से घड़े में जायगी। अतः यहां मन में इस प्रयोग के प्रति शंका उत्पन्न होती है। इसका समाधान यही है कि कुंभ के मुख चौड़े हों अर्थात् उनका व्यास कुंभ की पेंदी के तुल्य हो। अधिक से अधिक कितनी वर्षा सामान्यतः होती है उसका ध्यान रखते हुये कुंभ छोटे हों–ऐसे कि जिनके पूर्ण रूप से भरने की संभावना हो।

रोहिणी योग में चन्द्रमा की स्थिति का फल

रोहिणी नक्षत्र के किस दिशा में चन्द्रमा के होने से क्या फल होते हैं इसका विशेष फल आचार्य ने बताया है।

दूरगोनिकटगोऽथवा शशी दक्षिणेपथि यथा तथा स्थितः।
रोहिणी यदि युनक्ति सर्वथा कष्टमेव जगतो विनिर्दिशेत्॥

दूर या निकट रहकर यदि चन्द्र रोहिणी के दक्षिण की ओर रह कर गमन करे तो सब प्रकार से अनिष्ट कर प्रभाव ही होता है।

स्पृशन्नुदग्याति यदा शशांक-
स्तदा सुवृष्टिर्बहुलोपसर्गा।
असंस्पृशन् योगमुदक्समेतः
करोति वृष्टिं विपुलां शिवं च॥२६॥

यदि चन्द्रमा दक्षिण में स्पर्श कर रोहिणी के उत्तर में गमन करता है तो अनेक उपद्रव होते हैं किन्तु अच्छी वृष्टि भी होती है।

यहां गणना और चन्द्रमा के निरीक्षण की आवश्यकता है, तभी पता लगेगा कि चन्द्रमा नक्षत्र की किस दिशा से गुजर रहा है।

रोहिणी शकट योग

रोहिणी चन्द्र का एक विशेष योग आचार्य ने बताया है इसे रोहिणी शकट योग कहते हैं। रोहिणी नक्षत्र में पांच तारे हैं। इनमें एक प्रथम द्युति क्रम (FIRST MAGNITUDE) का है। यह रोहिणी का योग तारा है। ये पांच तारे शकट (गाड़ी की शक्ल बनाते हैं। जब चन्द्रमा इनका भेदन करता है तो उसे रोहिणी शकट योग कहते हैं।

रोहिणी शकट भेद की खगोलिक स्थिति को सूर्य सिद्धान्त में इस प्रकार दिया है–

वृषे सप्तदशे भागे यस्य याम्योऽशकद्वयात् ।
विक्षेपोऽभ्यधिकोभिद्याद्रोहिण्यां शकटंतुसः ॥

–सू. सि. ८/१३

वृष रासि के १७ अंश और दो अंश से कुछ अधिक दक्षिण विक्षेप पर जब कोई ग्रह होगा तो उसे रोहिणी शकट भेद कर्त्ता कहा जायेगा। ग्रहों में चन्द्रमा की गणना भी है।

ब्रह्म सिद्धान्त में भी रोहिणी शकट का ऐसा ही विवरण है–

विक्षेपोंऽश द्वितयादधिको वृषभस्य सप्तदशभागे ॥
यस्य ग्रहस्य याम्यो भिनत्ति शकटं सरोहिण्याम् ॥

इस रोहिणी शकट में उपर्युक्त बिन्दु में जब चन्द्रमा स्थित होता उसका फल इस प्रकार होता है–

रोहिणी शकट मध्य संस्थिते
चन्द्रमस्य शरणी कृता जनः ।
क्वापि यान्ति शिशु याचिताशनाः
सूर्यतप्त पिठराम्बु पायिनः ॥३०॥

यदि चन्द्रमा रोहिणी शकट के मध्य हो तो लोग शरण रहित होकर इधर उधर मारे–मारे घूमते हैं। उनकी स्थिति ऐसी दयनीय हो जाती है कि उनके शिशु भोजन माँगते हैं किन्तु वे उन्हें भोजन नहीं दे सकते। यही नहीं जल का ऐसा अभाव हो जाता है कि सूर्य की धूप से तपा हुआ पानी उन्हें पीना पड़ता है। भावार्य यह है कि इस योग से वर्षा नहीं होगी सूखा और अकाल की स्थिति होगी।

आगे के श्लोक में रोहिणी के किस दिशा में चन्द्रमा के होने से क्या फल होता है इसे बताया है।

आग्नेय्यां दिशि चन्द्रमा यदि भवेत्तत्रोपसर्गो महान् ।
नैऋत्यां समुपद्रुतानि निधनं सस्यानि यान्तीतिभिः ॥
प्राजेशानिल दिक् स्थिते हिमकरे सस्यस्य मध्यश्चयो ।
याते स्थाणु दिशं गुणा सु बहवः सस्यार्ध वृष्टयादयः ॥

यदि चन्द्रमा अग्नि कोण में हो तो बहुत उपद्रव होते हैं। यदि चन्द्रमा दक्षिण पश्चिम दिशा में हो तो अनेक कारणों से फसल नष्ट हो

जाती है। चन्द्रमा की उत्तर पश्चिम स्थिति में धान्य की मध्यम स्थिति होती है। यदि चन्द्रमा ईशान (उत्तर-पूर्व) में हो तो अनेक गुण होते हैं। धान्य का मूल्य बढ़ जाता है।

ताडयेद्यदि च योगतारकामावृणोति वपुषा यदापि वा।
ताडने भयमुशन्ति दारुणछादने नृपबधोऽङ्गनाकृतः॥

यदि चन्द्रमा रोहिणी नक्षत्र के योग तारा का भेद करे या आच्छादित करे तो भेद करने की स्थिति में दारुण भय होता है और आच्छादित करे तो स्त्री के द्वारा राजा का वध होता है।

टिप्पणी–

कुछ टीकाकारों ने दोनों स्थितियों का एक ही फल कहा है। किन्तु भुट्टोत्पल ने दोनों स्थितियों 'ताडन' और 'आच्छादन' के अलग अलग फल कहें हैं। भट्टोत्पल द्वारा कथित फल प्रमाणिक है। उत्पल ने 'ताडन' का अर्थ 'शृंगैकदेशेन स्पृशति' और छादने का अर्थ 'शरीरेण आच्छादयति' अर्थात योगतारा को चन्द्रमा ढक ले यह किया है। योगतारा क्या है। इस विषय में लिखा है–

स तारागण लंघ्ये तु या तारा दीप्तिमुत्तरा।
योगतारारेति सा प्रोक्ता नक्षत्राणां पुरातनैः॥

नक्षत्र में जो तारा सर्वाधिक प्रकाशवान हो वह योगतारा कहा जाता है ऐसा प्राचीनों का मत है। रोहिणी नक्षत्र में पूर्व स्थित तारा योग तारा है। ऐसा सूर्य सिद्धान्त में कहा है।

रोहिण्यादित्यमूलानां प्राचीसार्पस्य चैंयहि।
यथा प्रत्यवशेषां स्थूलस्याद्योग नारका॥

रोहिणी, पुनर्वस, मूल और आश्लेषा के पूर्व स्थिति तारे और शेष नक्षत्रों में सर्वाधिक द्युति मान तारा योग तारा है। यह तारा आधुनिक खगोल विज्ञान में (ALDEBARAN) नाम से जाना जाता है रोहिणी शकट योग की विभिन्न स्थितियों को वेध शाला में दूरवीक्षण यन्त्र से देख कर सही रूप में जाना जा सकता है।

अन्तिम दो श्लोक में आचार्य ने कुछ शकुनों का उल्लेख किया है-

गोप्रवेश समयेऽग्रतोवृषो
यातिकृष्ण पशुरेव वापुरः ।
भूरि वारि शबले तु मध्यमं
नो सितेऽम्बु परिकल्पना परैः ।।

रोहिणी योग के दिन गोधूलि (सायं काल) जब कि पशु चर कर घर वापस आते हैं तो पुर (ग्राम) में सबसे आगे वृष (बैल) हो या काले रंग का पशु (गाय या बकरी) आगे हो तो काफी वर्षा होती है यदि काले और सफेद रंग का मिला जुला पशु हो तो मध्यम वर्षा होती है यदि सबसे आगे श्वेत पशु हो तो वर्षा नहीं होती । अन्य रंगों के पशुओं के लिये इसी आधार पर अपनी कल्पना से विचार करना चाहिए ।

निमित्त अवलोकन के लिये गर्ग और पराशर ने भी इसी प्रकार लिखा है । गर्ग ने एक विशेष शकुन यह बताया है कि यदि सबसे आगे पाण्डु (पीला, कत्थई) रंग की गाय हो तो ग्रीष्म के अनाज की अच्छी उपज होती है ।

पराशर ने कहा है-

अथ अस्तमय वेलायां पुरद्वारमभिगम्य निमित्तानुपलक्षयेत् ।
तत्र गो गजाश्व रथ प्रथम प्रवेशे पुर विजयो वानरखरोष्ट्र
नकुल मार्जार प्रवेशे विद्रवो नेत्रङ्गहीन प्रवेशे त्वशनि भय ।

सूर्यास्त के समय नगर के द्वार पर जाकर निमित्तों का निरीक्षण करें । यदि गो, हाथी, घोड़ा रथ प्रथम प्रवेश करे तो पुर विजयी होता है अर्थात् सम्पन्नता होती है । यह शुभ शकुन है । यदि बन्दर, गधा, ऊंट, नेवला या बिल्ली सर्वप्रथम नगर में सायं प्रवेश करे तो यह उपद्रव का लक्षण है । यदि अंधा या विकलांग व्यक्ति प्रवेश करे तो बिजली गिरने का भय होता है ।

यहां यह स्पष्ट करना उपयुक्त होगा कि वर्तमान में शहरों में इन निमित्तों के देखने का प्रश्न ही नहीं उठता । ये निमित्त उस समय के हैं जब परकोटे से युक्त नगर ग्राम होते थे, सभ्यता ग्राम प्रधान थी । इसके अतिरिक्त इन शकुनों को प्रमुखता नहीं देनी चाहिये । पूर्व में

उल्लिखित योग ही प्रमुख रूप से विचारणीय हैं ।

अन्तिम श्लोक में आचार्य ने कहा है–

दृश्यते न यदि रोहिणी युत-
श्चन्द्रमा नभसि तोयदावृते ।
रुग्भयं महदुपस्थितंथन तदा
भूश्च भूरि जल सस्य संयुता ।।

यदि रोहिणी योग में आकाश इस प्रकार बादलों से ढका हो कि चन्द्रमा न दिखाई पड़े तो रोग का भारी भय होता है किन्तु पृथ्वी पर प्रचुर जल वर्षा होती है और अनाज भी अच्छा पैदा होता है ।

टिप्पणी

जैसा कि पहिले वर्णन किया जा चुका है कि रोहिणी योग आषाढ़ में देखा जाता है । मेघ आकाश में हों इसकी संभावना रहती है । आकाश में कई प्रकार के मेघ होते हैं । एक वे छितरे हुए बादल जिनमें चन्द्र दर्शन होता है, दूसरे ऐसे घने बादल जिनके कारण चन्द्रमा न दिखाई दे, तीसरी वह स्थिति जिनमें रात्रि में कुछ समय तक चन्द्र नहीं दिखाई दिया घने बादलों ने ढका था, किन्तु थोड़े ही समय में वर्षा होकर बादल छट गये या वायु उन्हे उड़ा ले गई और रोहिणी योग के रहते चन्द्र दिखाई दे गया । ये तीन स्थितियां बनती हैं । यहां आचार्य का मन्तव्य यह है कि रोहिणी योग के पूरे काल खण्ड में चन्द्रमा मेघों से आच्छादित होने के कारण यदि न दिखाई दे तो उपर्युक्त श्लोक में वर्णित फल होगा । इसमें शुभाशुभ दोनों फल हैं । शुभ यह है कि वर्षा और कृषि उपज अच्छी होगी, अशुभ फल यह होगा कि लोग रोगों से पीड़ित होंगे ।

रोहिणी योग का प्रयोग और निरीक्षण देश के किसी एक स्थान पर करके पूरे देश की वर्षा या अन्य फल कहना गलत होगा । यह निरीक्षण प्रयोग प्राचीन काल में देश के विभिन्न भागों में करके अपने क्षेत्र की वर्षा मौसम की पूर्व जानकारी प्राप्त की जाती थी । एक स्थान पर चन्द्रमा बादलों से ढका हो सकता है, दूसरे क्षेत्र में बादलों के

साथ वर्षा भी हो सकती है तो किसी अन्य स्थान पर आकाश निर्मल हो सकता है। किस दिशा में वायु चल रही है इसमें भी अन्तर होगा और उस अन्तर के अनुसार उस क्षेत्र की वर्षा का भविष्य होगा। अतः एक स्थान के प्रयोग का परिणाम सम्पूर्ण देश पर लागू नहीं होगा। जिस प्रकार देश के विभिन्न भागों में मेघ के गर्भ का निरीक्षण आवश्यक है उसी प्रकार रोहिणी योग के लिये भी है। यह कार्य किसी बड़े संस्थान द्वारा अथवा नियोजित ढ़ग से राजकीय सहायता से ही संभव है।

—०—

अध्याय ५

दैनिक वर्षा भविष्य

सप्तनाड़ी चक्र

नरपति जय चर्या नाक्षत्रिक ज्योतिष का एक प्रामाणिक प्राचीन ग्रन्थ है। इसमें सप्तनाडी चक्र का वर्णन है। नरपति नाम के विद्वान ने बारहवीं शताब्दी में अनेक प्राचीन ग्रन्थों का मंथन कर इस ग्रन्थ की रचना की थी। रचनाकार ने अपनी कृति को शास्त्र (विज्ञान) की संज्ञा दी। प्रथम श्लोक में लिखा है–

नरपतिरितिलोके ख्यात नमामि धास्ये।
नरपति जय चर्या नामकं शास्त्रमेतत्॥

अपनी रचना को शास्त्र कहना उचित ही है क्यों कि जिन प्राचीन विद्याओं के ग्रन्थों का अध्ययन मनन कर ग्रन्थ की रचना की वे प्राचीन शास्त्र ही हैं। नरपति लिखते हैं–

श्रुत्वादौ यामलान्सप्त तथा युद्ध जयार्णवम्।
कौमारी कौशलंचैव योगिनी जाल संचरम्॥
रक्षोघ्नं च त्रिमुण्डं च स्वरसिंहं स्वरार्णवम्।
भूवलं भैरवं नाम पटलं स्वरभैरवम्॥
तंत्रं रणाह्वयं ख्यातं सिद्धान्तं जयपद्धतिम्।
पुस्तकेन्द्रं च ढौकं च श्रीदर्शं ज्यौतिषं तथा॥
मंत्र यंत्राण्यनेकानि कूट युद्धानि यानि च।
तंत्र युक्तिं च विज्ञाय विज्ञानं बडवानले॥
एतेषां सर्व शास्त्राणां दृष्ट सारोऽहमात्मना।
सारोद्धारं भणिष्यामि सर्व सत्वानुकम्पया॥

"सात यामल १. ब्रह्मयामल, २. विष्णुयामल, ३. रुद्रयामल,

४. आदियामल, ५ स्कंदयामल, ६. कूर्मयामल, ७. देवीयामल, का अध्ययन करके युद्ध जयार्णव, कौमारी, कोशल, योगिनीजाल, रक्षोग्न त्रिमुण्ड, स्वरार्णव, भूवल भैरव, स्वरभैरव, पटल, ज्योतिष, तन्त्र मन्त्र आदि का अभ्यास कर इन सब शास्त्रों का सार कहता हैं ।"

इस ग्रन्थ में नाक्षत्रिक चक्रों का प्रचुरता से वर्णन है । उन्हीं में सर्पाकार सप्तनाड़ी चक्र है जो इस वर्षा से सम्बन्धित है । अनेक रहस्य मय प्राचीन दुर्लभ ग्रन्थों के सार से युक्त इस ग्रन्थ में वर्णित सप्तनाड़ी चक्र वर्षा की भविष्यवाणी के लिये अनुभूत है । इससे वर्षा ऋतु की दैनन्दिनी वर्षा का पूर्व ज्ञान होता है ।

इस चक्र में बभिजित सहित २८ नक्षत्र लिये हैं । उनका वर्गीकरण एवं दृश्यमान सात ग्रहों से सामंजस्य कर वर्षा भविष्य कहने की विधि बताई । ग्रन्थ कार लिखते हैं-

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि चक्रं यत् सप्तनाडिकम् ।
यस्य विज्ञान मात्रेण वृष्टिं जानन्ति साधकाः ॥

इस चक्र के विज्ञान को समझ लेने पर साधक (ज्योतिष की साधना करने वाले विद्वान) वर्षा की जानकारी प्राप्त कर लेते हैं ।

यह चक्र सर्पाकार बनाने को बताया है और नक्षत्र क्रम कृत्तिकादि है जैसा कि प्राचीन ज्योतिष में अधिकांश लिया गया है-

कृत्तिकादि लिखेद् भानि साभिजित क्रमेण च ।
सप्तनाडी व्यधस्त्र कर्तव्य पन्नगाकृतिः ॥

कृत्तिका से आरम्भ कर अभिजित सहित क्रम से नक्षत्रों को लिखकर सप्तनाड़ी का वेध "पन्नगा कृति"--सर्पाकार करना चाहिये ।

सप्तनाड़ी चक्र सर्पाकार बनाने को बताया है । इसे हम सरल सुबोध करके दे रहे हैं--

सप्तनाड़ी चक्र

क्र.	नाम नाड़ी	नक्षत्र	स्वामी ग्रह
१	चण्डा नाड़ी	कृत्तिका, विशाखा, अनुराधा, भरणी	शनि
२	वायु नाडी	रोहिणी, स्वाती, ज्येष्ठा, अश्विनी	सूर्य
३	दहना नाडी	मृगशिरा, चित्रा, मूल, रेवती	मंगल
४	सौम्य नाडी	आर्द्रा, हस्त, पूर्वाषाढ़ा, उत्तरा भाद्रपद	गुरु
५	नीर नाडी	पुनर्वसु, उ. फा., उ. षा. पू. भाद्रपद	शुक्र
६	जल नाडी	पुष्य, पू. फा. अभिजित, शतभिषा	बुध
७	अमृता नाडी	आश्ले., मघा, श्रवण, धनिष्ठा	चन्द्र

उपर्युक्त सात नाडियों को दो भागों में विभाजित कर दिया है। सात नाडियों में चतुर्थ नाडी सौम्या मध्य में है। इसके आगे की तीन नाडियाँ– नीर, जल, अमृता का समूह "सौम्य" संज्ञक और प्रारम्भ की तीन नाडी–चण्डा, वायु, दहना, 'याम्य' संज्ञक हैं।

विभाजक नाडी सौम्या के स्वामी वृहस्पति हैं। वृहस्पति न्यायाधीश धर्मगुरू हैं। नवग्रहों में सर्वाधिक शुभता प्रदान करने की आप में क्षमता है, अतः सबके केन्द्र स्थल की नाडी के स्वामी हैं। इस नाडी के आगे की तीन नाडियाँ नीर, जल, अमृता, सौम्य [शुभ] नाडियां हैं। इनके स्वामी क्रमशः शुक्र, बुध, चन्द्र नैसर्गिक शुभ ग्रह हैं। इस मध्यवर्ती नाडी के पूर्व चण्डा, वायु, दहना इन तीन का समूह याम्य नाम का है। इन तीनों के स्वामी क्रमशः शनि, सूर्य, मंगल हैं जो कि नैसर्गिक क्रूर ग्रह माने जाते हैं।

आगे इन नाडियों में गृह स्थितियों का वर्षा के सम्बन्ध में शुभाशुभ फल बताया गया है। इसके पूर्व कि फल बतायें यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि इनको वर्षा ऋतु में सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र प्रवेश से देखना चाहिए।कुछ विद्वान इसे सूर्य के मेष प्रवेश से देखते हैं जब कि ग्रन्थकार ने स्पष्ट कहा है–

प्रावृट् काले समायाते रौद्र ऋक्षगते रवौ।
नाडी वेध समांयोगाज्जल योगं वदाम्यहम् ॥

वर्षा ऋतु में सूर्य के रौद्र [आर्द्रा] नक्षत्र में जाने पर नाडी वेध

के योग से मैं जल [वर्षा] के योग को कहता हूँ।

सप्तनाडी में स्थित ग्रहों का प्रभाव

याम्य का अर्थ है अशुभ और सौम्य का अर्थ है शुभ। याम्य के अन्तर्गत चण्डा, वायु और दहना नाडी हैं। ये यथा नाम तथा गुण हैं। इन नाडियों में जब ग्रह संचरण करते हैं तो नाम के अनुरूप फल प्रकट करते हैं।

ग्रहाः कुर्युर्महावातं गताश्चंडाख्य नाडिका।
वायुनाडी गता वायुं दहन्यामति दाहकाः॥

चण्डा नाडी में जाने पर ग्रह प्रचण्ड वायु, आँधी, तूफान चलाते हैं। वायु नाडी के नक्षत्रों में होने पर केवल तेज हवा चलती है, वर्षा नहीं होती और दहना नाडी में तापमान बढ़ता है, गर्मी होती है। यहाँ भी वर्षा का अवरोध होता है।

शेष ४ नाडी सौम्य, नीर, जल और अमृता में ग्रहों के जाने पर क्या प्रभाव होता है ? वह इस प्रकार है–

सौम्यनाडीगता मध्या नीरस्था मेघ वाहकाः।
जलायां वृष्टिदश्चन्द्रोऽमृतेचाप्यतिवृष्टिदाः॥

मध्यवर्ती सौम्य नाडी अथवा नीर नाडी में ग्रह जाने पर बादल उठते हैं। जल नाडी में ग्रहों के संचरण में वृष्टि होती है और अमृता नाडी में भारी वर्षा होती है।

ध्यान दें, मौसम में वायु, तापमान और वर्षा ये प्रमुख विन्दु हैं। सप्तनाडी का वर्गीकरण इन तीनों की जानकारी देता है। चण्डा और वायु नाडी ये दोनों वायु का क्या रूप होगा यह बताती हैं। वायु तो हमेशा चला करती है किन्तु उसका कभी सामान्य रूप होता है कभी तीव्र रूप होता है, जिसे तूफान या आँधी कहते हैं। चण्डा नाडी तूफान की स्थिति बतायेगी। वायु नाडी सामान्य वायु की स्थिति की सूचक है।

प्रायः ऐसा भी होता है कि वर्षा ऋतु में पानी नहीं बरसता गर्मी बढ़ जाती है। तापमान की स्थिति को दहना नाडी बतायेगी। दहन का अर्थ है जलना। मंगल अग्नि तत्व का ग्रह है, इसलिए यह दहना नाडी का स्वामी है।

वायु और तापमान के बाद तीसरा विन्दु वर्षा है। इससे सम्बंधित चार नाडियाँ हैं– सौम्य, नीर, जल और अमृता। वर्षा मेघों से होती है। बादलों की स्थिति सौम्य और नीर नाडी बताती है। वर्षा सामान्य होगी या अधिक इसकी जानकारी जल और अमृता नाडी से होगा। नाडियों का संक्षेप में मौसम की दृष्टि से वह वर्गीकरण हुआ–

चण्डा– आँधी, तूफान, साइक्लोन।

वायु– सामान्य वायु।

दहना– तापमान गर्मी में वृद्धि।

सौम्य– बादलों का उठना।

नीर– जल से भरे बादल।

जल– सामान्य वर्षा।

अमृता– प्रचुर वर्षा।

प्रत्येक नाडी के नक्षत्र नाडी चक्र में देखिए। अब नाडियों में ग्रहों की स्थिति से क्या प्रभाव होगा उसके सूक्ष्म नियम बता रहे हैं।

नाडी में ग्रहयोग से वर्षा नियम

एकोप्येतत्फलं दत्ते स्वनाडी संस्थितो ग्रहः।
सुभूतः सर्वनाडीस्थो दत्ते नाड युद् भगंफलम् ॥

१. "एक भी ग्रह अपनी नाड़ी में स्थित हो तो वह उस नाडी का फल देता है। केवल मंगल जिस किसी नाडी में होता है उसका फल देता है।" जैसे, शनि चण्डा नाडी का स्वामी है। चण्डा नाडी के कृत्तिका, विशाखा, अनुराधा, भरणी नक्षत्र हैं। शनि इनमें से किसी नक्षत्र में होगा तो प्रचण्ड वायु का फल करेगा। मंगल दहना नाडी का स्वामी है। इस नाडी के नक्षत्र मृगशिरा चित्रा मूल रेवती इनमें से किसी में संचरण करेगा तो गर्मी में वृद्धि करेगा। मंगल के लिए उपर्युक्त श्लोक में एक अपवाद नियम यह बताया है कि वह जिस नाडी में होता है उसका फल करता है, इसे ध्यान में रखना चाहिए। इसी प्रकार अन्य ग्रहों के विषय में समझें।

२. एक नाडी में दो या तीन शुभ या अशुभ ग्रह गये हों तो नाडी का शुभ या अशुभ फल होता है।

३. यदि कई ग्रह चण्डा नाडी–कृत्तिका, विशाखा, अनुराधा भरणी इन नक्षत्रों में हों तो महावायु आँधी तूफान का योग बनता है।

४. यदि कई ग्रह वायु नाडी–रोहिणी, स्वाती, ज्येष्ठा, अश्विनी नक्षत्र में हों तो वायु की अधिकता रहती है।

५. यदि ग्रह दहना नाडी– मृगशिरा, चित्रा, मूल, रेवती में हों तो गर्मी का प्रकोप होता है।,

६. मध्य की सौम्य नाडी– आर्द्रा, हस्त, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्र में ग्रह हों तो मध्यम फल होता है। अर्थात् इस स्थिति में शेष ग्रह किन नाडियों में हैं यह देखकर निष्कर्ष निकालना चाहिए।

७. नीर नाडी [पुनर्वसु, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, पूर्वा भाद्रपद] में ग्रह हों तो बादल आते हैं।

८. जल नाडी [पुष्य, पूर्वा फाल्गुनी अभिजित, शतभिषा] में चन्द्रमा हो तो वृष्टि होती है।

९. अमृत नाडी [आश्लेखा, मघा, श्रवण, धनिष्ठा] में चन्द्र हो तो भारी वृष्टि होती है।

१०. जिस नाडी में चन्द्रमा है यदि उसी में क्रूर ग्रह शुभ ग्रह या दोनों हों उस दिन उत्तम वृष्टि होती है।

११. एक ही नक्षत्र में यदि ग्रह हैं तो उस नक्षत्र में जब तक चन्द्रमा रहेगा तब तक भारी वृष्टि होगी। चन्द्रमा एक नक्षत्र में ६० घटी कुछ कम ज्यादा समय रहता है।

१२. केवल सौम्य ग्रह या पाप ग्रह से चन्द्रमा विद्ध हो तो उस दिन तुच्छ वृष्टि होगी।

१३. जिस ग्रह की नाडी में चन्द्रमा हो उसी ग्रह से यदि दृष्टि या युत है तो उस दिन वृष्टि होगी। किन्तु चन्द्रमा क्षीण [कृष्ण पक्ष की अष्टमी से शुक्ल अष्टमी तक का] नहीं होना चाहिए।

१४. चन्द्रमा यदि अमृता नाडी में हो और उसी में शुभ क्रूर दोनों ग्रह हों तो एक दिन तीन दिन या सात दिन तक तीन, चार या पाँच बार पानी बरसता है।

१५. जल नाडी में चन्द्रमा हो और शुभ क्रूर मिश्रित ग्रहों से युत हो तो डेढ़ दिन या पाँच दिन तक पानी बरसता है।

१६. नीर नाडी में चन्द्रमा हो और उसमें शुभ क्रूर मिश्रित ग्रह हों तो तीन दिन डेढ़ प्रहर अर्थात् तीन दिन साढ़े चार घण्टे वर्षा होती है।

१७. यदि अमृता नाडी में सब ग्रह हों तो १८ दिन वर्षा होती है।

८. यदि जल नाडी में सब ग्रह हों तो १२ दिन वर्षा होती है।

१६. यदि नीर नाडी में सब ग्रह हों तो ६ दिन वर्षा होती है।

२०. शेष चण्डा, वायु, दहना नाडी में सब ग्रह हों तो महावायु अर्थात् आँधी तूफान और दुष्ट वर्षा होती है। दुष्ट वर्षा का अर्थ आँधी तूफान के साथ हानिकारक वर्षा है।

२१. निर्जल नाड़ी में अधिक शुभ ग्रह हों तो वह जलद नाडी हो जाती है अर्थात् उसमें वर्षा की संभावना रहती है।

२२. जलद नाडी में अधिक अशुभ ग्रहों का योग हो तो जलद नाडी केवल बादलों का योग बनाती है, पानी नहीं बरसता।

२३. याम्य नाडी—चण्डा, वायु, दहना में सब क्रूर ग्रह मंगल, शनि, सूर्य हों तो अनावृष्टि के सूचक हैं। यदि उनके साथ शुभ ग्रह हो और जलाशं में हो तो थोड़ी वर्षा होती है। जलांश का अर्थ है कर्क मकर, मीन पूर्ण जल राशियाँ।

२४. एक ही नाडी में चन्द्र, मंगल और गुरु हों तो भूमि जलमय हो जाती है अर्थात भारी वर्षा होती है।

२५. बुध, शुक्र एक ही राशि में गुरु के साथ हों तो गोचर का चन्द्रमा जब उनसे योग करेगा तो उत्तम वृष्टि होगी। अर्थात जब तक चन्द्रमा की युति रहेगी दो तीन दिन पानी बरसेगा।

२६. जल योग में चन्द्रमा और शुक्र को क्रूर ग्रह देखता हो तो थोड़ी वर्षा होगी।

२७. निम्नांकित स्थितियों में अधिक वृष्टि होती है यदि ग्रह जल नाडी में हैं।

(१) ग्रह के उदय अस्त समय में।

(२) मार्गीया वक्री होने के समय।

(३) सूर्य के राशि परिवर्तन के समय। सूर्य संक्रान्ति।

२८. यदि मंगल एक ही राशि में सूर्य के आगे है तो प्रलय के बादलों

को भी सोखने में समर्थ है अर्थात यदि बादल भी उठेंगे तो भी वर्षा नहीं होगी।

टिप्पणी–

इस नाडी चक्र में २८ नक्षत्रों का उपयोग है। प्राचीन वेदांग ज्योतिष में भी कहीं २७ और कहीं २८ नक्षत्रों का प्रयोग दिखाई देता है। अभिजित प्रथम द्युति क्रम का तारा है। इसे आधुनिक वैज्ञानिक VEGA कहते हैं। इस नक्षत्र का क्षेत्र भ चक्र में २७६°-४०' से २८०°-५३' - २०" तक है २७ नक्षत्रों की गणना में इसका क्षेत्र उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का चतुर्थ पाद तथा श्रवण का १/१५ भाग आता है।

सात दृश्यमान ग्रह हैं, और सात नाडी हैं। प्रत्येक ग्रह से चार नक्षत्र सम्बन्धित हैं। इस प्रकार २८ नक्षत्रों का सात वर्गों में विभाजन है।

नैसर्गिक शुभ और अशुभ दो प्रकार के ग्रह हैं। नाडी भी सौम्य और याम्य दो भागों में विभाजित हैं। सौम्य का अर्थ है शुभ याने वर्षा कारक और याम्य का अर्थ है, अशुभ वर्षा अवरोधक।

सौम्य नाडियों के स्वामी सौम्य ग्रह हैं और याम्य नाडियों के स्वामी क्रूर ग्रह हैं।

शुभता की दृष्टि से अमृता (स्वामी चन्द्र) - जल (स्वामी बुध) तथा नीर (स्वामी शुक्र) यह क्रम हैं।

अशुभता की दृष्टि अर्थात वर्षा अवरोधक में दहना, वायु और चण्डा है। जिनके स्वामी क्रमशः मंगल, सूर्य, और शनि हैं। सूर्य और मंगल उष्ण और शोषक ग्रह हैं। शनि शीत- वायु प्रधान है।

शुभ ग्रहों का शुभ नाडियों में योग प्रचुर वर्षा का सूचक है। अशुभ ग्रहों का अशुभ नाडी में योग अवर्षण कारक है।

शुभ नाडियों में अशुभ ग्रह वर्षा अवरोधक है। यदि साथ में शुभ ग्रह भी हैं तो शुभ क्रूर ग्रहों के बल के तारतम्य से अल्प या मध्यम वर्षा होगी।

वर्षा में चन्द्रमा की स्थिति विशेष ध्यान देने की है। चन्द्रमा जब जलांश में होता है तो निश्चित रूप से (यदि वर्षा अवरोधक योग प्रबल नहीं है) वर्षा होती है।

जलांश का अर्थ है जिस राशि में चन्द्रमा है उसमें कितना जलांश है (देखें आर्द्रा प्रवेश अध्ययन में राशियों के जलांश)।

चन्द्र, बुध, शुक्र वर्षा कारक हैं। बृहस्पति सहायक है यदि उपर्युक्त ग्रह जल नाडियों में हैं किन्तु शुभ ग्रह पर यदि क्रूर ग्रह की दृष्टि या युति है तो वर्षा की मात्रा कम हो जायेगी।

आँधी तूफान का योग तभी होगा जब अधिकांश क्रूर ग्रह चण्डा या वायु नाडी में हों। यदि क्रूर ग्रह चण्डा नाडी में और सौम्य ग्रह जलीय नाडयों में हैं तो तूफान के साथ भारी वर्षा होंगी। मंगल नाडी के अनुरूप फल देता है। इसे एक उदाहरण से स्पष्ट करते हैं–

इस लेखक ने रश्मि विज्ञान नवम्बर १९८४ अंक में मासिक भविष्यवाणी में लिखा था कि दक्षिण भारत में ११-१२ नवम्बर को भयंकर तूफान आयेगा। उसका आधार इस प्रकार था - दिनांक ११-१२ नवम्बर १९८४ को सूर्य विशाखा (चंडा नाडी) में, मंगल उत्तराषाढ़ा (नीरा) शनि विशाखा [चन्डा नाडी], [बुध, अनुराधा [चन्डा नाडी] शुक्र मूल (दहना नाडी) में था। ता० १० को बंगाल की खाड़ी में तूफान की सूचना आई। ११ ता० को तूफान आया १२ ता० को भी प्रभाव रहा। चन्द्रमा ता० १० को कृत्तिका [चंडा] में, ११ को रोहिणी [वायु] में, १२ को मृगशिरा [दहना] में था। ११ ता० को मध्यान्ह १२-१३ पर सूर्य शनि की अंशात्मक युति थी। मंगल उत्तराषाढ़ा से दक्षिण दिशा को वेध कर रहा था। इन्हीं आधारों पर गह भविष्यवाणी की गईथी। इनमें सुर्य शनि बुध तीन ग्रह चन्ड़ा नाड़ी में थे चन्द्रमा भी चंडा, वायु, दहना तीन याम्य नाड़ियों में संचरण कर रहा था। मंगल जिस नाडी में होता है उस नाड़ीं का प्रभाव करता है। वह उत्तराषाढ़ा [नीरा] में था अतः तूफान के साथ भारी वर्षा भी हुई। चन्द्रमा वृषभ राशि [अर्धजलांश] में था। सूर्यशनि की अँशात्मक युति [CLOSE CONJUNCTION] या अंशात्मक प्रतियोग में अचानक मौसम में भारी परिवर्तन होता है।

इस प्रकार नाड़ी ग्रह, राशि के संश्लेषण विश्लेश्षण से मौसम का भविष्य फलादेश होता है।

मंगल यदि वर्षा ऋतु में एक ही राशि में या ३० अंश के अन्दर सूर्य से आगे हो तो किस प्रकार बादलों को सोख लेता है इसकी मिशाल वर्ष १९८७ की वर्षा ऋतु है।

वर्षा तूफान की स्थिति या अवर्षण अथवा भयंकर वर्षा की जानकारी के लिए जिस मास, सप्ताह या दिन की जानकारी करनी है उस काल में सभी ग्रहो की नाक्षत्रिक स्थिति की गणना करनी पड़ती है। फिर ग्रहों का गुण तथा नाड़ी के गुण के आधार पर मौसम का हाल मालूम होता है। यह अनुभव में आया है कि वर्षा में चन्द्रमा का सबसे महत्वपूर्ण पार्ट होता है। चन्द्रमा जल तत्व का ग्रह है। वह जब जलांश जल तत्व की राशियों में आयेमा तो वर्षा होगी बशर्ते चन्द्रमा पर अशुभ ग्रह का प्रभाव युति दृष्टि का न हो।

प्रयोग

वर्षा की दैनिक स्थिति जानने के लिये ग्रहों की नाक्षत्रिक स्थिति का नकशा सामने होना जरूरी है। वह पूरे वर्षाकाल का सूर्य के आर्द्रा प्रवेश से चित्रा में संचरण तक का तैयार कर लेना चाहिये। इससे ग्रह किस नाडी में चल रहे हैं यह सरलता से मालूम हो जायेगा। उदाहरण के लिये हम सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र में संचरण के समय ग्रह किन नक्षत्रों में होंगे उसका विवरण नीचे दे रहे हैं।

सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र में ग्रह संचार

दि. २१ जून से ५ जुलाई १९८८ तक

ग्रह	नक्षत्र	नाडी-स्वामी	संचरण अवधि	राशि	जलांश	संचरण अवधि
मंगल	पू. भाद्रपद	नीर-शु.	१३-६-८८ से ७-७८८	कुंभ	५०%	१जुलाई तक कुंभ पश्चात् मीन
बुध व	मृगशिरा	दहना-मं.	१५-५-८८ से १२-७-८८	वृष	५०%	२९ जुलाई तक
गुरु	कृत्तिका	चण्डा-श.	४-६-८८ से १३-८-८८	वृष	५०%	पूरी अवधि
शुक्र व	मृग	दहना-मं.	२१-६-८८ से २२-६-८८	वृष	५०%	पूरी अवधि
	रोहिणी	वायु-सू.	२२-६-८८ से १७-७-८७			
शनि व	मूल	दहना-मं.	पूरी अवधि	धनु	५०%	पूरी अवधि

मार्गी २५ जून ४-४ A. M. । शुक्र मार्गी ४ जुलाई ७-४१ P. M.

परिणाम—सूर्य के आर्द्रा प्रवेश के साथ वर्षा का आरम्भ माना जाता है किन्तु वर्षा कारक ग्रह शुक्र, बुध, गुरु दहना और चण्डा नाड़ी में २१ जून से ५ जुलाई १९८८ तक रहेंगे केवल मंगल नीर नाडी में होगा। इसके अतिरिक्त सूर्य की मिथुन संक्रान्ति १४-६-१९८८ वायु-मंडल में होगी। अतः सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र संचरण काल में व्यापक वर्षा नहीं होगी। मंगल नीर नाडी में स्थित होकर पुनर्वसु को वेध कर रहा है अतः पू. भाद्रपद (उत्तर) और पुनर्वसु (पूर्व) में उन तारीखों को वर्षा हो सकती है जब चन्द्रमा नीर, सौम्य, जल और अमृता नाडी में होगा। अतः व्यापक वर्षा ५ जुलाई के बाद ही होगी। कर्क संक्रान्ति ता १६-७-८८ को वरुण मण्डल में पड़ी है, इसलिये १६-७-८८ से १६-८-८८ तक अतिवृष्टि का योग है।

टिप्पणी—वर्षा की दैनन्दिन स्थिति को जानने के लिये इन विन्दुओं पर ध्यान दें।

१. आर्द्रा प्रवेश लग्न

२. सूर्य संक्रान्ति का मण्डल

३. चन्द्र किन नाडियों में संचरण करेगा

४. सप्त नाडी चक्र में बुध, शुक्र, ग्रह किन नाडियों में होंगे तथा किन नक्षत्रों में होंगे।

५. अवर्षण, सामान्य वृष्टि, अतिवृष्टि आंधी तूफान का क्षेत्र कौन सा होगा इसका निर्णय कूर्मचक्र और सर्वतोभद्र चक्र से होगा।

चन्द्र नक्षत्र संचार

२१-६-८८ से ५-७-८८

ता.	नक्षत्र	नाडी-स्वामी	अवधि
२१ जून	पू. फाल्गुनी	जल - बु.	घं. १७-५८ तक
२२ ,,	उ. फाल्गुनी	नीर - शु.	,, २०-५३ ,,
२३ ,,	हस्त	सौम्य - गु.	,, २३-२१ ,,
२४ ,,	चित्रा	दहना - मं.	,, २५-१० ,,
२५ ,,	स्वाती	वायु - सू.	,, २६-१४ ,,
२६ ,,	विशाखा	चण्डा - श.	,, २६-३० ,,
२७ ,,	अनुराधा	चण्डा - श.	,, २६-०१ ,,
२८ ,,	ज्येष्ठा	वायु - सू.	,, २४-५३ ,,
२९ ,,	मूल	दहना - मं.	,, २३-१४ ,,
३० ,,	पू. षाढा	सौम्य - गु.	,, २१-१२ ,,
१ जुलाई	उ. षाढा	नीर - शु.	,, १९-०२ तक
२ ,,	श्रवण	अमृता - चं.	,, १६-४८ ,,
३ ,,	घनिष्ठा	अमृता - चं.	,, १४-३९ ,,
४ ,,	शत-	जल - बु.	,, १२-४४ ,,
५ ,,	पू. भाद्रपद	नीर-शु.	,, ११-०५ ,,

चन्द्रमा तीव्र गति का ग्रह है, प्राय: एक नक्षत्र में दो तारीखों में संचरण करता है। ऊपर समय नक्षत्र समाप्ति का दिया है। जैसे- चन्द्रमा पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में २० जून को घं. १४-५१ पर आयेगा और २१ जून को घं. १७-५८ तक रहेगा। इसी प्रकार आगे भी समझें।

अध्याय ६
शीघ्र वर्षा के लक्षण

पिछले अध्यायों में लांगरेन्ज, मिडियमरेन्ज और शार्टरेन्ज वर्षा की भविष्यवाणी कैसे की जाय प्राचीन वर्षा विज्ञान के नियमों के आधार पर उसकी विधि बतायी जा चुकी है। मान लीजिये सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश हो चुका है और नियमित वर्षाऋतु आरम्भ हो चुकी है। ऐसी स्थिति में यह कैसे जाना जाय कि शीघ्र ही वर्षा होने वाली है। शीघ्र का मतलब २४ या ४८ घंटे। यह जानकारी प्रकृति और आसपास के वातावरण पशु, पक्षी, कीड़े मकोड़ों की हरकत वनस्पतियों की स्थिति को गौर से देखने से मालूम हो सकती है। अगर ये लक्षण न दिखाई दे तो शीघ्र वर्षा की आशा नहीं करना चाहिये। हजारों वर्षों के प्रकृति निरीक्षण का सार वराहमिहिर ने सद्योवर्षणाध्याय में दिया है। इन लक्षणों में अधिकांश केवल प्रकृति निरीक्षण के हैं। कुछ ज्योतिष के ग्रह नक्षत्र योग भी हैं। पहले प्रकृति से सम्बन्धित लक्षण दे रहे हैं–

उदयशिखरिसंस्थो दुर्निरीक्ष्योऽतिदीप्त्या
द्रुत कनकनिकाशः स्निग्धवैदूर्यकान्तिः।
तदहनि कुरुतेऽम्भस्तोयकाले विवस्वान्
प्रतपति यदि चोच्चैः खं गतोऽतीव तीक्ष्णम्॥

उदय होता सूर्य ऐसा चमकदार हो कि देखा न जा सके। जब सूर्य पूर्वी क्षितिज पर उदय होता है तो सामान्यतः उसे देखा जा सकता है, जब वह इतना चमकीला हो कि 'दुर्निरीक्ष्य' हो जाय और उसका रंग ऐसा हो जैसा कि पिघलाये हुये सोने का होता है। वैदूर्यमणि (लहसुनियां रत्न) की सी सूर्य की कान्ति हो और मध्यान्ह में अत्यन्त तीक्ष्ण हो तो उस दिन वर्षा होती है।

यहाँ 'तदहनि' शब्द अर्थात् उसी दिन से २४ घण्टे के अन्दर वर्षा होने का संकेत किया है। ध्यान रहे यह निरीक्षण वर्षा के मौसम का है अन्य ऋतुओं का नहीं है, इसे "तोयकाले" शब्द से स्पष्ट कर दिया है।

विरसमुदकं गोनेत्राभं वियद्विमला दिशो
लवणविकृतिः काकाण्डाभं यदा च भवेन्नभः।
पवनविगमः पोप्लूयन्ते झषाः स्थल गामिनो
रसनमसकृन्मण्डूकानां जलागम हेतवः ॥

इस श्लोक में शीघ्र वर्षा के निम्नाँकित लक्षण बताये हैं—

१. पानी स्वाद रहित हो जाय। यहाँ कुयें के पानी से आशय है, पाइप के पानी से नहीं क्योंकि कूप जल में ही भूमि के अनुसार कोई स्वाद होता है पाइप का पानी हमेशा स्वाद रहित होता है या उसमें क्लोरीन या प्रदूषण होने पर कोई स्वाद और गन्ध होती है।
२. दिशायें गाय के नेत्र के समान निर्मल हों अर्थात् आकाश चारों ओर निर्मल हो।
३. नमक पसीजने लगे। वातावरण में जब आर्द्रता (HUMIDITY) होती है तभी नमक पसीजता है वायु में जलांश अधिक होने पर ही वर्षा की संभावना होती है।
४. आकाश कौये के अण्डे के रंग का हो जाय। कौये का अण्डा श्वेत नील रंग का होता है। रंग देखने की चीज है शब्दों में वास्तविक रूप नहीं बयान किया जा सकता इसलिए आकाश के सही रंग को प्रदर्शित करने के लिए कौये के अण्डे की उपमा का सहारा लिया है।
५. हवा गुम सुम हो जाय।
६. मछलियाँ बार-बार जल में उछले।
७. मेढ़क बोलने लगे।

मार्जारा भृशमवनिं नखैर्लिखन्तो
लोहानां मलनिचयः सविस्रगन्धः।
रथ्यायां शिशुरचिताश्च सेतुबन्धाः
सम्प्राप्तं जलमचिरान्निवेदयन्ति ॥

१. बिल्लियाँ नाखूनों से धरती को कुरेदें ।

२. लोहे पर मल [जंग] लग जाय और माँस या मछली की सी उसमें गंध आये ।

३. छोटे बच्चे मार्ग में धूल से पुल आदि बना कर खेलें । उपर्युक्त लक्षण दिखाई दें तो शीघ्र वर्षा होने वाली है– ऐसा समझना चाहिए । जिस प्रकार हवा में आर्द्रता बढ़ने से नमक पसीजता है उसी प्रकार आर्द्रता का प्रभाव लोहे पर जंग लगने के रूप में भी होता है ।

गिरयोऽञ्जनचूर्ण सन्निभा यदि वा वाष्प निरुद्ध कन्दराः ।
कृकवा कुविलोचनोपमाः परिवेषाः शशिनश्च वृष्टिदाः ॥

पर्वत अंजन चूर्ण की तरह काले दिखाई दें, उनकी गुफायें भाप से भर जायँ, चन्द्रमा के आस पास मण्डल (HALO) हो और उसका रंग मुर्गे की आँख के समान लाल हो तो शीघ्र वर्षा होगी ।

विनोपघातेन पिपीलिकानामण्डोपसंक्रान्तिरहिव्यवायः ।
द्रुमावरोहश्च भुजंगमानां वृष्टेर्निमित्तानि गवां प्लुतं च ॥

बिना किसी उपघात अर्थात् कोई संकट न होते हुये चीटियाँ अण्डे लेकर सामूहिक रूप से एक स्थान से दूसरे स्थान को पलायन करें । सर्प मैथुन करें । सर्प वृक्षों पर चढ़ें तो यह शीघ्र वर्षा के चिन्ह हैं ।

तरुशिखरोपगताः कृकलासा गगनतलस्थित दृष्टिनिपाताः ।
यदि चगवां रवि वीक्षणमूर्ध्वं निपततिवारि तदानचिरेण ॥

गिरगिट वृक्ष की चोटी पर चढ़ कर आकाश की ओर देखें, गायें सर ऊपर उठा कर सूर्य की ओर देखें तो शीघ्र वषा होगी ।

नेच्छन्ति विनिर्गमं गृहाद्धुन्वन्ति श्रवणान् खुरानपि ।
पशवः पशुबच्च कुक्कुरा यद्यस्मः पततीति निर्दिशेत् ॥

यदि पालतू जानवर घर से बाहर जाने की इच्छा न करें । अपने कान और खुर या पंजे कंपायें तो समझें कि शीघ्र वर्षा होने वाली है । गाय, कुत्ता आदि पालतू पश पहले से अपने अतीतेन्द्रिय ज्ञान से जान लेते हैं कि वर्षा होने वाली है और घर से बाहर जाने पर भीग जायेंगे इसलिए वे बाहर नहीं जाना चाहते ।

यदास्थिता गृहपटलेषु कुक्करा
रुदन्तिवा यदि विततं वियन्मुखाः ।
दिवा तडिद्यदि च पिनाकि दिग भवा
तदाक्षमा भवति समैव वारिणो ।।

यदि कुत्ते घर की छतों पर जाकर आकाश की ओर देखें और भौंकें, यदि ईशान [उत्तर पूर्व] दिशा में बिजली चमक रही हो तो शीघ्र ही काफी वर्षा होगी।

शुक कपोत विलोचनसन्निभो
मधुनिभश्च यदा हिमदीधितिः ।
प्रतिशशी च यदा दिविराजते
पतति वारि तदा न चिरेण च ।।

तोता या कबूतर की आँखों की तरह चन्द्रमा का रंग लालिमा लिए हो जाय या शहद सा रंग हो जाय, प्रति चन्द्र दिखाई दे तो शीघ्र वषा होगी।

स्तनितं निशि विद्युतो दिवा
रुधिर निभा यदि दण्डवत् स्थिताः ।
पवनः पुरतश्च शीतलो
यदि सलिस्य तदाऽऽगमो भवेत् ।।

रात्रि में मेघों का गर्जन हो और दिन में लाल दण्ड के समान बिजली चमके, पूर्व दिशा से ठण्डी हवा बह रही हो तो शीघ्र वर्षा होगी।

वल्लीनां गगन तलोन्मुखाः प्रवालाः
स्नायन्ते यदि जल पांशुभिर्विहंगा ।
सेवन्ते यदि च सरीसृपास्तृणाग्रा-
ण्यासन्नो भवति तदाजलस्य पातः ।।

लताओं के नये पत्ते आकाश की ओर उठ जायँ, पक्षी धूल या जल में स्नान करें, रेंगने वाले कीड़े-मकोड़े घास की नोकों पर जाकर बैठ जायँ तो शीघ्र वर्षा होगी।

मयूरशुकचाष चातक समान वर्णा यदा
जपाकुसुम पंकज द्युतिमुषश्च संध्याघनाः ।
जलोर्मिनगनक्र कच्छप वराहभीरोपमाः
प्रभूत पुट संचया न तु चिरेण यच्छन्त्यपः ।।

सायंकाल बादल मोर, शुक, नीलकण्ठ या चातक पक्षी के रंग के हों या जवाकुसुम या कमल के रंग के हों तथा उनका आकार जल की तरंगों, पर्वत, नाका (सूंस), कछुवा, शूकर या मछली की तरह हो तो शीघ्र वर्षा होगी।

पर्यन्तेषु सुधाशशांकधवला मध्येऽञ्जनालित्विषः ।
स्निग्धानेकापुटाः क्षरज्जलकणाः सोपान विच्छेदिनः ॥
माहेन्द्री प्रभवाः प्रयान्त्यपरतः प्राग्वाम्बु पाशोदभवाः ।
ये ते वारि मुचस्त्यजन्ति न चिरादेम्भः प्रभूतं भुवि ॥

चारों ओर चन्द्रमा के समान श्वेत रंग मध्य में सुर्मई रंग का भौंरे के समान रंग वाले मेघ हों, जल की बूदें टपक रही हों। बादल एक दूसरे से मिल रहे हों। पूर्व से पश्चिम दिशा की ओर जा रहे हों। जब इस प्रकार की मेघों की स्थिति हों तो शीघ्र ही बहुत जल बरसता है।

शक्रचाप परिध 'प्रतिसूर्या रोहितोश्थ तडितः परिवेषः ।
उद्गमास्तमये यदि भानोरादिशेत् प्रचुरमम्बुतदाशु ॥

सूर्योदय या सूर्यास्त के समय इन्द्रधनुष, परिध (सूर्य को काटती हुई मेघ की रेखा), प्रति सूर्य, विद्युत या परिवेष हो तो शीघ्र वर्षा होगी।

यदि तित्तरपत्रनिभं गगनं
मुदिता प्रवदन्ति च पक्षिगणाः ।
उदयास्तमये सवितुर्ध्रुवं निशं
विसृजन्ति घना न चिरेण जलम् ॥

यदि सूर्योदय या सूर्यास्त के समय आकाश में तीतुर पक्षी के पंख की तरह बादल हों, पक्षी प्रसन्नता से चहचहा रहे हों तो शीघ्र वर्षा होगी। यह दृश्य यदि सूर्योदय के समय दिखाई दे तो दिन में किसी समय वर्षा हो जायेगी और सूर्यास्त समय का दृश्य हो तो रात्रि में वर्षा होगी। अर्थात् इस लक्षण से १२ घण्टे के अन्दर वर्षा की सम्भावना होती है।

यद्यमोघ किरणाः सहस्रगो-
रस्तभूधरकरा इवोच्छिताः ।
भूसमं च रसते यदाम्बुद-
स्तन्मद् भवति वृष्टि लक्षणम् ।।

हजारों किरणों वाले सूर्य के अस्तकाल में किरणें ऊपर की ओर फैली हों और भूमि के निकट मेघों का गर्जन हो तो शीघ्र ही बहुत जल बरसने वाला है ऐसा समझें ।

टिप्पणी

उपर्युक्त श्लोकों से स्पष्ट होता है कि प्राचीन विद्वानों ने प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण किया था । प्रकृति के अध्ययन का उनका दायरा बहुत व्यापक था । आकाश, मेघ, वायु, पशु-पक्षियों की चेष्टायें, बालकों की चेष्टायें, कीड़े-मकोड़े, वनस्पति, सूर्योदय-सूर्यास्त के दृश्य शायद ही कोई ऐसा पक्ष हो जिसका प्राचीनों ने गहराई से अध्ययन न किया हो । ये सारे चिन्ह प्रकृति के प्रांगण गावों में ही देखने को मिलते हैं । इसीलिए आज भी ग्रामीण किसान इनमें से बहुतों को देख कर वर्षा का अनुमान कर लेते हैं । ग्रामीण किसानों के लिए वर्षा उनकी जिन्दगी है क्योंकि खेती उनके जीवन का आधार है और कृषि वर्षा पर निर्भर है । शहर में रहने वालों के लिए बरसात गर्मी की तपन को शान्त कर राहत देने का केवल एक साधन है ।

नगर निवासी प्रकृति से बहुत दूर रह कर बनावटी जीवन जीते हैं और वे बहुत सी ऐसी वस्तुओं का उत्पादन करते हैं जो मानव को प्रकृति से दूर ढकेलती जा रही हैं । मानव जीवन और वातावरण में प्रदूषण फैलाने के जिम्मेदार शहर निवासी हैं । हरियाली, खेत, बगीचे, पशु-पक्षी उदय होता सूर्य उन्हें कहाँ देखने को मिलता है । जिनका जीवन निरन्तर शहरों में बीता है उनमें से बहुतों को अन्न और फलों के वे पौधे भी देखने को नहीं मिले होंगे जिनसे उनका जीवन कायम है । अधिकांश ऋतु वैज्ञानिक शहर निवासी हैं, अतः वर्षा के पूर्व वर्णित लक्षणों को देखने का उन्हें अवसर ही नहीं मिलता । उन्हें तो बेरोमीटर, थर्मामीटर और इनसेट द्वारा प्राप्त फोटो पर ही निर्भर रह कर वर्षा

का पूर्वानुमान लगाना है। अगर फोटो में किसी भूखण्ड पर बादल छाये हैं तो उनके निश्चित वाक्य हैं-- "दूर-दूर तक वर्षा होगी या गरज के साथ छींटे पड़ेंगे।" इनका स्तोत्र के श्लोकों की तरह पाठ कर वर्षा की भविष्यवाणी कर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री कर देते हैं।

सम्पूर्ण लक्षणों का अध्ययन तो शहरों में नहीं हो सकता किन्तु कुछ का निरीक्षण हो सकता है- जैसे आकाश का रंग, बादलों का रंग रूप, उदयास्त सूर्य, हवा, पालतू कुत्ते की चेष्टा, उद्यानों में जाकर वनस्पति का निरीक्षण, पक्षियों की चेष्टा इत्यादि। यह ध्यान रखना चाहिए कि पशु-पक्षियों में कोई अतीतेन्द्रिय ज्ञान हैं जिससे वे भूकम्प तक का पूर्वाभास दे देते हैं।

पूर्ववर्णित लक्षणों के विषय में पराशर ने एक विशेष बात कही है, उसे ध्यान में रखना चाहिए—

बलवत्सु महद्वर्षमल्पेष्वल्पाम्बुशीकरम्।
मध्येषु मध्यमम् ब्रूयान्निमित्तेषु निमित्तवत्॥

पूर्व कथित लक्षण यदि बलवान हैं तो अधिक वर्षा, मध्यम है तो मध्यम वर्षा और अल्प हैं तो अल्प वर्षा होगी अर्थात् यदि अधिक निमित्त दिखाई देते हैं तो अधिक वर्षा कम निमित्त हैं तो कम वर्षा के सूचक हैं। जैसे निमित्त हों उसी अनुसार फल कहें।

वर्षा कारक ग्रहयोग

सद्यः वृष्टि लक्षणाध्याय के अन्तिम श्लोकों में ग्रहों की वे स्थितियां और उनके पारस्परिक सम्बन्ध बताये हैं जो कि वर्षा ऋतु में जब-जब बनते हैं वर्षा होती है। यह ज्योतिष का प्रकरण है, निरीक्षण का नहीं। इसमें तात्कालिक ग्रह स्थितियों को देखना है। यदि यह ग्रह स्थिति नहीं है तो यह देखना चाहिए कि आगे ये कब बन रही हैं उस समय में वर्षा को भविष्यवाणी करें।

प्रावृषिशीतकरो भृगुपुत्रात् सप्तमराशि गतः शुभदृष्टः।
सूर्यसुताश्रवपंचमगो वा सप्तमगश्चं जलाऽऽगमनाय॥

वर्षा ऋतु में चन्द्रमा शुक्र से सप्तम राशि में हो और ग्रहों (बुध, गुरु) से दृष्ट हो अथवा सूर्य पुत्र अर्थात् शनि से चन्द्र की स्थिति नवम, पंचम या सप्तम हो तो यह वर्षा कारक योग है।

इसमें दो योग बताए हैं–

१. चन्द्रमा की शुक्र से सप्तम [१८०° पर] स्थिति और चन्द्र पर शुभ ग्रह की दृष्टि ।

२. चन्द्रमा की शनि से पंचम [१२०°] सप्तम [१८०°] या नवम [२४०°] पर स्थिति तथा चन्द्र पर शुभ ग्रह की दृष्टि ।

इन योगों में चन्द्रमा प्रमुख है । यह सबसे तीव्र गति से चलने वाला "शीतकर" जल तत्व का ग्रह है, शुक्र भी जल तत्व का शुभ ग्रह है । जब इन दोनों ग्रहों का प्रतियोग होगा– आमने-सामने होंगे और इनकी रश्मियाँ परस्पर मिलेंगी तो जलीय प्रभाव होगा । शुभ ग्रह की दृष्टि चन्द्र पर होनी चाहिए । नैसर्गिक शुभ ग्रह शुक्र के अतिरिक्त वृहस्पति और बुध हैं इनमें से किसी की या एक की दृष्टि चन्द्र पर हो । बुध की सप्तम दृष्टि होती है । गुरु की सप्तम के अतिरिक्त पंचम, नवम भी होती है । चन्द्रमा एक राशि में सवा दो दिन रहता है इस प्रकार चन्द्रमा के तीव्र गति से संचरण के कारण दृष्टि और प्रतियोग के सम्बन्ध अन्य ग्रहों से बनते रहते हैं ।

योग जिनमें प्रायः वर्षा होती है

प्रायो ग्रहाणांमुदयास्त काले समागमे मण्डल संक्रमेच ।
पक्षक्षये तीक्ष्णकरायनान्ते वृष्टिर्गतेऽर्के नियमेन चार्द्राम् ।।

उपर्युक्त श्लोक में प्रायः शब्द प्रारम्भ में हो लगाया गया है । इसमें ६ योग बताये हैं जिनमें प्रायः वर्षा होती है । उन्हें आगे स्पष्ट कर रहे हैं—

१. ग्रहों का उदयास्त काल–

ग्रह जब संचरण क्रिया में सूर्य के निकट पहुँचता है तो वह अस्त हो जाता है अर्थात् दिखाई नहीं देता । जिन अंशों में पहुँचकर वह अस्त होता है उसे कालांश कहते हैं । फिर एक निश्चित अवधि के उपरान्त जब कालांश से बाहर ग्रह आता है तो वह पुनः आकाश में दिखाई देता है । उसे ग्रह का उदय होना कहते हैं । सूर्य की गति और ग्रह की गति के आधार पर गणना करके अस्त और उदय का दिन मालूम होता है । यह पंचागों में दिया रहता है । जिस दिन ग्रह अस्त

और उदय होता है उस दिन मौसम में प्रायः परिवर्तन होता है। स्थूल मानसे कालांश विभिन्न ग्रहों के इस प्रकार हैं–

ग्रह	कालांश
चन्द्र	१२
मंगल	१७
बुध [मार्गी]	१३
बुध [वक्री]	१२
वृहस्पति	११
शुक्र [मार्गी]	९
शुक्र [वक्री]	८
शनि	१५

२. समागम

समागम का अर्थ है दो ग्रहों का मिलना याने युति। जब चन्द्रमा को किसी जलीय वर्षा कारक ग्रह से युति वर्षा ऋतु में होती है तो उस दिन वर्षा की संभावना होती है। यहाँ ग्रह कौन सा है और जिस राशि में युति हो रही है उसके जलांश का ध्यान रखना चाहिए। प्रभावकारी युति वह होती है जब दो ग्रह एक राशि में ३ अंश २० कला के अन्दर हों अर्थात् दोनों एक ही नवांश में हो। इसे दूसरे शब्दों में नक्षत्र चरण युति कह सकते हैं। पूर्ण युति (CLOSE CONJUNCTION) में दोनों ग्रह समान राशि अंश कला में होते हैं। यह युति सबसे अधिक प्रभावकारी है।

३. मण्डल संक्रमण –

वराहमिहिर ने २७ नक्षत्रों को ६ भागों में वर्गीकृत किया है और प्रत्येक वर्ग को मण्डल नाम दिया है। यह समान विभातन नहीं है। यह कृत्तिकादि या अश्विनी को आदि में लेकर भी नहीं किया है। मण्डलों का प्रारम्भ भरणी नक्षत्र से होता है और मण्डलों में नक्षत्र समान संख्या में नहीं हैं। निम्नांकित तालिका में उन्हें स्पष्ट किया गया है।

नक्षत्र मण्डल

मण्डल	नक्षत्र	संख्या
प्रथम	भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा	४
द्वितीय	आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा	४
तृतीय	मघा, पू. फाल्गुनी, उ. फाल्गुनी, हस्त, चित्रा	५
चतुर्थ	स्वाती, विशाखा, अनुराधा	३
पंचम	ज्येष्ठा, मूल, पू. षाढ़ा, उ. षाढ़ा, श्रवण	५
षष्ठ	धनिष्ठा, शंतभिषा, पू० भाद्रपद, उ० भाद्र-पद, रेवती, अश्विनी ।	६

मण्डल संक्रमण का अर्थ है जब चन्द्रमा किसी मण्डल के प्रथम नक्षत्र में प्रवेश करता है । मण्डल ६ हैं इसलिए ६ संक्रमण भी होंगे । वे इस प्रकार होंगे–

१. मृगशीर्ष से आर्द्रा में प्रवेश ।
२. आश्लेषा से मघा में प्रवेश ।
३. चित्रा से स्वाती में प्रवेश ।
४. अनुराधा से ज्येष्ठा में प्रवेश ।
५. श्रवण से धनिष्ठा में प्रवेश ।
६. अश्विनी से भरणी में प्रवेश ।

निष्कर्ष यह निकला कि वर्षा ऋतु में जिस दिन चन्द्रमा भरणी, आर्द्रा, मघा, स्वाती, ज्येष्ठा, धनिष्ठा में जायेगा उस दिन वर्षा की सम्भावना होगी । इस योग का व्यापक प्रभाव होगा । मेघ गर्भ की गणनानुसार इन ६ नक्षत्रों में जिन क्षेत्रों में वर्षा होनी है वहाँ वर्षा की संभावना अधिक मजबूत होगी ।

पक्षक्षय

पक्षक्षय का अर्थ है पक्ष की समाप्ति । अमावस्या को कृष्ण पक्ष और पूर्णिमा को शुक्ल पक्ष समाप्त होता है । अमावस्या को सूर्य चन्द्र की पूर्ण अंशात्मक युति होती है और पूर्णिमा को सूर्य चन्द्र का प्रतियोग होता है– दोनों एक दूसरे से १८० अंश पर होते हैं । पृथ्वी पर चन्द्रमा के चुम्बकीय प्रभाव की दृष्टि से पूर्णिमा और अमावस्या बहुत महत्वपूर्ण हैं । चन्द्रमा जल तत्व प्रधान ग्रह है, पृथ्वी के जलांश पर इसका प्रभाव है । यह प्रभाव ज्वार-भाटा से सिद्ध होता है । वर्षा भी जलीय क्रिया है, अतः इन दो तिथियों में वर्षा की संभावना सही सिद्ध होती है ।

सूर्य का अयनान्त

सायन मान से सूर्य मकर राशि में प्रवेश से मिथुनान्त तक उत्तर अयन में रहता है, और कर्क प्रवेश से धनु के अन्त तक दक्षिण अयन में भ्रमण करता है । अंग्रेजी कलेन्डर से २१ जून को दक्षिण अयन में और २२ दिसम्बर को उत्तर अयन में जाता है । अतः २१ जून और २२ दिसम्बर को यदि कोई प्रतिकूल योग न हुआ तो वर्षा की संभावना रहती है । ये वर्षा के लिए संवेदनशील तारीखें हैं ।

सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश

श्लोक के अन्त में "गते अर्के नियमेन चार्द्राम्" कहा है । इसका अर्थ है सूर्य के आर्द्रानक्षत्र में प्रवेश के साथ नियमित वर्षाऋतु प्रारम्भ हो जाती है । सूर्य का आर्द्रानक्षत्र में प्रवेश २१-२२ जून को होता है । २१ जून अयनान्त की तारीख भी हैं । अतः कुछ अपवादों को छोड़ कर जब कि वर्षा अवरोधक प्रबल योग होते हैं, प्रायः २१-२२ जून को वर्षा होती है क्योंकि अयनान्त और सूर्य का आर्द्रा प्रवेश वर्षा कारक दो योग एक साथ पड़ते हैं ।

ग्रह समागम प्रभाव

समागमे पतित जलं ज्ञशुक्रयोर्ज्ञ जीवयोर्गुरु सितयोगश्च संगमे ।
यमारयोः पवनहुताशजं भयं ह्यदृष्टयोरस हितयोश्च सद्ग्रहैः ॥

१. बुध शुक्र, बुध-वृहस्पति, शुक्र वृहस्पति की युति से जल बरसता है ।

२. शनि-मंगल के योग से वायु, आँधी का जोर रहता है, अग्निकाण्ड से नुकसान होता है।

३. आँधी तूफान और अग्नि का जोर उस समय नहीं होता जब शनि मंगल युति पर गुरु या शुक्र की दृष्टि हो।

इस श्लोक में 'समागम' जो पूर्व श्लोक में बताया है उसे स्पष्ट किया है कि किन ग्रहों के सम्बन्ध से क्या प्रभाव होते हैं।

टिप्पणी

बुध, गुरु, शुक्र की जो वर्षा कारक युति बताई है यदि उनमें मंगल या शनि की दृष्टि या युति हो जाय तो वर्षा का योग कमजोर हो जाता है। शुभ ग्रहों की युति यदि पूर्ण जलांश राशि कर्क, मकर, मीन में हो या अर्द्ध जलांश राशि वृष, धनु, कुंभ में हो तो वर्षा की अच्छी संभावना रहती है। मिथुन, सिंह, कन्या निर्जल राशि में योग कमजोर हो जाता है। शनि वायु तत्व का ठण्डा ग्रह है और मंगल अग्नि तत्व का ग्रह है इसलिए इनके योग से आँधी तूफान पैदा होना स्वाभाविक है।

अस्तग्रह

अग्रतः पृष्ठतोवापि ग्रहाः सूर्यावलम्बितः।
यदा तदा प्रकुर्वन्ति महीमेकार्णवामिव॥

सूर्य अवलम्बित आगे या पीछे जो ग्रह हैं अर्थात् जो अस्त होने वाले हैं, वे जब अस्त होते हैं तब पृथ्वी को जलमय कर देते हैं।

टिप्पणी

जिन ग्रहों की गति सूर्य की गति से कम है, जैसे मंगल, गुरु, शनि वे जब एक ही राशि में सूर्य से आगे होते हैं तब सूर्य की गति उनकी अपेक्षा अधिक होने से सूर्य आगे बढ़ता है और कालांश में आने पर वे ग्रह अस्त हो जाते हैं। जिन ग्रहों की गति सूर्य से अधिक है, जैसे बुध, शुक्र, चन्द्र वे आगे बढ कर सूर्य के निकट कालांश में आते हैं तब अस्त होते हैं। श्लोक की प्रथम पंक्ति का यह भावार्थ है। इस प्रकार ग्रहों के अस्त होने पर भारी वर्षा की संभावना होती है यह आशय है। इस योग का पूर्व में वर्णन किया जा चुका है। वर्षा ऋतु में यह योग प्रभावी होता है।

अध्याय ७

घाघ भड्डरी की वर्षा सम्बन्धी कहावतें

भारत में परम्परा से गाँव-गाँव में ज्योतिषी रहे हैं और आज भी हैं जो गाँववालों की दैनन्दिन जीवन की समस्याओं के समाधान के साथ ही खेती के सम्बन्ध में भी दिशा निर्देशन करते हैं। वे खेती का आधार वर्षा के विषय में किसानों को सचेत करते हैं, किस नक्षत्र में कौन सा अन्न बोना चाहिए उसका मुहूर्त बताते हैं। ऐसे ही ज्योतिषी घाघ भड्डरी नाम के हुए हैं जिन्होंने गाँव की भाषा में मौसम और खेती सम्बन्धी कहावतों की रचना कर ज्योतिष के अनुभूत सिद्धान्तों को सरल कविता में करके ग्राम वासियों के लिए एक महान् कार्य किया है। वे कहाँ के निवासी थे और किस काल में हुए यह इतिहासकारों के शोध का विषय है। इनकी कहावतों की भाषा ग्रामीण अवधी है जो बैसवारा और कानपुर जिला के कुछ भागों में बोली जाती है।

वर्षा सम्बन्धी इनकी जो कहावतें गाँव वालों में प्रचलित हैं उनसे यह साफ जाहिर होता है कि इन्हें ज्योतिष का गहरा ज्ञान था क्योंकि वर्षा के विषय में जो बातें इन्होंने किसानों को बताई हैं वे अधिकांश वृहत्संहिता से ली गई हैं। मौसम विज्ञान तो उन्नीसवीं शताब्दी के सातवें दशक में भारत में आया और भारत कृषि प्रधान देश शुरू से है। मौसम विज्ञान यहाँ हजारों वर्ष पूर्व विकसित हो चुका था। वर्षा विज्ञान भारत की एक अनिवार्यता रही है। आज भी है। इसी अनिवार्यता को देखते हुए घाघ भड्डरी ने कहावतों की रचना की है।

लेखक का जन्म से ही गाँव से सम्बन्ध रहा है इस कारण घाघ भड्डरी की कहावतों की सत्यता को जाँचने परखने का अवसर मिला है। हम पूर्ण विश्वास से कह सकते हैं कि मौसम विभाग की भविष्यवाणियों से ये अधिक प्रामाणिक हैं। १९८७ की मानसून वर्षा के लिए

जब मौसम विभाग का अनुमान बार-बार गलत हो रहा था तब आर्द्रा नक्षत्र (२२ जून से ६ जुलाई) वर्षा न होने पर किसानों को निश्चय हो गया था कि सूखा पड़ेगा। गाँवों के ज्योतिषियों ने बता दिया था कि मंगल जब तक सूर्य के आगे है पानी नहीं बरसेगा क्योंकि घाघ ने कहा है– 'मंगल रथ आगे चलै पाछे चलै जो सूर। मन्द वृष्टि तब जानिये परिहै सकलै झूर॥" घाघ ने यह भी कहा है कि– "आदि न बरसै आदरा हस्त न बरस निदान। कहै घाघ सुन भड्डरी भये किसान पिसान॥" वैसा ही हुआ किसानों का सूखा की चक्की में पिस कर आटा बन गया।

किसानों को ये कहावतें परम्परा से याद हैं और अनुभव में खरी उतरने के कारण किसानों को इन पर पूरा विश्वास है। सभी कहावतें किसी ग्रामीण को नहीं याद हैं। अतः इनका संकलन जनश्रुति एवं यदा कदा प्रकाशित सामग्री से किया है। ज्योतिष में वर्षा की भविष्यवाणी के दो आधार लिए गए हैं– एक है– प्रकृति निरीक्षण जिसमें वायु की दिशा, मेघ, बिजली, पशु-पक्षियों, कीड़े-मकोड़ों की चेष्टायें और दूसरा है– ग्रह नक्षत्रों से बनने वाले योग। हमने संकलित कहावतों को वायु मेघ शीत ऋतु के बादलों से आगामी मानसून में वर्षा की स्थिति (६ महीने आगे की भविष्यवाणी) नक्षत्र और वर्षा, शीघ्र वर्षा के लक्षण, वर्षा समाप्ति के लक्षण इस प्रकार कहावतों का वर्गीकरण किया है जिससे पाठकों को विषय समझने में सरलता हो और पाठक इस पुस्तक के पूर्व अध्यायों में वर्णित शास्त्रोक्त नियमों से कहावतों का तुलनात्मक अध्ययन कर सकें। कहावतें देहाती भाषा में हैं इसलिए इनकी अवहेलना करना उचित नहीं है। ज्ञान किसी भी भाषा में हो यदि वह अनुभव की कसौटी पर खरा उतरता है तो उससे लाभ उठाना चाहिए। कहावतें ठेठ ग्रामीण भाषा में हैं– जिन्हें समझने में शिक्षित पाठकों को कठिनाई न हो इसलिए उनको बोलचाल की हिन्दी में स्पष्ट कर दिया है।

वायु

बादल वायु के सहारे गमन करते हैं। मानसून के समय किस दिशा से वायु चले तो वर्षा होगी और किस दिशा से चले तो वर्षा नहीं होगी इसे कहावतों में बताया गया है। साथ ही शीत ऋतु की वायु के रुख के आधार पर ६ महीने आगे आने वाली वर्षा ऋतु कैसी रहेगी यह भी आगे की कहावतों में बताया है।

पहिला पवन पुरुब से आवै।
बरसै मेघ अन्न झरि लावै॥

वर्षा ऋतु के प्रारम्भ में यदि वायु पूर्व दिशा की ओर से चले तो बादल बरसते हैं और अन्न की अच्छी उपज होती है।

माघ पूस जो दखिना चले।
तो सावन के लच्छन भले॥

माघ और पौष के महीने में यदि दक्षिण की ओर से हवा चले तो सावन के महीने में अच्छी वर्षा के लक्षण हैं। माघ महीने की हवा का रुख देख कर छः महीने आगे की वर्षा का ज्ञान हो जाता है।

वायु चलेगी उत्तरा। माड़ पियेंगे कुत्तरा॥

यदि वर्षा के मौसम में उत्तर दिशा की ओर से हवा चलती है तो कुत्ते माड़ पियेंगे। अर्थात् धान इतना पैदा होगा कि मनुष्य क्या कुत्तों तक को चावल का माड़ खाने को मिलेगा। धान अधिक वर्षा माँगता है और उत्तर की ओर से वायु चलने पर काफी वर्षा होगी।

वायु चलेगी पुरवा। पियो माड़ का कुरवा॥

यदि वर्षा ऋतु के प्रारम्भ में पुरवा हवा चले तो बरसात अच्छी होगी।

आंबा झोर चले पुरवाई। तब जानो बरखा ऋतु आई॥

यदि निरंतर पूर्व की ओर से हवा चले तो समझना चाहिए कि वर्षा आ गई है।

दक्खिनी कुलक्खिनी। माघ पूस सुलक्खिनी॥

वर्षा ऋतु में अन्न की पैदावार की दृष्टि से दक्षिण की ओर से चलने वाली वायु अशुभ है अर्थात् दक्षिणी वायु वर्षा ऋतु में पानी के

अभाव की सूचक है, किन्तु यही दक्षिणी हवा यदि पूस माह के महीने में चले तो वर्षा के लिए शुभ है।

औवा बौआ बहै बतास।
तब होवै बरखा कै आस॥

वर्षा ऋतु में कभी इधर से कभी उधर से अदल बदल कर हवा चले तो समझना चाहिए कि वर्षा शीघ्र होगी।

खन पुरवैया खन पछियाव।
खन खन बहै बबूरा बाय॥
जो बादर बादर में जाय।
घाघ कहै जल कहाँ समाय॥

घाघ कहते हैं कि थोड़ी-थोड़ी देर में अदल बदल कर पूर्वी और पश्चिमी हवा चले और जब बादल बादल से मिलें, बवंडर चले तो भारी वर्षा होगी।

जब बहे हड़हवा कोन।
तब बनजारा लादे लोन।

जब दक्षिण पश्चिम के कोने से हवा चले तो सबझो कि वर्षा नहीं होगी और बनजारा (व्यापारी) नमक लादेगा। नमक पानी में गलने वाला पदार्थ है इसलिए सूखे मौसम में ही इसे लादा जा सकता है।

चैत का पछुवा भादौं जला।
भादौं पछुवा माघ का पला।

यदि चैत्र के महीने में पश्चिम की ओर से हवा चले तो समझना चाहिए कि भादौं के महीने में अच्छी वर्षा होगी। यदि भादौं के महीने में पश्चिमी वायु चले तो माघ के महीने में पाला गिरेगा। यहाँ भादों की हवा से छः महीने आगे जाड़े की ऋतु में पाला गिरने का संकेत किया है।

सावन मास बहै पुरवाई।
बरधा बेघि बेसाहो गाई।

यदि सावन के महीने में पूर्व दिशा से हवा चले तो किसान को

बैल बेंच कर गाय खरीद लेना चाहिए क्योंकि यह अवर्षण का लक्षण है। गाय खरीद लेने से किसान कम से कम अपना गुजारा कर लेगा। श्रावण मास में पुरवा हवा वर्षा रोकती है। पछुवा हवा जल बरसाती है।

सावन का पछुवा दिन दुइचार।
चूल्हे के पीछै उपजै सार।

यदि सावन के महीने में दो चार दिन भी पश्चिम दिशा से हवा चल जाये तो घर के चूल्हे के पीछे तक खेती हो सकती है अर्थात् इतनी अच्छी वर्षा होगी कि पृथ्वी तृप्त हो जायेगी।

पछुवा का बादर, लबार का आदर।

पश्चिम से उठे हुए बादल का भरोसा नहीं कि बरसेगा। जैसे झूठे आदमी का विश्वास नहीं कि वह बात का पक्का होगा।

बयार चले ईसाना। ऊंची खेती करे किसाना।

यदि हवा ईशान दिशा से चले तो ऊँचाई की भूमि पर भी किसान खेती कर ले। क्योंकि भारी वर्षा की आशा है। ईशान उत्तर पूर्व दिशा है।

वायु चले दखिना।
माड़ कहाँ से चखिना।

वर्षा ऋतु के आरम्भ में यदि दक्षिण दिशा से वायु चल रही है तो माड़ कहाँ से चखने को मिलेगा। अर्थात् धान की फसल पानी न बरसने से नष्ट हो जाएगी चावल पैदा नहीं होगा तो माड़ भी चखने को नहीं मिलेगा।

जेदिन भादों बहे पछार।
तेदिन पूस म पड़ै तुसार।

भादों के महीने में जितने दिन पश्चिम की हवा चलेगी पूस (पौष मास) में उतने ही दिन पाला पड़ेगा। ६ मास आगे शीतऋतु की भविष्यवाणी।

फागुन मास बहै पुरबाई।
तब गेहूँ मा गेरुआ आई।

यदि फाल्गुन मास में पूर्वी हवा चले तो गेहूँ की खड़ी फसल में गेरुआ रोग लग जाता है।

जो पुरवा पुरवाई पावै।
झूरी नदिया नाव चलावै।

यदि पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में सूर्य के भ्रमण काल में पूर्वा हवा चले तो सूखी नदिया भर जाती है और उसमें नाव चलने लगती है। सूर्य का पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में प्रवेश अगस्त मास के अन्त में होता है।

सावन पछुआ भादौं पुरवा आसिन बहै इसान।
कातिक कता सींक न डोलै, गाजें सबै किसान।

श्रावण मास में पश्चिमी हवा, भादौं में पुरवाई और क्वार (अश्विन) मास में ईसान (उत्तर पूर्व) से हवा चले तो किसान आनन्दित होता है अर्थात् अच्छी वर्षा और खेती होती है।

सब दिन बरसै दखिना बाय।
कभी न बरसे बरखा पाय।

और मौसमों में दक्षिण की वायु से वर्षा हो सकती है किन्तु वर्षा ऋतु में इस वायु से कभी पानी नहीं बरसता। और ऋतु का मतलब शीत ऋतु से है।

मेघ

इन कहावतों में बादलों का रूप रंग किस दिशा से मेघ उठने पर कैसी वर्षा होगी। किस मास पक्ष तिथि का बादल क्या सूचित करता है यह बताया गया है।

बादलों के रूप रंग समय से वर्षा के भविष्य का पता चलता है। इसका बहुत सूक्ष्म अध्ययन ज्योतिष में है। घाघ की भाषा में इसे समझिये।

रात निबद्दर दिन को छाया।
कहैं घाघ अब बरखा गया।

जब रात में आकाश स्वच्छ हो और दिन में बादल रहें तो घाघ कहते हैं कि अब वर्षा गयी।

पुरब का बादर पश्चिम जाय ।
पतरी पकावै मोटी खाय ।
पछुआ बादर पुरब को जाय ।
मोटी पकावे पतरी खाय ।

यदि पूर्व से उठा बादल पश्चिम को जाय रहा हो तो समझो वर्षा होने वाली है, यदि पश्चिम से उठा बादल पूर्व को जा रहा हो तो समझो कि वर्षा नहीं होगी यह नियम वरसात के मौसम के लिए हैं–

माघ म बादर लाली धरै ।
तब सच जानौ पथरा परै ।

माघ के महीने में बादल उठे और लाल हो जाय तो निश्चत है कि ओले गिरेंगे ।

करिया बादर जिउ डरवावे ।
घबरे बादर पानी आवे ।

काले रंग के बादर मन में भय पैदा करते हैं । पानी तो भूरे बादलों से बरसता है ।

आषाढ़ी पूनो दिना बादर भीनो चन्द ।
सो भड्डर जोसी कहै सकल नरा आनन्द ।

आषाढ़ की पूर्णिमा को यदि चन्द्रमा बादलों से ढका हो तो भड्डर ज्योतिषी कहते हैं कि वर्षा से चारो ओर आनन्द ही आनन्द होगा । आषाढ़ी पूर्णिमा को आकाश में मेघों का होना अच्छी वर्षा का सूचक है ।

उलटा बादर जो चढ़ै, विधवा खड़ी नहाय ।
घाघ कहैं सुन भड्डरी वह बरसै बह जाय ।

घाघ कहते हैं हे भड्डरी ! यदि बादल हवा के विपरीत चढ़ें और विधवा खड़ी होकर बेपर्दगी से नहाय तो यह निश्चित है कि बादल बरसेंगे और विधवा किसी के साथ भाग जाएगी ।

तीतुर पंखी बादरा विधवा काजर देय ।
ये वरसें वो घर करें यामें नहिं सन्देह ।

यदि आकाश में तीतर के पंख के समान गोल धब्बेदार बादल हों

और विधवा काजल आंखों में लगा कर शृंगार करे तो इस प्रकार के बादल बरसेंगे और शृंगार करने वाली विधवा दूसरा पति करेगी। इसमें कोई संदेह नहीं है।

शीत ऋतु के बादलों से वर्षाऋतु की भविष्यवाणी

जाड़े के ऋतु में बहुधा बादल आते हैं और महावट (जाड़े की वर्षा) होती है। ये बादल कभी थोड़ी बहुत वर्षा करते हैं, कभी केवल बादल उठकर ही रह जाते हैं वर्षा नहीं करते। वृहत् संहिता के गर्भ-धारणाध्याय में इन मेघों के आधार पर पूरी वर्षा ऋतु की वर्षा की भविष्यवाणी मास पक्ष सहित करने की विधि विस्तार से दी है। बादलों के इस निरीक्षण से ६-७ महीने आगे की बरसात कैसी होगी इसकी जानकारी होती है। इसे ही कवि ने लोक भाषा में बताया है।

कार्तिक सुदि एकादशी बादल बिजली होय।
तो आषाढ़ में भड्डरी वर्षा चोखी होय।

कार्तिक शुक्ल एकादशी को यदि बादल उठें और बिजली चमके तो भड्डरी कहते हैं कि आषाढ़ के महीने में अच्छी वर्षा होगी।

अगहन द्वादश मेघ अखाड़।
अषाढ़ बरसे अछनाधार।

अगहन महीने की द्वादशी में यदि आकाश में मेघों का अखाड़ा लगे याने जमघट हो तो आषाढ़ के महीने में घनघोर वर्षा होगी।

यहां अगहन मास की तिथि बताई है पक्ष नहीं बताया है। इसे मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष समझें क्योंकि वराह ने मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष में जब चन्द्रमा पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में हो वहां से गर्व निरीक्षण अर्थात बादल आकाश में कब उठते हैं इसे देखने का निर्देश किया है। मार्गशीर्ष शुक्ल द्वितीया, तृतीया या चतुर्थी तिथि को चन्द्रमा पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में आता हैं। अंग्रेजी तारीख से यह नवम्बर का उत्तरार्ध या दिसम्बर का पूर्वार्ध होता है।

पूस मास दशमी अधियारी।
बदली घोर होय अधिकारी।
सावन बदि दशमी के दिवसे।
भरे मेघ चारो दिसि बरसे।

पौष मास के कृष्ण पक्ष की दशमी को यदि घने बादल आकाश में छा जायें तो श्रावण कृष्ण पक्ष की दशमी को व्यापक क्षेत्र में अच्छी वर्षा होगी।

पूस उजेली सत्तमी अष्टमी नौमी गाज।
सेघ होय तौ जान लो अब शुभ होवैं काज।

यदि पौष शुक्ल सप्तमी, अष्टमी, नवमी को बादल गरजें तो जान लो कि वर्षा ऋतु अच्छी होगी।

पूस अंधेरी सप्तमी जो पानी नहिं देइ।
तौं आर्द्रा बरसै सही जल थल एक करेइ।

यदि पौष कृष्ण पक्ष की सप्तमी को आकाश साफ रहै, पानी न बरसे तो मह निश्चित है आर्द्रा नक्षत्र के सूर्य में इतना जल बरसेगा कि जल थल एक हो जायेगा। आर्द्रा नक्षत्र से वर्षा का आरम्भ होता है सूर्य इस नक्षत्र में २१–२२ जून को प्रवेश करता है।

पूस मास दशमी दिवस बादल चमकै बीज।
तौ बरस भरवाइवां साधो खेलो तोज।

पौष मास की दशमी को यदि बादल आयें, बिजली चकके तो पूरे भादो अच्छी वर्षा होगी। तब हे सज्जनों आनन्द से तीज का त्योहार मनाना।

यहां पौष मास की दशमी कही है, पक्ष नहीं बताया है। वृहत्सहिता के गर्भधारणाध्यार में बादलों के दर्शन से १९५ दिन के उपरान्त वर्षा बताई है, अतः इसे पौष शुक्ल दशमी समझें।

मार्ग बदी आठै घन दरसै।
तो मग्घा भरि सावन बरसै।

यदि मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष की अष्टमी को बादल दिखाई दें तो सावन के महीने में वर्षा होगी।

माघ अंधेरी सत्तमी मेह बिज्जु दमकन्त।
मास चारि बरसै सही मत सोचै तू कन्त।

यदि माघ कृष्ण सप्तमी को मेघ आयें बिजली चमके तो हे प्रियतम तुम चिन्ता न करना। वर्षा के आषाढ़, श्रावण, भादों, क्वार चारो महीने वर्षा होगी।

माघ अमावस गर्भमय जो केहु भांति विचारि ।
भादों की पूनी दिवस वर्षा प्रहर जु चारि ।

जब माघ की अमावस्या को बादल का गर्भ हो अर्थात् आकाश में मेघ आये तो भाद्रपद की पूर्णिमा को चार प्रहर तक वर्षा होगी ।

शीग ऋतु के बादलों से मेघ गर्भ का विचार किया जाता है ।

माघ सत्तमी उजली बादल मेघ करन्त ।
तौ अषाढ़ में भड्डरी वनी मेघ बरसन्त ।

माघ शुक्ल सप्तमी को बादल आयें और पानी बरसे तो भड्डरी कहते हैं कि आषाढ़ में गनी वर्षा होगी ।

बैसाख सुदी प्रथमै दिवस बादर बिजुरी होय ।
दामा बिना वेसाहिये पूरा साख भरेइ ।

वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को यदि बादल बिजली हो तो वर्षा ऋतु में इतनी अच्छी वर्षा और फसल होगी कि बिना दाम अन्न मिल जायगा । बिना दाम अन्न किसी युग में नहीं मिला, आशय यह हैं कि अच्छी फसल होने से अनाज सस्ता होगा । आज कल यह भी नहीं होता है ।

नक्षत्र और वर्षा

भारतीय ज्योतिष मूलतः नाक्षत्रिक है । और चन्द्रमा का नाक्षत्रिक संचरण वर्षा पर मुख्य रूप से प्रभावकारी होता है । कवि ने इस विषम पर प्रकाश डाला है ।

आदि न बरसे आदरा हस्त न बरस निदान ।
कहै घाघ सुन भड्डरी भये किसान पिसान ।

यदि वर्षा के आरम्भ में आर्द्रा नक्षत्र में वर्षा न हो और अन्त में हस्त नक्षत्र के सूर्य में भी वर्षा न हो तो किसान की हालत दयनीय हो हो जाती है । पिसान का अर्थ है आंटा । किसान आंटे की तरह पिस जाता है से आशय है कि फसल खराब हो जाने से पिस जाता है ।

टिप्पणी–

सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में अषाढ़ मास या यदा कदा ज्येष्ठ के अन्तिम दिनों (२१–२२ जून) में प्रवेश कर १३-१४ दिन इस नक्षत्र में रहता

है। हस्त नक्षत्र में सितम्बर के अन्त में (२६-२७) को प्रवेश करता है। प्रारम्भ अषाढ़ और अन्त भाद्रपद मास में वर्षा होनी चाहिये। सामान्य रूप से ऐसा होता है यदि यह न हुआ तो कृषि के नष्ट हो जाने की संभावना होती है।

आर्द्रा चौथ मघा पंचक।

आर्द्रा नक्षत्र में यदि वर्षा हो गई तो आर्द्रा, पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा ये चारो नक्षत्रों में वर्षा होगी और मघा नक्षत्र बरस जाये तो मघा, पूर्वाफाल्गुनो, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त और चित्रा इन पांच नक्षत्रों में भी वर्षा होगी।

मघा नक्षत्र में १६-१७ अगस्त के आस पास सूर्य आता है। एक नक्षत्र में सूर्य १४ दिन रहता है।

पुष्य पुनर्वसु भरे न गाढ़।
फिर बरसेगा लौटि असाढ़।

यदि सूर्य के पुष्य और पुनर्वसु नक्षत्र के भ्रमण काल में वर्षा न हुई तो फिर लौट के जब आषाढ़ आयेगा तभी वर्षा होगी। अर्थात् शेष वर्षा ऋतु सूखी जायेगी।

पुनर्वसु नक्षत्र में ६ जुलाई के आस पास और पुष्य में २० जुलाई के लगभग सूर्य प्रवेश कर प्रत्येक में १४ दिन रहता है। वर्ष १९८७ में ऐसी ही स्थिति हुई कि आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य में वर्षा नहीं हुई, सूखा पड़ गया।

तपै मिरगसिरा जोय, बरखा पूरन होय।

मृगशिरा नक्षत्र में सूर्य के भ्रमण काल में यदि खूब गर्मी पड़े, सूर्य तपे तो पूरी वर्षा होती है। ७-८ जून के आस पास सूर्य मृगशिरा नक्षत्र में आता है और २१-२२ जून तक रहता है।

जो बरखा चित्रा में होय।
सारी खेती जावै खोय।

यदि चित्रा के सूर्य (अक्टूबर १० से २४ तक) के मध्य वर्षा हो जाये तो सारी खेती नष्ट होती है।

सामान्यतः इस मध्य वर्षा समाप्त हो जाती है। फसल लगभग

तैयार हो जाती है। अतः फसल के लिये यह वर्षा हानिकारक होती है। यह आश्विन का महीना होता है।

जो कहुं मघा बरसे जल।
सब नाजों में होगा फल।

अगर मघा नक्षत्र (१७ अगस्त से ३० तक) भाद्रपद मास में वर्षा हो जाये तो सभी अनाज (खरीफ के मकाई, जोडी, बाजरा, धान आदि अच्छे पैदा होते हैं।

मघा के बरसे, माता के परसे।

मघा के बरसने से धरती तृप्त होती है और माता के भोजन परस कर खिलाने से पुत्र की तृप्ति होती है।

मघा नक्षत्र सामान्यतः अवश्य बरसात है। वर्ष १९८७ में आर्द्रा से अश्लेषा तक वर्षा नहीं हुई। मघा के अन्तिम २ दिन वर्षा हुई, फलतः सूखा पड़ गया। फसल नष्ट हो चुकी तब वर्षा हुई।

एक पानी जो बरसे स्वाती।
कुरमिन पहिन सोने की पाती।

स्वाती नक्षत्र में सूर्य २३ अक्टूबर के आस पास आता है। इस समय रबी की बोआई का समय होता है। यदि इसमें एक पानी बरस जाये तो धरती गीली जाती है और गेहूं, जौ, चना, अरहर की उपज बहुत अच्छी होती है। स्वाती नक्षत्र बहुत कम बरसता है जिस वर्ष बरस जाता है उस साल रबी की फसल बहुत अच्छी होती है यह सभी किसानों का अनुभव है। कवि का कहना यही है कि अगर स्वाती बरस जाय तो किसान की पत्नी सोने के गहने बनवाती है।

चित्रा बरसे तीन जाय मोती माष उखार।

चित्रा नक्षत्र की वर्षा से मोथी, उरद और गन्ने की फसल की हानि होती है। १० से २३ अक्टूबर तक।

चटका मघा पटगिगा ऊसर।
दूध भात मा परिगा मूसर।

मघा अगर चटक गया अर्थात् वर्षा इस नक्षत्र में न हुई तो दूध भात में मूसर (व्याधा) पड़ गई। आशय यह है कि धान की फसल नष्ट हो गई।

असली गलिया अन्न विनासै।
गली रेवती जल को नासै।
भरनी नासै तृनी सहूतो।
कृतिका बरसै अन्न बहूतो।

यदि अश्विनी नक्षत्र (१४ अप्रैल से २७ तक) पानी बरसता है तो अन्न का विनाश होगा। भरणी नक्षत्र (अप्रैल २७ से ११ मई) बरसे तो घास तक वर्षा में नहीं होगी। यदि कृत्तिका में पानी गिर जाय तो खूब अन्न होता हैं।

चैत्र के अन्त या बैशाख के प्रारम्भ में रबी की फसल पक कर तैयार होती है। कटनी मड़नी होती है। इस समय की वर्षा पकी फसल को भिगो देगी अन्न का विनाश होगा। इस समय यदि बादल बूंदी होती है तो गर्भ नक्षत्र के अनुसार क्वांर में भी वर्षा होगी। क्वांर में खरीफ की फसल पकती है अतः वह भी भीग कर नष्ट हो जायेगी। इस प्रकार दोनों फसलों के अन्न का विनाश होगा।

वर्षा सम्बन्धी अन्य लक्षण

जो बातें सूक्ष्म से सूक्ष्म वैज्ञानिक यन्त्र नहीं बता पाते वह पशु पक्षियों की चेष्टाओं से, वनस्पति की स्थिति से मालूम हो जाती है। पशु पक्षियों का अतीतेन्द्रिय ज्ञान धोखा नहीं देता, पौधे गलत सूचनायें नहीं देते क्योंकि वे विशाल प्रकृति के अभिन्न अंग हैं। आवश्यकता है प्रकृति के निरीक्षण की जो कि गांव के किसान प्रकृति के निकट रहकर स्वाभाविक रूप से करते हैं, वातानुकूलित कमरे में बैठकर प्रकृति के रहस्यों को नहीं जाना जा सकता।

वृहत्संहिता में "सद्यः वृष्टि लक्षणम्" का एक पूरा अध्याय है जिससे यह जाना जाता है कि शीघ्र ही वर्षा होने वाली है। घाघ भड्डारी ने भी ऐसे कुछ लक्षण बतायें हैं जिनका किसानों को ज्ञान है।

उल्टे गिरगिट ऊचे चढ़े।
बरखा होइ भुंइ जल बढ़े।

यदि गिरगिट उलटा होकर वृक्ष पर चढ़े तो शीघ्र वर्षा होगी और पृथ्वी जल से भर जायेगी।

ढेले ऊपर चील्ह जो बोलै ।
गली गली में पानी डोलै ।

यदि वर्षा ऋतु में चील पक्षी खेत में मिट्टी के ढेले पर बैठकर बोल रहा हो तो शीघ्र वर्षा होगी, गलियों में पानी भर जायगा ।

दूर गुड़ासा दूरै पानी ।
नियर गुड़ासा नियरै पानी ।

गुड़ासा नाम का झींगुर किस्म का एक कीड़ा होता है वह जब ऊंचाई पर बैठकर के बोले तो समझो अभी वर्षा दूर है, अगर निचाई पर बोले तो जानो वर्षा निकट है ।

ढोकी बोलै जाय अकास ।
अब नाहीं बरखा की आस ।

ढोकी पक्षी बोलता हुआ आकाश की ओर उड़े तो समझो कि अब वर्षा नहीं होगी । यह पक्षी ऐसी चेष्टा प्रायः क्वांर के महीने में वर्षा की समाप्ति पर करता है ।

बोली गोह फुली बन कांस ।
अब नाहीं बरखा की आस ।

जब गोह बोलने लगे और बन में कांस में फूल निकल आयें तो वर्षा समाप्त समझनी चाहिये ।

टिप्पणी—

गोह एक सरीसृप (REPTILE) जाति का नेवले से मिलता जुलता जीव है इसे पुराने जमाने में पालते थे । इसके पंजो की पकड़ और कमर इतनी मजबूत होती है कि कदंब के एक सिरे में इसे बांधकर ऊंची दीवार पर फेंक देते थे यह जमीन इतनी मजबूती से पकड़ लेता था कि कदम्ब (रस्सी के सहारे आदमी दीवार पर चढ़ जाता था ।

कांस आ कांसा एक प्रकार की जंगली लंबी घास है जिसमें लम्बे रुई से फूल होते हैं ।

उये अगस्त औ फूलै कांस ।
अब छांड़ौ गरखा की आस ।

अगस्त तारा उदय हो गया हो और कांस फूल गये हों तो अब वर्षा की आशा छोड़ दो।

टिप्पणी—

अगस्त उदय के लिये वृहत्सहिता में लिखा हैं कि जब सूर्य सिंह राशि का २३ अंश होता है तब उज्जयिनी में अगस्त (CANOPUS) उदय होता है। अक्षांशों के अन्तर से अगस्तोदय के समय में भिन्नता होती है इसलिये वाराहमिर ने इसकी गणना करके अन्य अक्षांशों में उदय काल निकालने का निर्देश किया है। वराहमिहिर ने स्वलिखित पंच सिद्धान्तिका में इसकी गणना विधि दी है। अंग्रेजी तारीख में यह १० सितंबर के आस पास कर्क रेखा पर दक्षिण दिशा में उदय होता है। अगस्तोदय वर्षा की समाप्ति का सूचक है। गोस्वामी जी ने रामायण में लिखा है।

उदित अगस्त पंथ जल सोखा।
जिमि लोभहि सौखइ संतोखा।

अर्थात अगस्तोदय से वर्षा का जल जो मार्ग में था वह सूखने लगता है।

सावन शुक्ला सत्तमी उगत न दीखै भान।
तब लग देव बरसि है जब लग देव उठान।

यदि श्रावण शुक्ल पक्ष की सप्तमी को उदय होता सूर्य बादलों से ढका होने के कारण दिखाई न दे तो देव प्रबोधनी एकादशी तक जल बरसता है। देवोत्थानी या देवप्रबोधनी एकादशी कार्तिक शुक्ल पक्ष में होती है। आशय यह है कि श्रावण भाद्रपद में तो वर्षा होती ही है कुछ न कुछ वर्षा कार्तिक शुक्ल पक्ष तक होने की संभावना रहती है।

घाघ भड्डरी नाम से ग्रामीण अंचलों में कहावते प्रसिद्ध है। इनमें कुछ घाघ ने कही हैं कुछ भड्डरी ने। आगे भड्डरी कथित वर्षा से सम्बन्धित कहावतें दे रहे हैं।

आद्रा तो बरसे नहीं मृगशिर पौन न जोय।
तो जानै यों भड्डरी बरसा बूंद न होय।

यदि मृगशिरा नक्षत्र में तेज हवा न चले और आर्द्रा के सूर्य

म पानी न बरसे तो समझ लो कि आगे वर्षा में एक बूंद पानी नहीं बरसेगा।

टिप्पणी–

मृगशिरा में सूर्य ८ जून के एक दिन आगे पीछे जाता है और २१-२२ जून तक रहता है। यदि इस बीच तेज हवा न चली और २१-२२ जून से जुलाई के प्रथम सप्ताह तक पानी न बरसा तो यह सूखा के लक्षण है जैसा कि वर्ष १९८७ में हुआ।

अषाढ़ी पूनो दिना गाज बीज बरसन्त।
नासै लच्छन काल के आनन्द माने सन्त।

आषाढ़ी पूर्णिमा के दिन यदि बादल गरजें, बिजली चमके और पानी बरसे तो यह अकाल (सूखे) के नाश के चिन्ह हैं। इससे सज्जनों को आनन्द होता है।

अषाढ़ मास आठे अंधियारी। जोनिकसे चन्दा जलधारी।
चन्दा निकसे बादर फोर। तीन मास बरखा का जोर।

यदि अषाढ़ कृष्ण पक्ष की अष्टमी को चन्द्रमा बादल में छिपकर निकले तो तीन महीने जोरदार वर्षा होगी। आशय यह है कि अषाढ़ कृष्ण पक्ष की अष्टमी की रात्रि को आकाश में बादल होना वर्षा के लिये शुभ लक्षण है

आद्रा भद्रा कृत्तिका आद्रा रेख मघाहि।
चन्दा ऊगै दूज को सुख में नरा अघाहि।

जब दूज का चन्द्रमा आर्द्रा, कृत्तिका, अश्लेषा, मघा नक्षत्र में स्थित होकर दिखाई दे तो लोग सुख में तृप्त हो जायगे। यहां आशय वर्षा ऋतु तथा शुक्ल पक्ष की द्वितीय से है। महीना कोई नहीं दिया है अतः ज्योतिष का यह योग ज्येष्ठ शुक्ल से लेकर भाद्र शुक्ल द्वितीया तक के लिये लागू होता है।

आगे रवि पाछे चले मंगल जो आषाढ़।
तो बरसे अनमोल ही मूल अनन्दै बाढ़।

अषाढ़ के महीने में मंगल के आगे सूर्य हो तो अच्छी वर्षा होती है। इसके विपरीत प्रभाव वाला योग भी बताया है।

मंगल रथ आगे चले पीछे चलै जू सूर।
मंद वृष्टि तब जानिये पड़िहै सगले झूल।

अगर मंगल का रथ सूर्य के आगे चले तो बहुत मंद वृष्टि होगी और चारो ओर सूखा पड़ जाएगा।

टिप्पणी–

इसका नमूना वर्ष १९८७ में देखा जा चुका है। सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में इस वर्ष प्रवेश २२ जून को हुआ। नियमानुसार आर्द्रा में वर्षा होनी चाहिए थी किन्तु मंगल आर्द्रा प्रवेश के पूर्व से ही सूर्य के आगे था। आर्द्रा प्रवेश के दिन सूर्य ६६-२३ था और मंगल ८६-५५ (प्रातः ५-३० पर) था। २४ अगस्त तक मंगल सूर्य के आगे अंशों में था। २५ अगस्त को मध्यान्ह १ बजकर २ मिनट पर सूर्य मंगल की पूर्ण युति (CLOSE CONJUNCTION) था। इसके बाद सूर्य जैसे-जैसे अंशों में मंगल के आगे होता गया भारत के पूर्वी, मध्य और पश्चिमी क्षेत्र में वर्षा हुई। इस प्रकार उपर्युक्त दोनों ज्योतिष योगों की सत्यता का प्रमाण मिल गया।

आगे का अर्थ एक ही राशि या निकटवर्ती राशि से लेना चाहिए अन्यथा आगे का अर्थ १८० अंश तक होता है। हर तीसरे वर्ष मंगल सूर्य से आगे मई से सितम्बर तक रहता है किन्तु वह एक राशि (३०) से दूर रहता है। मेरे विचार से यह योग आगे पीछे ३० तक प्रभावी होता है।

उतरे जेठ जो बोले दादुर।
कहैं भड्डरी बरसे बादर।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष के अन्तिम दिनों में यदि मेढक बोलने लगे तो समझो कि वर्षा होने वाली है।

टिप्पणी –

यह लक्षण शत प्रतिशत सही बैठता है। मेढक तालाबों में नम मिट्टी में समाधिस्थ रहते हैं। उन्हें कोई ऐसी अतोतेन्द्रिय अनुभूति हैं कि वे जब जान लेते हैं कि वर्षा होने वाली है तो ताल की मिट्टी से बाहर आकर बोलने लगते हैं। हालाकि आकाश में बादल नहीं है, एक

बूंद पानी भी नहीं बरसा है फिर भी मेढकों को इसकी जानकारी पहिले ही हो जाती है कि पानी शीघ्र बरसने वाला है।

ध्यान देने की बात है कि अषाढ़ कृष्ण या शुक्ल पक्ष और कभी-कभी ज्येष्ठ शुक्ल के अन्तिम दिनों (२१-२२ जून को) सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करता है। इसका अर्थ यह है कि आर्द्रा नक्षत्र के आगमन का ज्ञान मेढकों को हो जाता है। और यदि आर्द्रा में पानी बरसने की संभावना है मेढक मृगशिरा के अन्तिम दिनों में बोलने लगते हैं। इस लेखक ने इस वर्ष यह अनुभव किया कि आर्द्रा नक्षत्र भर मेढकों की आवाज नहीं सुनाई दी। आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा तक पानी नहीं बरसा।

मटुका माँ पानी गरम चिड़िया न्हावैं धूर।
अण्डा लै चींटी चढ़ै तो बरखा भरपूर।

घड़े का पानी गरम हो गया है, चिड़िया धूल में स्नान कर रही है, चीटियाँ अण्डे लेकर ऊपर चढ़ रही हैं, भरपूर वर्षा होने वाली है।

चैत मास दशमी खरी जो कहुँ कोरी जाय।
चौमासे भर बादरा भलीभाँति बरसाय।

चैत्र मास की दशमी बादरों से रहित हो तो चौमासे में वर्षा अच्छी होगी।

चैत्र मास जो बीज बिजोवै।
भरि बैसाखहिं टेसू धोवै।

यदि चैत्र के महीने में बिजली चमके तो वैसाख में इतनी वर्षा होगी कि टेसू के फूल का रंग धुल जायेगा। केवल बिजली बादल होना कहा है, वर्षा नहीं।

जो चित्रा में खेलै गाई।
निहचै खाली साख न जाई।

यदि सूर्य के चित्रा नक्षत्र में भ्रमण काल में गौवें उछल कूद करें तो निश्चित रूप से फसल अच्छी जाएगी। १० अक्टूबर से २४ अक्टूबर के मध्य सूर्य का चित्रा नक्षत्र में भ्रमण होता है। एक दिन आगे पीछे भी

हो सकता है ।

पवन थक्यो तीतर लवै गुरुहिं सुदेवे नेह ।
कहहिं भड्डरी ज्योतिषी तादिन बरसे मेह ।

चलते-चलते हवा रुक जाय, तीतर जोड़ा खायें, गुरु पुष्य योग हो तो भड्डरी कहते हैं कि उस दिन वर्षा अवश्य होगी । गुरु पुष्य योग का अर्थ है कि गुरुवार का दिन हो और चन्द्रमा पुष्य नक्षत्र में हो ।

बोलैं मोर महातुरी, खाटी होय जो छांछ ।
मेह मही पर परन को जाने काछे काछ ।

जब मोर बड़ी आतुरता से बोले, मट्ठा खट्टा हो जाय तो समझ लो कि पानी बरसने वाला है ।

नौमी माघ अंधेरिया मूल रिच्छ को भेद ।
हो भादों नवमी दिवस जल बरसे बिन खेद ।

माघ कृष्ण पक्ष नवमी के दिन मूल नक्षत्र पड़े तो भादों की नवमी को बरसेगा इसमें कोई संदेह नहीं है । माघ कृष्ण नवमी को चन्द्रमा मूल नक्षत्र में हो ।

सावन केरे प्रथम दिन उगत न दीखे भान ।
चार महीना बरसै पानी याको है परमान ।

श्रावण मास के पहिले दिन सूर्य बादलों के कारण उदय होता न दिखाई दे तो चार महीने पानी बरसेगा । यहाँ श्रावण कृष्ण प्रतिपदा से आशय है ।

सावन ऊखम भादों जाड़ ।
बरसा मारे ठाड़ कछांड़ ।

यदि सावन में उमस (गर्मी) हो और भादों में सर्दी हो तो बादल कमर बांधे बरसने को तैयार है ।

शुक्रवार की बादरी रही शनीचर छाय ।
कहै घाघ सुन भड्डरी विन बरसे नहिं जाय ।

यदि शुक्रवार के दिन बादल उठे और शनिवार को आकाश में छाया रहे तो घाघ कहते हैं कि हे भड्डरी वह बादल बिना बरसे नहीं जाएगा ।

अध्याय ८

विविधा

इस अध्याय में वर्षा के भविष्य ज्ञान के लिए प्राचीन कृन्थों में वर्णित अन्य विधि, ग्रहयोग एवं लक्षणों का वर्णन किया जायगा। ये प्राचीन काल से उपयोग में लाये जा रहे हैं।

सूर्य संक्रांन्ति में नक्षत्र मण्डल

शीघ्र वर्षा लक्षणाध्याय में चन्द्रमा के ६ मण्डलों का विचार किया जा चुका है। अब जिन मण्डलों को बता रहे हैं उनका सम्बन्ध सूर्य संक्रान्ति से है। जिस समय सूर्य एक राशि का भ्रमण समाप्त कर अगली राशि में प्रवेश करता है उसे सूर्य संक्रान्ति कहते हैं। सूर्य के राज्ञि प्रवेश के समय चन्द्रमा किस नक्षत्र में है यह देखना चाहिए। यहाँ सूर्य संक्रान्ति से तात्पर्य निरयन सूर्य संक्रान्ति से है और चन्द्रमा के नक्षत्र से आशय है सक्रान्ति समय चन्द्रमा किस नक्षत्र में है। कभी-कभी उदया तिथि चान्द्र नक्षत्र संक्रान्ति काल में बदल जाता है, अतः पंचांग देख कर निश्चय कर लेना चाहिए। मण्डल के निश्चित नक्षत्र हैं, उन्हें निम्नांकित चक्र में देखिए।

मण्डल	नक्षत्र
अग्निमण्डल	भरणी-कृत्तिका–पुष्य–मघा–पू० फाल्गुनी–पू०-भाद्रपद–विशाखा
वायुमण्डल	अश्विनी–मृगशिरा–पुनर्वसु-उ० फाल्गुनी हस्त-चित्रा-स्वाती
वरुणमण्डल	आर्द्रा–आश्लेषा–मूल-पू० षाढा-शतभिषा-उ०-भाद्रपद–रेवती
महेन्द्रमण्डल	रोहिणी–अनुराधा–ज्येष्ठा-उ० षाढा अभिजित-श्रवण घनिष्ठा

संक्रांति मण्डल का प्रभाव

मण्डल के नाम के अनुरूप प्रभाव बताया गया है। ध्यान दें, चार मण्डल हैं और वे मौसम के मुख्य चार अंगों को सूचित करते हैं।

१. अग्नि मण्डल- अग्नि का गुण है उष्णता या गर्मी। यदि संक्रांन्ति अग्नि मण्डल में पड़ती है तो तापमान में वृद्धि होती है।

२. वायु मण्डल– मानसून में यदि कोई संक्रांन्ति वायु मण्डल में पड़ गई तो उस सौर मास में वायु अधिक चलेगी। बादल उठते हैं तो हवा उन्हें उड़ा ले जाती है। वर्षा कहीं–कहीं हलकी सी हो जाती है।

३. वरुण मण्डल– वरुण जल के देवता हैं। वरुण मण्डल की संक्रान्ति भारी वर्षा की सूचक है।

४. महेन्द्र मण्डल– इस मण्डल की संक्रान्ति में कायदे की लाभदायक वर्षा होती है।

संक्रान्ति मण्डल का प्रभाव एक मास तक रहता है। मण्डल में परिवर्तन यदि अगली संक्रान्ति में होता है तो प्रभाव में भी परिवर्तन होता है। मण्डलों का प्रभाव मुख्य रूप से वर्षा ऋतु में देखा जाता है,

किन्तु अन्य ऋतु में जैसे कि शीत ऋतु में भी प्रभाव दिखाई देता है। भारत के ज्योतिषी संक्रान्ति मण्डल को विशेष महत्व देते हैं। मण्डल का प्रभाव अधिकांश सही उतरता है, किन्तु सदा सटीक नहीं बैठता। इसलिए पूर्व अध्यायों में वर्णित अन्य विधियों पर भी ध्यान रखना चाहिए। एक उदाहरण से इसे स्पष्ट करते हैं। सन् १९८७ की वर्षा ऋतु में पड़ने वाली सूर्य संक्रान्ति के मण्डलों पर ध्यान दीजिए—

सन् १९८७ में मिथुन संक्रान्ति १५ जून को घं० १२-४९ पर थी। चन्द्रमा श्रवण नक्षत्र में था इसलिए संक्रान्ति महेन्द्र मण्डल में हुई। लाभदायक वर्षा होनी चाहिए थी किन्तु पूरा सौर मास सूखा गया। कर्क संक्रान्ति १६ जुलाई घं० २३-४५ पर रेवती नक्षत्र के चन्द्रमा में वरुण मण्डल में थी, भारी वर्षा होनी चाहिए थी किन्तु ऐसा नहीं हुआ। १७ अगस्त को सूर्य की सिंह संक्रान्ति कृत्तिका नक्षत्र अग्नि मण्डल में थी। इसका फल सही उतरा, वर्षा नहीं हुई। कन्या संक्रान्ति वायु मण्डल और तुला संक्रान्ति वरुण मण्डल का फल सही उतरा। ऐसा क्यों हुआ ? इसका कारण यह है कि वर्षा अवरोधक मंगल का सूर्य से आगे संचरण का प्रबल योग चल रहा था। कहा है कि यदि मंगल सूर्य के आगे चल रहा हो तो प्रलयकाल के मेघों के जल को भी सोख लेता है। मानसून के आरम्भ से ही मंगल सूर्य के आगे था। २५ अगस्त को सूर्य मंगल की पूर्ण अंशात्मक युति के बाद जैसे-जैसे सूर्य मंगल के आगे होता गया वर्षा होती गई। सन् १९८७ में बहुत शोरगुल मचाया गया कि यह शताब्दी का सबसे प्रचण्ड सूखा था। वस्तुतः यह विलम्ब से आया मानसून था जिसमें अच्छी वर्षा मानसून के अन्त में हुई। वस्तुतः इससे बड़ा सूखा सन् १९७९ में था। अस्तु मण्डल के फल पर विचार करते समय प्रबल वर्षा अवरोधक ग्रह योगों पर एवं उत्पातों पर भी ध्यान देना चाहिए, जैसे कि सन् १९७९ में अन्तरिक्ष उत्पात सौर धब्बे प्रकट हो रहे थे जिन्होंने मानसून की प्रारम्भिक अच्छी वर्षा के बाद मण्डलों के प्रभाव को अस्त व्यस्त कर दिया। एक बात और अनुभव में आई है कि कोई भी मण्डल हो उसका पूरे सौर मास में एक समान प्रभाव नहीं होता, मौसम में चढ़ाव-उतार

चलता रहता है। इसका कारण ग्रहयोगों में होने वाला परिवर्तन होता है।

मेघद्वार

नरपति जयचर्या में सूर्य संक्रान्तियों और तत्कालीन चन्द्रमा के नक्षत्र के आधार पर वर्षा का भविष्य जानने की विधि दी है। इसमें अभिजित सहित २८ नक्षत्रों को पांच वर्गों में विभाजित कर उन्हें 'द्वार' संज्ञा दी है। चन्द्रमा सूर्य संक्रान्ति के समय किस नक्षत्र में है उसके अनुसार द्वार का निर्णय कर फल मालूम किया जाता है। पाँच द्वार उनके नक्षत्र और फल इस प्रकार हैं–

१. **मेघद्वार के नक्षत्र**– भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा।

२. **वायुद्वार के नक्षत्र**– मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा।

३. **धर्मद्वार के नक्षत्र**– स्वाती, विशाखा, अनुराधा।

४. **रेतद्वार के नक्षत्र**– ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, अभिजित, श्रवण।

५. **हेमद्वार के नक्षत्र**– धनिष्ठा, शतभिषा, पू० भाद्रपद, उ० भाद्रपद, रेवती, अश्विनी।

फल

मेघद्वार- सूर्य संक्रान्ति के समय इस वर्ग के किसी नक्षत्र में चन्द्रमा होने से उस सौर मास में अच्छी वर्षा होगी।

वायुद्वार– संक्रान्ति काल में इस वर्ग में चन्द्रमा की स्थिति से मेघ उठते हैं किन्तु बरसते नहीं।

धर्मद्वार– इस वर्ग में चन्द्रमा होने से अति वृष्टि होती है।

रेतद्वार - इस वर्ग में चन्द्रमा होने से बड़े मेघ उठते हैं किन्तु वर्षा बहुत कम होती है।

हेमद्वार– इस वर्ग के चन्द्र में सुवृष्टि और सुभिक्ष होता है।

समुद्र चक्र

समुद्र चक्र द्वारा मानसून में किस दिन वर्षा का कैसा योग है

इसे जानने की विधि नरपति जयचर्या में दी है। वह इस प्रकार है–

जिस दिन सूर्य मेष राशि में संचरण करें देखें कि उस दिन संचरण के समय चन्द्रमा किस नक्षत्र में है। उस नक्षत्र को आदि में लेकर समुद्र, तट, गिरि और सन्धि इन चार वर्गों में नक्षत्र क्रम से २ नक्षत्र समुद्र वर्ग में, उसके आगे के २ नक्षत्र तट वर्ग में, फिर १ नक्षत्र गिरि में और २ सन्धि में इस प्रकार सम्पूर्ण नक्षत्र अभिजित सहित क्रमानुसार लिख कर एक चक्र बना लें। इसमें २८ नक्षत्रों की स्थापना करने के बाद वर्षा ऋतु में जिस दिन की वर्षा का विचार करना है, उस दिन चन्द्रमा किस नक्षत्र में है यह मालूम करें। फिर देखें कि वह नक्षत्र चक्र में किस वर्ग में पड़ा है। वर्गानुसार फल होगा।

कृत्तिकादि लिखेच्चक्रं मेष संक्रान्ति वासरात्।
दिन ऋक्षं भवेद्यत्र तत्र वृष्टि फलाफलम्॥
अति वृष्टिः समुद्रे च तटे वृष्टिस्तु शोभना।
सन्धौच खण्डवृष्टिः स्यादनावृष्टिश्च पर्वते॥

वर्गानुसार फल इस प्रकार होगा–

समुद्र वर्ग के नक्षत्र में – भारी वर्षा
तट वर्ग के नक्षत्र में – सुन्दर वर्षा
सन्धि वर्ग के नक्षत्र में – खण्ड वृष्टि
गिरि वर्ग के नक्षत्र में – वर्षा नहीं

एक उदाहरण के द्वारा इसे स्पष्ट करते हैं। सन् १९८९ में मेष संक्रान्ति १३ अप्रैल को घं. २१-४५ इं. स्टं. टा. पर है। १३ अप्रैल को मध्यान्ह १२-२२ तक चन्द्रमा पुनर्वसु नक्षत्र में रहेगा। सूर्य के मेष प्रवेश के समय पुष्य नक्षत्र में होगा। अतः पुष्य नक्षत्र को आदि में लेकर उपरोक्त चार वर्गों में नक्षत्रों की स्थापना करने पर सन् १९८९ का समुद्र चक्र निम्नांकित बनेगा–

समुद्र चक्र मेष संक्रान्ति १९८९ ई.

समुद्र	तट	गिरि	सन्धि
पुष्य-आश्लेषा	मघा-पू फाल्गुनी	उ. फाल्गुनी	हस्त-चित्रा
स्वाती-विशाखा	अनुराधा-ज्येष्ठा	मूल	पू. षाढा-उ. षाढा
अभिजित-श्रवण	घनिष्ठा-शततामिषा	पू. भाद्रपद	उ. भाद्रपद-रेवती
अश्विनी-भरणी	कृत्तिका-रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा-पुनर्वसु

ज्योतिष में सामान्यतः २७ नक्षत्रों की गणना है जिसमें अभिजित का नाम नहीं आता। भचक्र में अभिजित नक्षत्र का क्षेत्र २७६ अंश ४० कला से २८० अंश ५३ कला २० विकला तक है। इसका कुल क्षेत्र ४ अं. १३ का २० वि. है। उत्तराषाढ़ा चतुर्थ चरण और श्रवण के आरम्भ का १/१५ भाग मिलकर अभिजित नक्षत्र है। यदि चन्द्रमा इस क्षेत्र में है तो वह अभिजित नक्षत्र में माना जायगा।

वर्षा सम्बन्धी कुछ अचूक योग

१. स्वाती, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, आर्द्रा, रोहिणी, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में जब तक मंगल रहता है वर्षा नहीं होती।

२. सूर्य और शुक्र से आगे गुरु हो तो पाला पड़ता है और कहीं कहीं वर्षा होती है यह शीत ऋतु का योग है।

३. चन्द्रमा पूर्ण जलांश राशि–कर्क, मकर, मीन और शनि मंगल चन्द्रमा से सप्तम या नवम स्थान में हो तो भारी वर्षा होती है। यह मानसून की वर्षा का योग है।

४. मंगल, बुध और शनि ये तीनों शुक्र से आगे हों तो तेज हवा चलती है, वर्षा नहीं होती।

५. वर्षा ऋतु में चन्द्र शुक्र का प्रतियोग हो–एक दूसरे के सातवें हो तो वर्षा होती है।

६. चन्द्र और शुक्र एक ही राशि नवांश में वर्षा ऋतु में हो उस दिन वर्षा होती है।

७. शुक्र से सप्तम स्थान में गुरु-चन्द्र हो तो बहुत अच्छी व्यापक वर्षा होती है।

८. सूर्य से सातवें स्थान में गुरु वर्षा को रोकता है।

९. शनि से ५-७-९ वें स्थान में वर्षा ऋतु में जब चन्द्रमा जाता है तो वर्षा होती है।

१०. सूर्य के आगे मंगल होने से अनावृष्टि, शुक्र आगे होने से वृष्टि, गुरु आगे होने से गर्मी, बुध आगे हो तो वायु चलती है। ये वर्षा ऋतु में लागू होते हैं। आगे का अर्थ निकट के अंशों में आगे होना है।

११. ग्रह के उदय अस्त के दिन वर्षा का योग वर्षा ऋतु में होता है।

वर्षा न होने के लक्षण

इन लक्षणों में कुछ हवा और बादल से सम्बन्धित हैं जिनमें ज्योतिष ज्ञान की कोई आवश्यकता नहीं है, केवल भारतीय चान्द्रमास की जानकारी चाहिए जो कि शहरी पढ़े लिखे लोगों को याद नहीं रहते। वे केवल अंग्रेजी महीने और तारीख जानते हैं। वर्षा में रुकावट होगी इसके अन्ययोग ज्योतिष पर आधारित हैं जिन्हें जानने के लिए ज्योतिष के मुख्य अंग राशि ग्रह और नक्षत्रों का ज्ञान और उनकी गणना की जानकारी आवश्यक है अवर्षण के ये लक्षण हैं।

१. आषाढ़ मास में दक्षिण पश्चिम की हवा चले।

२. श्रावण मास में दक्षिण या दक्षिण पश्चिम पूर्व की हवा चले।

३. भाद्र मास में उत्तर या दक्षिण की हवा चले।

४. आश्विन मास में दक्षिण पूर्व की हवा चले।

५. दिन में बादल हों और रात्रि में आकाश निर्मल रहे।

६. अगस्त तारा उदय हो जाय और कांस में फूल खिल जाये। तो वर्षा की समाप्ति समझें।

७. वर्षा ऋतु में मंगल आगे और सूर्य पीछे हो।

८. मंगल गुरु की युति हो।

९. शुक्र पीछे, बीच में बुध और सूर्य आगे हो ।
१०. सूर्य और मंगल अग्नि तत्व राशि में एक साथ हों ।
११. मंगल, वृहस्पति, शुक्र, शनि एक साथ हों ।
१२. चैत्र और श्रावण में बुध उदय हो और शुक्र अस्त हो ।
१३. शनि और राहु आर्द्रा नक्षत्र में हों ।
१४. शुभ ग्रह के पीछे क्रूर हो ।
१५. मंगल और शनि धनिष्ठा नक्षत्र में हो ।

उपर्युक्त लक्षण वर्षा रोकने वाले हैं ।

शीघ्र वर्षा के लक्षण

वर्षा ऋतु निकट आ गई है या प्रारम्भ हो गई है उस समय निम्नांकित लक्षण हों तो २४-४८ घंटे में वर्षा होगी ऐसा समझना चाहिये । इनमें ज्योतिष ज्ञान की कोई जरूरत नहीं है, केवल अपने आस-पास प्रकृति में गुजरती घटनाओं तथा असामान्य परिवर्तनों का निरीक्षण ध्यान पूर्वक करना है । लक्षण इस प्रकार है—

१. चींटियां अंडे लेकर ऊपर चढ़ रही हों ।
२. जल का स्वाद बदल जाये ।
३. चील आकाश में ऊँचा उड़े ।
४. मेढक रात में सामूहिक रूप से बोलें ।
५. अबाबील घोंसले से बाहर न आये ।
६. पक्षी धूल में स्नान करें ।
७. पपीहा रात में बोले ।
८. मछलियां पानी के ऊपर उछलें ।
९. मोर सामूहिक रूप से बोलें ।
१०. कुत्ते और पालतू पशु घर से बाहर न निकलें ।
११. कुत्ता घास खाये ।
१२. नमक तथा पत्थर पसीजें ।
१३. उदय होते सूर्य का रंग गले सोने की तरह चमकीला हो ।
१४. वृक्ष के पत्तो के सिरे ऊपर उठ जायें ।
१५. चिकने भूरे बादल हों ।

१६. हवा पूर्व या उत्तर से आ रही हो। यह आषाढ़ मास का योग है।
१७. हवा जल्दी जल्दी दिशा बदले।
१८. बालक रेत या धूल में खेलें।
१९. इन्द्र धनुष का उदय हो।
२०. शुक्रवार को बादल उठे और शनिवार को भी रहे।
२१. चन्द्रमा के चारो ओर मण्डल हो।

उपर्युक्त लक्षण दिखाई दें तो समझना चाहिये कि शीघ्र पानी बरसेगा।

अध्याय ६

आधुनिक मौसम विज्ञान

METEOROLOGY

भारत के प्राचीन मौसम विज्ञान, जो कि मुख्य रूप से ज्योतिष पर आधारित है और प्रकृति के लक्षणों का भी सहारा लेता है, विस्तार से लिख चुके हैं। अब हम आधुनिक मौसम विज्ञान पर भी संक्षेप में प्रकाश डालेंगे। दुनियाँ के मौसम विज्ञानी वर्षा की लांगरेन्ज फोरकास्ट करने में असमर्थ हैं। इसे वे स्वीकारते भी हैं किन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि हम आधुनिक विज्ञान की उपलब्धियों को नकार दें। हमें उनकी खोजों को भी समझना चाहिए और उसका उपयोग करना चाहिए। अगर हम ऐसा नहीं करते तो हम भी उन वैज्ञानिकों की श्रेणी में जा बैठेंगे जो पूर्वाग्रह से ग्रस्त हो ज्योतिष विज्ञान की अवहेलना कर अपने ज्ञान के भण्डार की वृद्धि नहीं करना चाहते।

दूसरी बात यह है कि आधुनिक मौसम विज्ञानी किन आधारों को लेकर भविष्य करते हैं इनकी जानकारी होने पर ही दोनों पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन सम्भव है। यह अध्ययन इसलिए जरूरी है कि दोनों में कहाँ क्या कमी है या किसमें क्या विशेषता है यह मालूम होने पर त्रुटियों या अभाव को दूर किया जा सकता है और दोनों तरीकों का समन्वय कर मौसम विज्ञान को एक नया विकसित रूप दिया जा सकता है।

वातावरण

मौसम के अध्ययन के लिए बातावरण (ATMOSPHERE) की जानकारी जरूरी है। वात+आवरण से मिलकर वातावरण शब्द बना है। आशय यह है कि प्रत्येक आकाशी पिण्ड एक आवरण से आवेष्ठित है। उसे हिन्दी में वात–वायु कहते हैं। इसे वायु मण्डल भी कह सकते

हैं। यह सभी आकाशी पिण्डों में एकसा नहीं है। पृथ्वी भी सौर मण्डल का एक ग्रह है। वातावरण का घनत्व और वह किस प्रकार का है यह ग्रह के पलायन वेग (ESCAPE VELOCITY) के अनुरूप होता है। पृथ्वी की इस्केप वेलासिटी ७ मील प्रति सेकण्ड है इसलिए इसका वायु मण्डल मंगल ग्रह के वायु मण्डल की अपेक्षा घना है क्योंकि उसका पलायनवेग ३ मील प्रति सेकंड ही है। मंगल का वायु मण्डल पृथ्वी के वायु मण्डल से पतला है। चन्द्रमा का पलायन वेग और भी कम है, वह केवल डेढ़ मील प्रति सेकंड है इसलिए वहाँ वायु मण्डल नहीं के बराबर है। सौर मण्डल के सबसे विशाल ग्रह वृहस्पति का पलायनवेग ३७ मील प्रति सेकण्ड है, अतः वहाँ सबसे हलकी गैस हाइड्रोजन की प्रचुरता है। इसी प्रकार विभिन्न ग्रहों में वेलासिटी के अनुरूप विभिन्न प्रकार का वायु मण्डल है।

पृथ्वी का वातावरण कई प्रकार की गैसों के विभिन्न अनुपात के मिश्रण से बना है ऐसा वैज्ञानिकों का मत है। उन्होंने इसकी माप भी करती है। वायु मण्डल के निचले स्तर पर प्रमुख रूप से आक्सीजन और नाइट्रोजन की मात्रा सबसे अधिक है। ये दोनों मिलकर ९९.०२ प्रतिशत हैं। समुद्र के धरातल विभिन्न ऊँचाइयों पर गैसों की मात्रा में अन्तर होता है। समुद्र की सतह पर मात्रा इस प्रकार है–

नाइट्रोजन	७८.०३
आक्सीजन	२०.९९
आरगन	०.९३२३
कारबनडाइ आक्साइड	०. ०३
हाइड्रोजन	०.०१
निआन	०.००१८
हेलियम	०.०००५
क्रिप्टान	०.०००१
क्सेनान	०.०००००९
ओजोन	०.०००००१

जनवरी-वायुभार एवं हवायें

JANUARY-PRESSURE AND PREVAILING WINDS

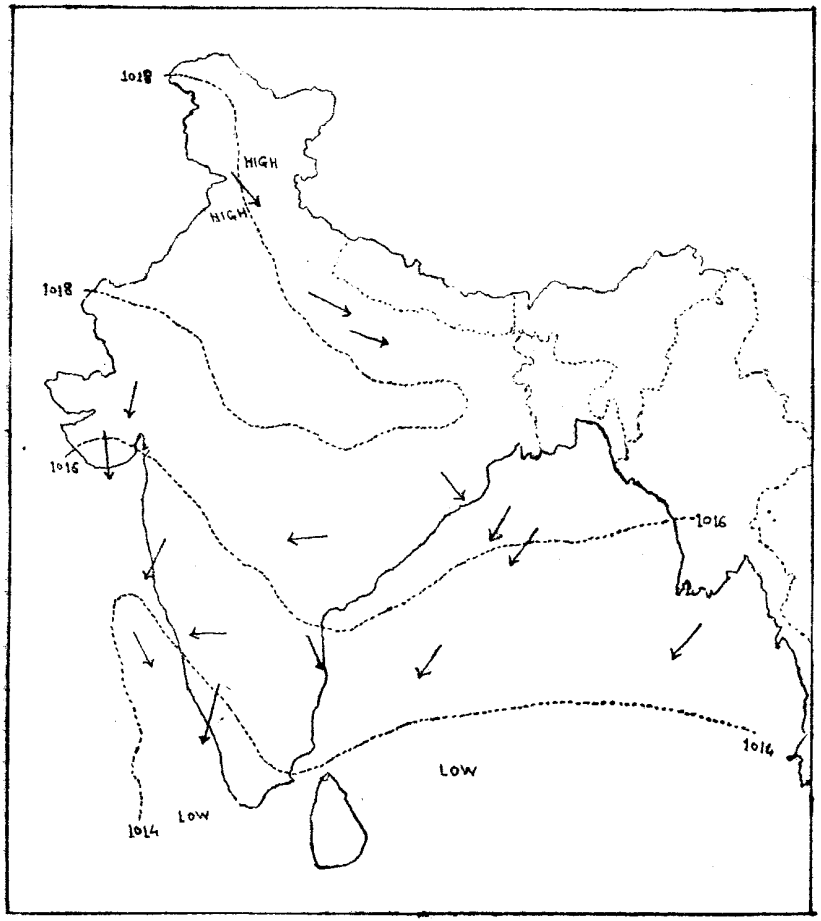

JULY-PRESSURE AND PREVAILING WINDS

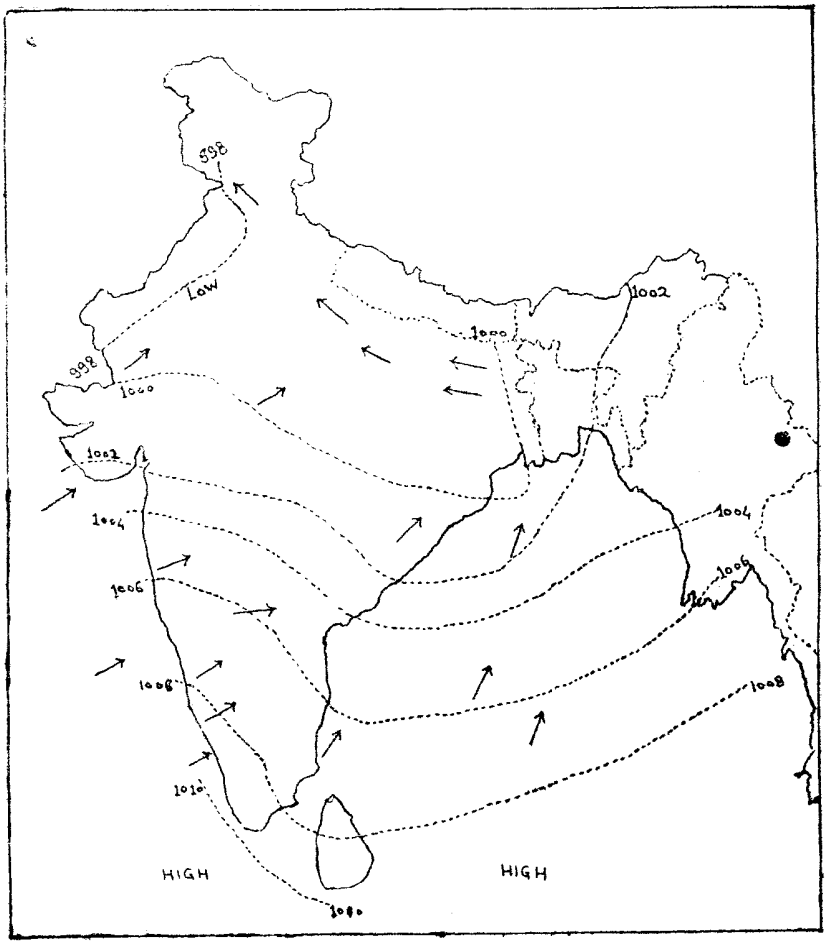

भारत में वर्षिक वर्षा

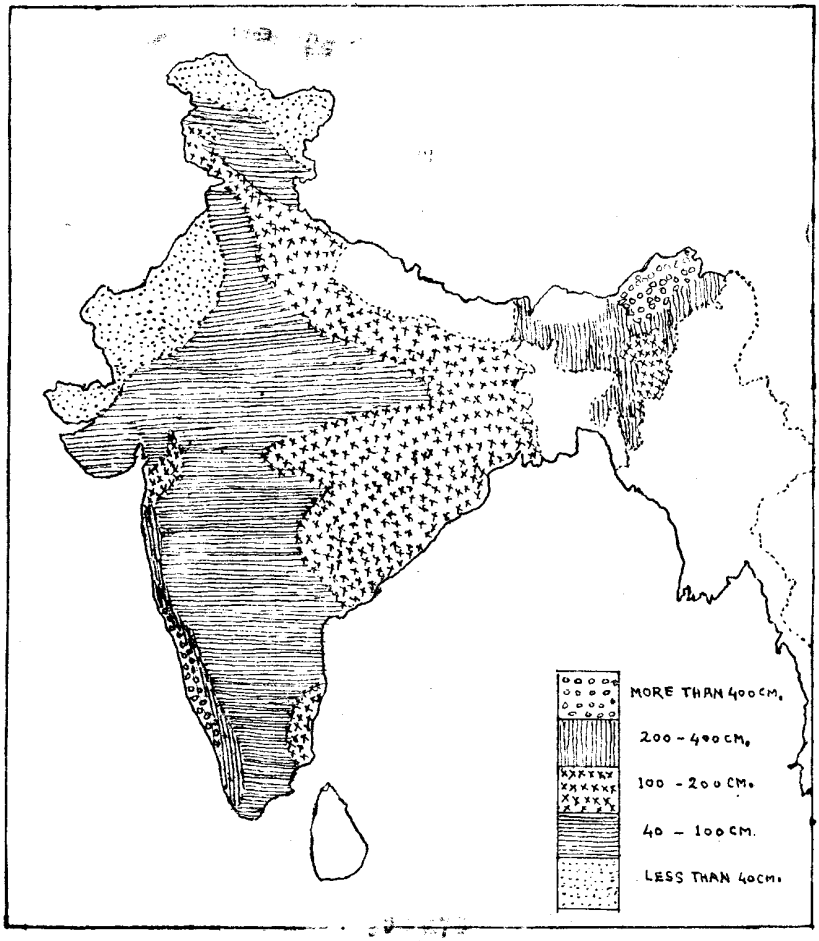

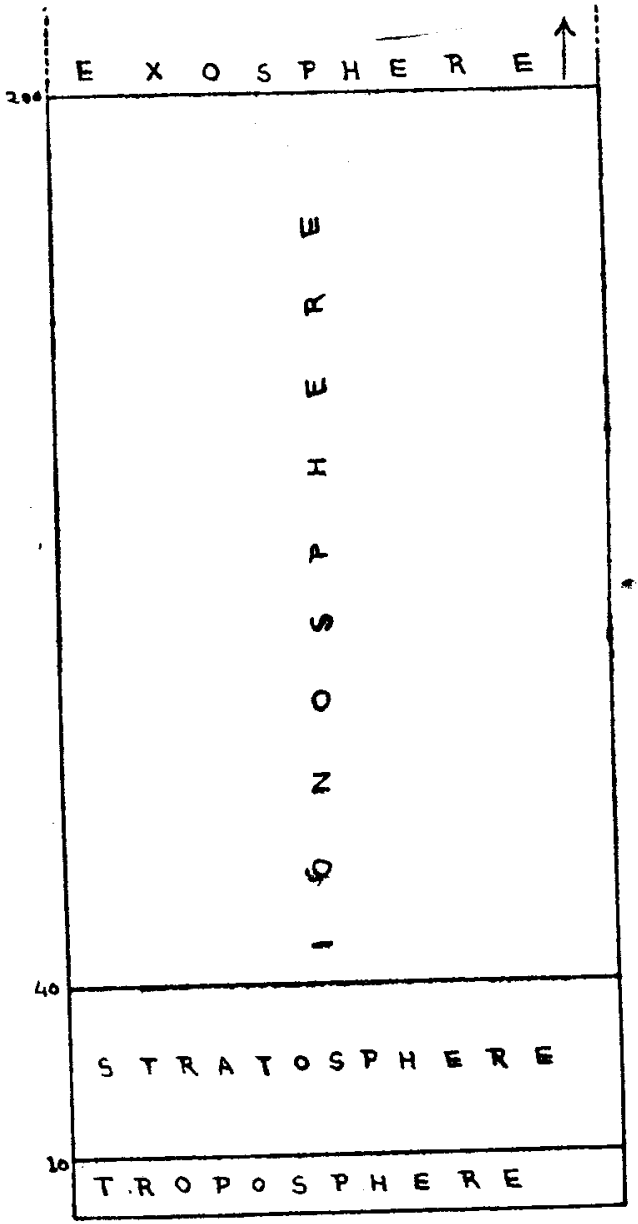

वायुमण्डल

ATMOSPHERE

वैज्ञानिकों ने वायु मण्डल (ATMOSPHERE) को चार पर्तों में विभाजित किया है–

१. **क्षोभ मण्डल** (TROPOSPHERE)– इसकी सीमा या उँचाई १० मील तक मानी है। यह अधिकतम उँचाई भूमध्य रेखा पर है। ध्रुवों पर यह लगभग ५ मील है। सम्पूर्ण वायु मण्डल का ४/५ भाग इसी ट्रोपोस्फियर में है। इसमें आक्सीजन, नाइट्रोजन, कार्बनडाइ आक्साइड, जल वाष्प आदि हैं। जैसे-जैसे उँचाई बढ़ती जाती है आक्सीजन कम होती जाती है।

२. **समताप मण्डल** (STARTOSPHERE)– १० मील की उँचाई तक क्षोभ मण्डल है। इसके ऊपर आगे ३० मील की उँचाई तक समताप मण्डल है। कुछ वैज्ञानिकों ने इस ३० मील के मण्डल को दो भागों में विभाजित किया है। उनके मत से ट्रोपोस्फियर के ऊपर स्ट्रैटोस्फियर है उसके बाद ओजोन की एक पर्त है। कहते हैं कि ओजोन की यह पर्त बहुत महत्वपूर्ण है। इससे छनकर अल्ट्रावायलेट रश्मि पृथ्वी पर आती हैं। अगर यह परत न हो तो सूर्य की किरणों से खाल झुलस जाय और नेत्र अन्धे हो सकते हैं।

३. **आयनोस्फियर** (IONOSPHERE)–समताप मण्डल के ऊपर ५०० मील तक आयनोस्फियर है।

४. **एक्सोस्फियर** (EXOSPHERE)– अन्त में आयनोस्फियर के ऊपर एक्सोफियर है। यह कहाँ तक है इसकी कोई सीमा नहीं है, यह अन्तरिक्ष में मिल जाता है।

आधुनिक विज्ञान ने ट्रोपोस्फियर की विस्तृत जानकारी प्राप्त की है क्योंकि इसका मौसम से सीधा सम्बन्ध है। इसके ऊपर के मण्डलों की अधूरी और सन्देह जनक जानकारी है। कुछ वर्ष पूर्व तक वैज्ञानिकों का मत था कि कुल २०० मील की उँचाई तक एटमास्फियर है। उसके बाद इसे ६०० मील तक बताया गया, फिर ८०० मील और अब अन्तरिक्ष विज्ञान के विकसित होने पर इसे २०००० से २५०,००० मील तक माना जाता है।

आयनोस्फियर की जानकारी भी अभी पूरी नहीं हुई है। रेडियो तरंगों के माध्यम से इसका ज्ञान हुआ है। यह अनुभव किया गया है कि ११ वर्ष के चक्र में जब सौर धब्बे प्रकट होते हैं तो रेडियो ब्राडकास्ट में अचानक व्याघात पड़ता है। इसे वैज्ञानिक SID कहते हैं। इसका अर्थ है Sudden Ionospheric disturbance, वैज्ञानिकों ने यह भी अनुभव किया है कि जब सौर धब्बों की संख्या अधिक होती है तो मौसम अस्त-व्यस्त होते हैं। इस ओर सामान्य मौसम विज्ञानियों का ध्यान कम जाता है। सन् १९७९ में ऐसा ही हुआ था और आगे १९९०-९१ में फिर ऐसा होने की संभावना है। अस्तु, ऊपरी वायु मण्डल का ज्ञान अधिकांश अपरोक्ष और अधूरा है इसे वैज्ञानिक स्वीकारते भी हैं–

"Knowledge of the upper air is still mostly indirect. Information comes, however, from such phenemena as meteors, the aurora, sound, lights bnd radio reflections, semicosmic clouds and from other astronomical observations."

-WEATHER AND CLIMATE

by Clarence E. Koeppe

अर्थात् "ऊपरी वायु मण्डल का अधिकांश ज्ञान अभी तक अपरोक्ष है। सूचना उल्का, ध्रुवीय ज्योति, ध्वनि, प्रकाश, रेडियो तरंगों के परावर्तन, अर्द्ध ब्रह्माण्डीय मेघों और अन्य खगोलीय अध्ययन ऐसे माध्यमों एवं घटनाओं से प्राप्त होती है।"

मौसम भविष्यवाणी के आधार

उपर्युक्त स्वीकृति से यह स्पष्ट होता है कि मौसम विज्ञान प्रमुख रूप से ट्रोपोस्फियर का अध्ययन कर मौसम का वर्तमान रिकार्ड संकलित कर पूर्वानुमान प्रस्तुत करता है। अंग्रेजी शब्द METEOROLOGY अरस्टाट्ल के शोध ग्रन्थ METEOROLOGICA से निकला है। यह प्राकृतिक विज्ञान का वृहत् ग्रन्थ है। इसमें खगोल, भूगर्भशास्त्र, भौतिक अथवा प्राकृतिक भूगोल, भौतिक विज्ञान, रसायन शास्त्र जो कि वायु मण्डल की घटनाओं से सम्बन्धित हैं उन पर गहराई से विचार किया गया है। मिटियारालाजी का सामान्य अर्थ है वायु मण्डल का विज्ञान।

आगे मिटिआरालाजी के विज्ञान ने कई विभाग किये हैं जिनका विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग होता है । जैसे डाइनमिकमिटिरिआलाजी, फिजिकल मिटिआरालाजी, सिनाप्टिक मिटिरिआलाजी, एअरानाटिकल मिटिरिआलाजी इत्यादि । अपने-अपने स्थान पर इन सब की उपयोगिता है किन्तु हमारा मुख्य बिषय मौसम और विशेषकर वर्षा के ऊपर विचार करना है ।

मौसम का अध्ययन मुख्यतः गर्मी-सर्दी, हवा, तूफान, वर्षा, हिमपात की सूक्ष्म जानकारी करना है । इसे और संक्षेप में कहें तो तापमान, वायु और वर्षा का यह अध्ययन है । इनकी जानकारी के लिए विज्ञान ने भाँति-भाँति के यन्त्र निर्माण कर लिए हैं । इसी के साथ हवा में कितनी आर्द्रता (HUMIDITY) है, वायु किस दिशा से चल रही है, उसका वेग याने गति क्या है. वायु का दाब (PRESSURE) कितना है इन सब की सूक्ष्म नाप-जोख के लिए यन्त्र हैं । गुब्बारों, सैटेलाइट इनसेट की भी सहायता मौसम के विश्लेषण के लिए ली जाती है । कम्प्यूटर इसमें विशेष सहायक होता है । कुछ आवश्यक उपकरणों का परिचय दिया जा रहा है–

थर्मामीटर

THERMOMETER

वातावरण का तापमान नापने का उपकरण तापमापी से यह मालूम किया जाता है कि वायु मण्डल में तापमान की मात्रा का अंक सही रूप में क्या है । अधिकतम और न्यूनतम तापमान किसी दिन क्या रहा है । इसके लिए देश के विभिन्न स्थानों पर स्थापित मौसम विभाग इसकी माप करते हैं और देश के प्रमुख नगरों का अधिकतम और न्यूनतम तापमान आकाशवाणी और दूर-दर्शन से प्रसारित किया जाता है । मौसम विभाग में परिष्कृत उच्च कोटि के थर्मामीटर उपयोग में लाये जाते हैं । थर्मामीटर का अर्थ है गर्मी को नापने वाला उपकरण यह माप अधिकांश सेन्टीग्रेड या सेलसियस (CELSIUS) में होती है इसे सेलसियस डिगरी कहते हैं ।

बैरोमीटर
BAROMETER

गैलिलियो के शिष्य टोरिसेली (TORRICELLI) ने सन् १६४३ में एक प्रयोग कर इस उपकरण का आविष्कार किया था। यह वायु-मण्डल (Atmosphere) के दाब की माप करता है। इसका नाम बैरो-मीटर है। मौसम विज्ञान में यह बहुत उपयोगी उपकरण हैं।

जिस प्रकार किसी पात्र में बन्द गैस वर्तन की सतह दीवार पर दबाव डालती है उसी प्रकार वायु भी अपने सम्पर्क में आने वाली सभी सतहों पर दबाव डालती है। यह दाब गतिमान अणुओं के संगठन के कारण प्रतिएकांक क्षेत्रफल पर आरोपित औसत बल के बराबर होता इसे (Atmospheric Pressure) कहते हैं।

पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के कारण वायु के अधिकांश अणु पृथ्वी-तल के निकट संग्रहीत हैं। वायु की ऊपरी पर्तों के भार के कारण भी नीचे की पर्तें संपीडित (Compressed) रहती हैं। इसीलिए पृथ्वीतल पर वायु का घनत्व अधिक रहता है। जैसे-जैसे हम उँचाई पर जाते हैं वायु का घनत्व कम होता जाता है (देखें चित्र) घनत्व के इस अन्तर का कारण यह है कि पृथ्वीतल के समीप प्रति एकांक आयतन में अणुओं की संख्या अधिक पर निर्भर है इसीलिए पृथ्वीतल के निकट वायुमण्ड-लीय दाब अधिक और ऊपर जाने पर क्रमशः कम होता जाता है।

साधारण बैरोमीटर का निर्माण प्रयोगात्मक रूप में इस प्रकार है– काँच की एक मीटर लम्बी तथा पाँच मिलीमीटर व्यास की नली लेते हैं जिसका एक सिरा बन्द और दूसरा सिरा खुला रहता है। नली का व्यास सब लगह समान होना चाहिए। इस नली में स्वच्छ पारा इस तरह भरते हैं कि भीतर वायु न रहने पाए। नली के खुले सिरे को अँगूठे से बन्द कर देते हैं। नली को उलट देते हैं और अँगूठा लगे सिरे को पारे से भरी एक गहरी प्याली में सीधा खड़ा कर देते हैं। इस प्रक्रिया में नली से थोड़ा पारा प्याली में गिरता है और थोड़ी देर में एक विशेष उँचाई प्याली के पारे के तल से ७६ से. मी. के करीब होती है। यह बैरोमीटर का साधारण रूप है।

मौसम विभाग में इसी का परिष्कृत रूप इस्तेमाल किया जाता है। इस पर सेन्टीमीटर और मिलीबार की माप अंकित रहती है। वैज्ञानिकों ने वायु मण्डलीय दाब की माप नापने की यूनिट मिलीबार निश्चित की है जिसका आधार समुद्र की सतह को लिया गया है। एक प्रकार का और बैरोमीटर है जिसे एनेराइड बैरोमीटर (Aneroid Barometer) कहते हैं। एनेराइड का अर्थ है जिसमें द्रव न हो। वायु-यान का आल्टीमीटर (Altimeter) इसी का विकसित रूप है। पारद बैरोमीटर में जिसे Fortin type Barometer कहते हैं, पारद स्तम्भ के उठने-गिरने से निम्नांकित सूचनायें मिलती हैं–

१. यदि बैरोमीटर में पारद स्तम्भ की उँचाई अचानक गिर जाती है तो यह इस बात की सूचना है कि आंधी-तूफान या वर्षा आने वाली है। दाब के यकायक कम हो जाने से आंशिक रूप में निर्वात् हो जाता है, वहाँ तेजी से हवा आती है जो आँधी या तूफान का रूप धारण कर होती है। गर्मी के मौसम में दाब का कम होना आंधी का सूचक तथा वर्षा या सर्दी के मौसम में वर्षा का सूचक है।

२. बैरोमीटर में पारे का धीरे-धीरे चढ़ना यह सूचित करता है कि वायु शुष्क है। इसका यह अर्थ है कि मौसम साफ रहेगा और वर्षा की संभावना नहीं है।

३. बैरोमीटर में पारे का धीरे-धीरे गिरना यह सूचित करता है कि ग्रीष्म ऋतु आ रही है, वर्षा की सम्भावना हो सकती है। जल वाष्प का घनत्व शुष्क वायु की अपेक्षा ५/८ होता है, इसलिए वायु में जल वाष्प अधिक होने पर दाब कम हो जाता है।

आर्द्रता
HUMIDITY

तापमान और वायु मण्डलीय दाब के बाद यह देखना होता है कि हवा में नमी कितनी है। इसकी माप करने के लिए उपकरण होता है उसे हाइग्रोमीटर (Hygrometer) कहते हैं यह सापेक्षिक आर्द्रता (Relative humidity) बताता है।

वायु की दिशा और वेग

मौसम में हवा का महत्वपूर्ण भाग है। वायु प्रायः दिशा बदलती रहती है, वायु ठण्डी और गर्म होती है, उसमें आर्द्रता को मात्रा घटती बढ़ती है। वायु का वेग कम ज्यादा होता है। ये सब बातें मौसम के विभिन्न रूप निर्माण करते हैं। कल्पना करिये कि पृथ्वी के धरातल में एक रूपता होती और पृथ्वी अपने अक्ष पर पश्चिम से पूर्व को घूमती न होती तो वायु की गति दिशा का मामला कितना सरल हो जाता किन्तु वस्तु स्थिति ऐसी नहीं है। पृथ्वी अपनी धुरी पर घूम रही है; सूर्य की अण्डाकार मार्ग पर परिक्रमा भी कर रही है। कही समतल भूमि है, समुद्री तरंग है, विभिन्न उँचाइयाँ हैं, इसलिए वायु की दिशा और गति भी विभिन्न हैं। अतः इसका अध्ययन एक क्लिष्ट विषय है। इसके लिए उपकरणों का आविष्कार किया गया है जो वायु की दिशा और गति बताते हैं।

वायु किस दिशा से आ रही है इसे मालूम करने के लिए भारत के प्राचीन मौसम विज्ञान में पताका एक सरल उपकरण था। मन्दिर के शिखरों पर गाँव-गाँव में लगी पताकायें वायु की दिशा बताती थीं और आज भी बता रहीं हैं। आधुनिक मौसम विज्ञान में यह कार्य एक उपकरण करता है जिसे विण्ड वेन (WIND VANE) कहते हैं। इसके साथ ही हवा की गति जानने का उपकरण भी है जो हवा कितने किलोमीटर या मील प्रति घण्टा की गति से चल रही है इसे भी रिकार्ड करता है। जैसे प्राचीन वर्षा विज्ञान (रोहिणी योग) में चार दिशायें और चार उपदिशाओं को लिया गया है वैसे ही इस नवीन उपकरण में भी लिया गया है। अन्तर यह है कि इसमें दिशाओं को ध्रुवों के आधार पर लिया है जबकि भारतीय मौसम विज्ञान ने रोहिणी योग में दिशाओं का निर्णय सूर्य के आधार पर किया है। प्राचीन मौसम विज्ञान में वायु की निश्चित गति जानने के किसी उपकरण का हवाला नहीं मिलता। पताका के अतिरिक्त वायु की दिशा जानने के लिए धूल और पतंग भी एक उपकरण था।

किसी संवहन या विक्षोभ की स्थिति के अलावा जबकि वायु

को दिशा ऊपर की ओर होती है, वायु हमेशा पृथ्वी के धरातल के समानान्तर चलती है। वायु की दिशा का कारण पृथ्वी के दो क्षेत्रों में वायु के दाब का अन्तर होता है। वायु उच्च दाब वाले क्षेत्र से निम्न दाब वाले क्षेत्र की ओर चलती है। दाब का यह अन्तर चाहे जितना कम हो हवा के रुख का नियम यही है। नक्शे में यह अन्तर आइसोबार रेखाओं से प्रदर्शित करते हैं (देखें चित्र)। आइसोबार रेखायें एक सीधी रेखा में न होकर टेढ़ी रेखाओं में इसलिए होती हैं कि वे उन बिन्दुओं से बनती हैं जहाँ एक प्रकार का दाब (PRESSURE) है।

यदि पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती न होती तो वायु उच्च दाब से निम्न दाब की ओर सीधी चलती और आइसोबार के साथ समकोण बनाती किन्तु स्थिति ऐसी नहीं है। पृथ्वी की गति के इस प्रभाव को विज्ञान में Coriol is Force कहते हैं। इसके अनुसार उत्तरी गोलार्द्ध में रुख दाहिनी और दक्षिणी गोलार्द्ध में बाईं ओर घूम जाता है। इस नियम को उन्नीसवीं शताब्दी में हालैण्ड के ऋतु वैज्ञानिक Buys Ballot ने बताया था। एक प्रयोग से इसे स्पष्ट किया जा रहा है।

जिस ओर से हवा आ रही हो ठीक उस ओर पीठ करके खड़े हो जायँ। अपनी दोनों बाहों को पृथ्वी के समानान्तर दोनों ओर फैला लें। फिर दाहिनी ओर ३० अंश घूम जायँ। आपका फैला हुआ बायाँ हाथ उस दिशा को इंगित करेगा जिस क्षेत्र में निम्न दाब (Low pressure) है– और दाहिनी भुजा उस ओर होगी जिधर उच्च दाब (High pressure) है।

उपर्युक्त उपकरणों के अतिरिक्त मौसम विज्ञान गुब्बारों और अन्तरिक्ष में प्रस्थापित सैटेलाइट से भी मौसम की जानकारी में मदद लेता है। इनसेट से फोटोग्रैफ प्राप्त कर मौसम की सूचना दूर-दर्शन पर दी जाती है। मौसम की जानकारी वायुयानों की उड़ान के लिए बहुत उपयोगी होती है।

अमेरिका में मौसम पर बहुत संगठित और व्यापक रूप से काम हो रहा है। इसकी एक झलक निम्नांकित उद्धरण से प्राप्त होगी–

The U. S. Weather Bureau offers most of its service free. The Bureau under the department of commerce meintains a nation wide network of over 12,000 weather stations operated on a co-operative basis with other governmental agencies, private organizations and individuals. Over 200 of these are classed as first order stations. They are usually located in cities or at major airports, are staffed with professional and sub-professional forecasters and observers and are charged with furnishing complete meteorological data. Most major stations send daily reports and make local forecasts. At a number of our major airports the weather stations work in close conjuncition with the Civil Aeronautics Authority, each giving information to the other.

The scope of the Weather Bureau service is indicated by the fact that every 24 hours the National Weather Analdsis Center in Washington receives;

22000 hourly surface reports.
8000 international six-hourly surface reports.
1000 ships reports.
1600 pilot balloon winds-aloft reports.
600 radiosonde reports.
400 rawinsonde reports.
800 reports from commercial aircraft in flight.
300 scheduled military weather-reconnaissance reports.
30 encoded transmissions.
16 facsimile transmissions.

उपर्युक्त विवरण से पता लगता है कि अमेरिका का मौसम विभाग कितना विशाल है जहाँ १२००० मौसम स्टेशन हैं जिनमें २०० प्रथम कोटि के हैं जो सभी आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित हैं। साथ ही वाशिंगटन का नेशनल वेदर एनालिसिस सेन्टर इतनी बड़ी संख्या में प्राप्त रिपोर्टों का विश्लेषण कर उनका रिकार्ड रखता है। हमारे कृषि प्रधान देश का मौसम विभाग इसके सामने कितना बौना है। अमेरिका का मौसम विभाग अपने देश में ही नहीं वरन् अन्य देशों के लोगों को भी फ्री सर्विस देता है इसका मुझे व्यक्तिगत अनुभव सन् १९७८ में हुआ जब मैंने कामर्स डिपार्टमेन्ट को सन् १९८० में प्रकट होने वाले

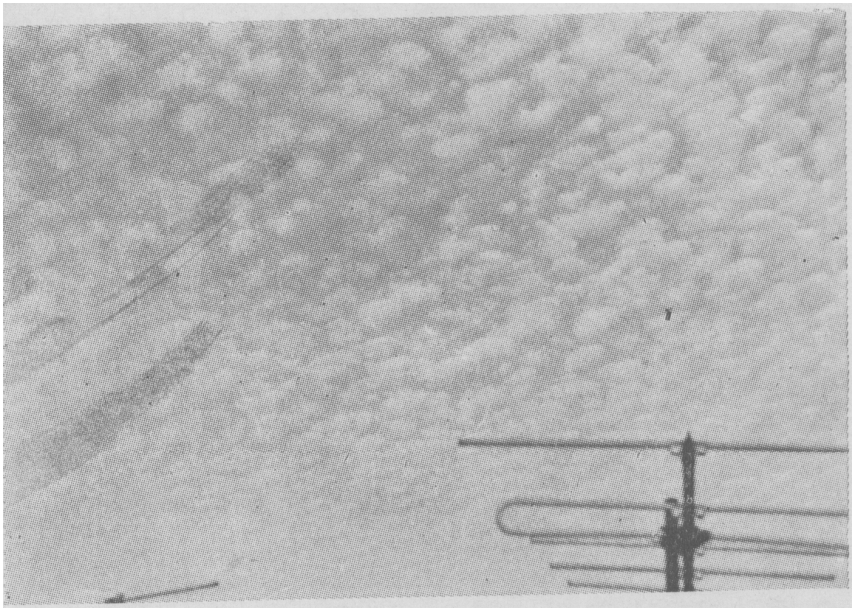

तीतर पंखी बादल - पृष्ठ १०५, ११६

पुरवैया के मेघ - STRATUS (वर्षाकारक बादल - पृष्ठ १५१)

कपासी मेघ CUMULUS. पृष्ठ १५१

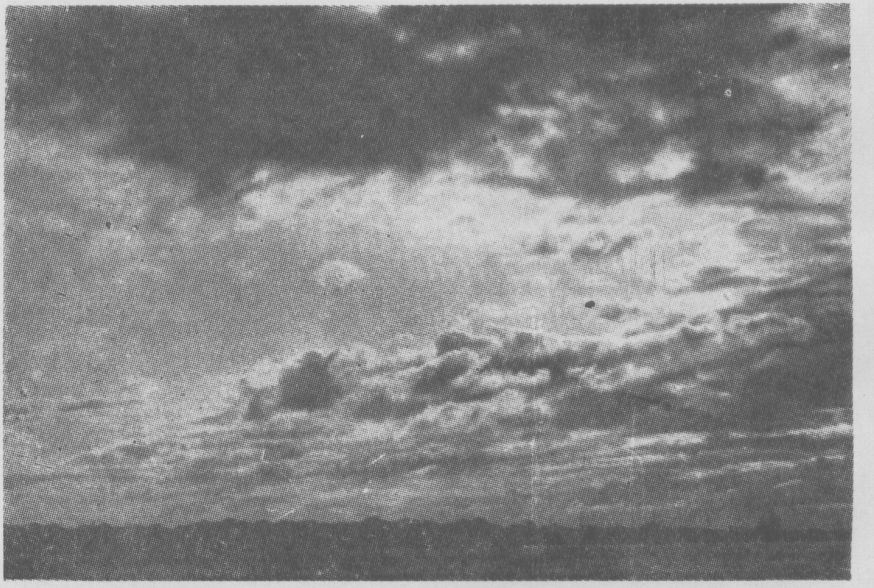

तूफानी बादल

सन स्पाट्स के आँकड़े भेजने को पत्र लिखा और वे मुझे दो सप्ताह के अन्दर प्राप्त हो गये। सौर धब्बों के इन आँकड़ों से मुझे ज्योतिष के शोध कार्य में बहुत सहायता मिली। मुझे पता नहीं कि हमारे देश का मौसम विभाग किस मंत्रालय के अन्तर्गत है। यह अवश्य पता है कि शोध कार्य के लिए कोई सूचना या आँकड़े प्राप्त करने को किसी विभाग को पत्र भेजा जाता है तो प्रायः वह अंधे कुएं में चला जाता है।

आधुनिक मौसम विज्ञान में मेघ निरीक्षण

भारत के प्राचीन वर्षा विज्ञान में मेघों के अध्ययन को बहुत महत्व दिया गया है, यह गर्भ धारण और शीघ्र वर्षा के लक्षण अध्यायों में विस्तार से बताया जा चुका है। आधुनिक मौसम विज्ञान ने इस विषय में क्या कार्य किया है उसे बताते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय मौसम विज्ञान समिति [International Meteorological committee] ने मेघों को दस श्रेणियों में विभाजित किया है। मूल रूप से मेघों के तीन वर्ग किये गये हैं। इसके दो आधार लिए हैं—एक बादल कितनी उँचाई पर है, दूसरा बादलों का आकार। एक चौथा वर्ग और है, किन्तु मूल [Basic] तीन ही हैं। इन्हीं के मिश्रित रूप से दस श्रेणियाँ बनाई हैं। वे इस प्रकार हैं-

१- पक्षाभमेघ [Cirus]—इनकी उँचाई २०००० फीट से ३५००० फीट तक होती है। इनका आकार पक्षी के पंख की तरह होता है।

२- कपासी मेघ [Cumulus]— इनकी उँचाई ६५०० फीट से २०००० फीट तक होती है। ये घुने हुए कपास की तरह होते हैं।

३- स्तरी मेघ [Stratus]—ये भूमि के स्तर से ६५०० फीट की उँचाई तक होते हैं। इनका कोई निश्चित आकार नहीं होता।

चौथा एक वर्ग वर्षा मेघ [Nimbus] का है। उपर्युक्त श्रेणी के बादलों से मिलकर कुल १० श्रेणियाँ बनाई हैं जिनके आधार पर वर्षा, साइक्लोन आदि की भविष्यवाणी करते हैं। इन १० प्रकार के मेघों के अंग्रेजी नाम और संकेताक्षर निम्नांकित हैं—

नाम (NAME)	संकेताक्षर (Abbr.)
1- Cirrus	Ci
2- Cirro-cumulus	Cc
3- Cirro-stratus	Cs
4- Alto-cumulus	Ac
5- Alto-stratus	As
6- Strato-cumulus	Sc
7- Stratus	St
8- Nimbo-stratus	Ns
9- Cumulus	Cu
10- Cumulo-nimbus	Cb

जिस प्रकार भारत के प्राचीन मौसम विज्ञान में किसी एक ही बिन्दु को पकड़ कर वर्षा की भविष्य वाणी नहीं होती उसी प्रकार आधुनिक मौसम विज्ञान में भी तापमान, वायु मण्डल दाब, आर्द्रता, वायु की दिशा और मेघों की स्थिति इन सबको लेकर नतीजा निकाला जाता है।

आधुनिक मौसम विज्ञान में लोकोक्ति का स्थान

घाघ भड्डरी की लोकोक्ति या कहावतें वर्षा के विषय में अध्याय ७ में वर्णन की हैं। भारत के सभी भागों में वहां की स्थानीय भाषा में लोकोक्तियाँ हैं। पाश्चात्य देशों में भी मौसम के सम्बन्ध में अनुभव के आधार पर कहावतों की रचना हुई हैं और वे प्रचलित हैं। आधुनिक विज्ञान का विकास न्यूटन के समय से प्रारम्भ हुआ है। मौसम विज्ञान का जो रूप आज है उसका सूत्रपात १९वीं शताब्दी से हुआ। जाड़ा, गर्मी, वर्षा, तूफान, ओला, हिमपात, इनका मुकाबला मानव अपने उत्पत्ति काल से करता आ रहा है, वह चाहे जिस देश का मनुष्य हो। इसलिए अपने अनुभव से उसने कुछ लक्षण ऐसे पकड़ लिए जिससे उसे आने वाले मौसम का पूर्वाभास हो जाय। जब मौसम विज्ञान के आधुनिक उपकरण नहीं थे तब आसपास की प्रकृति के लक्षण ही उसके उपकरण थे।

घाघ भड्डरी की कहावतें अनुभव और वृहत्संहिता के आधार पर निर्मित हुई हैं इसलिए ये उनमें प्रकृति निरीक्षण के साथ ही ज्योतिष

के ग्रह नक्षत्रों का भी समावेश है। अमेरिका में ज्योतिष विकसित नहीं हुआ था और वह कोई पुराना मुल्क भी नहीं है, यूरोप की अनेक जातियों का वहां आना हुआ। योरोप में भी भारत की तरह ज्योतिष का विकास नहीं था। जो थोड़ा बहुत था वह जातक स्कन्ध था, संहिता नहीं। इसलिए योरोपीय जातियाँ केवल प्रकृति के निरीक्षण से जो अनुभव लेकर आयी उनके आधार पर लोकोक्तियाँ प्रचलित हैं। यह अवश्य एक महत्वपूर्ण बात है कि– अमेरिका के मौसम विज्ञानियों ने प्रचलित लोकोक्तियों का विश्लेषण कर वहाँ की भौगोलिक स्थिति में जो खरी उतरी हैं उन्हें स्वीकार ही नहीं किया बल्कि मौसम विज्ञान की पुस्तकों में उनकी व्याख्या प्रस्तुत की है। यह उनके वैज्ञानिक दृष्टिकोण का परिचायक है। भारत में इस विषय का अमूल्य भण्डार भरा है किन्तु यहाँ के मौसम विज्ञानी उसे अछूत मानते हैं। वे बैरोमीटर और इनसेट के फोटो को ही पकड़े बैठे हैं। पाश्चात्य लोकोक्तियों में भी भारत की तरह पशु, पौधे और आकाश का निरीक्षण है। अधोलिखित वक्तव्य विचारणीय है–

Animal forecasting on a very short term basis, however, is frequently valid. Their bodies sense changes in pressure, temperature and moisture or better still, a combination of all three of them and they react accordingly.

-From weather and climate
by Clarence E. Koeppe

Many animals are fairly good short range weather prophets, for some of them scuttle to cover before a shower or when a storm of long duration is sensed.

-The realm of the air
by Charles F. Talman

भारतीय मौसम विज्ञान में एक लक्षण बताया है कि जब पौधे की पत्तियों का अग्रभाग आकाश की ओर उठ जाय तो समझना चाहिए कि वर्षा होने वाली है। ठीक ऐसी ही लोकोक्ति अमेरिका में प्रचलित है–

When leaves show their undersides,
Be very sure that rain bestides.

हवा, मेघ, कुहरा, ओस, इन्द्र धनुष, चन्द्रमा का मण्डल, चन्द्रमा का वर्ण, आकाश के रंग से सम्बन्धित अनेक अनुभूत कहावतें पाश्चात्य देशों में प्रचलित हैं और मौसम वैज्ञानिक उनका उपयोग करते हैं।

While the proverbs based upon the antics of plants and animals have quite limited utility, those based on careful observations and correct applications of many atmospheric phenomena may be very useful ..... . It is interesting to observe that by far the greatest number of tried and tested proverbs are concerned with atmospheric signs pointing to rain. The signs may be evident in clouds, wind, dew, fog, odors, smoke, or in more tangible items that are in turn affected by conditions of the air, such as the appearance of the moon, tne reaction of leaves and hair.

"जबकि पशु और पौधों के व्यवहार पर आधारित कहावतों की सीमित उपयोगिता है, वे कहावतें जो वातावरण के ध्यानपूर्वक निरीक्षण और सही उपयोग पर आधारित हैं अत्यन्त उपयोगी हो सकती हैं। यह एक दिलचस्प बात है कि अधिसंख्यक अनुभव की कसौटी पर कसी हुई कहावतें वातावरण के उन चिन्हों की हैं जो वर्षा को इंगित करती हैं। ये लक्षण बादल, वायु, ओस, कुहरा, वातावरण की गन्ध, धुआं अथवा अन्य मूर्त पदार्थ जो वायु से प्रभावित होते हैं जैसे कि चन्द्रमा का वर्ण तथा पत्तियों और बालों पर प्रतिक्रिया ये सब हो सकते हैं।"

अपने गाँव के किसान कहते हैं कि 'चन्द्रमा खेत किये है पानी बरसेगा' याने चन्द्रमा के आस-पास मण्डल है यह वर्षा का लक्षण है। ऐसी कहावत अंग्रेजी में भी है–

The moon with a circle brings water in her back.

चन्द्रमा या सूर्य के आस-पास प्रभा मण्डल (HALO) किस प्रकार बनता है इसका स्पष्टीकरण विज्ञान ने इस प्रकार किया है–

The refraction of light from the sun or moon by the ice crystals of high cirrus clouds causes the halo around the moon or sun. The angle from which one sees the luminary, eitner solar or lunar produces either a 22- degree or a 46 degree halo if the

thin cloud covering is complete enough, if the covering is incomplete, only portions of the halo may be visible.

परिवेष का विज्ञान ने जो स्पष्टीकरण ऊपर दिया है उसका ज्ञान भारत के प्राचीन विद्वानों को था, बल्कि आधुनिक वैज्ञानिकों से अधिक गहराई से उन्होंने इसे समझा था। परिवेष लक्षणम् में बराह मिहिर का निम्नांकित कथन इसका प्रमाण है–

सम्मूर्छिता रवीन्द्वोः किरणाः पवनेन मण्डलीभूताः।
नानावर्णाकृत यस्तन्वभ्रे व्योम्नि परिवेषाः ॥१॥

अर्थात् "सूर्य और चन्द्र की किरणें वायु के द्वारा आकाश में स्वल्प मेघ के कारण मण्डलाकार आकृति बनाती हैं उसे परिवेष कहते हैं ये अनेक वर्ण और आकृति के होते हैं।"

आधुनिक विज्ञान ने तो केवल परिवेष के निर्माण का कारण खोजा है, भारत के वैज्ञानिकों ने परिवेष के रंगों का भी गहराई से अध्ययन किया था और विभिन्न ऋतुओं से उनके रंगों का समायोजन किया। वराह कहते हैं–

ते रक्तनील पाण्डुरकापोताभ्रा भशबल हरित शुक्लाः।
इन्द्र यम वरुण निर्ऋतिश्वसनेश पितामहाम्बुकृताः ॥२॥

इस श्लोक में विभिन्न रंगों के परिवेष का वैदिक देवताओं से सम्बन्ध स्थापित किया है। ध्यान रहे वैदिक देवता प्रकृति की विभिन्न शक्तियों के प्रतीक हैं। रंगों का सम्बन्ध देवताओं से इस प्रकार किया है--

"लाल-इन्द्र। नील-यम। पाण्डुर-वरुण। कबूतर के रंग का-निर्ऋति। मेघ के रंग का-वायु। कृष्ण श्वेत-शंभु। हरित-पितामह। श्वेत वर्ण-वरुण।"

भारत में ६ ऋतुयें होती हैं। किस ऋतु में किस वर्ण का परिवेष शुभ है यह भी बताया है–

चाष शिखि रजत तैल क्षीर जलाभः स्वकाल सम्भूतः।
अविकलवृतः स्निग्धः परिवेषः शिव सुभिक्षकरः ॥३॥

"नीलाभ शिशिर, मयूर वर्ण वसन्त, श्वेत ग्रीष्म, तैल वर्ण वर्षा

क्षीर वर्ण शरद और जलाभ (जल की कान्ति वाला स्निग्ध और पूरा वृत्त (टूटा हुआ नहीं) हो तो वह लाभकारी सुभिक्ष का सूचक है अर्थात् ऋतु के हिसाब से आदर्श ऋतु होगी यह प्रकट करता है।"

यह तुलनात्मक अध्ययन परिवेष का हमने इसलिए प्रस्तुत किया जिससे कि पाठकों के मन से यह धारणा निकल जाय कि आधुनिक विज्ञान बहुत उन्नत है। भारत के मनीषियों ने प्रकृति की गहराई से खोजकर जो बहुमूल्य ज्ञान का भण्डार हमें दिया है उसे अध्ययन कर उससे लाभ उठाना यह हमारी मानसिकता पर निर्भर है। कैसी बिडम्बना है कि जब पाश्चात्य वैज्ञानिक अपने यहां लोकोक्तियों का वैज्ञानिक विश्लेषण कर रहे हैं, हमारे वैज्ञानिक प्राचीन ग्रन्थों में संकलित वैज्ञानिक तथ्यों को देखना भी नहीं पसन्द करते।

मौसम की जानकारी के लिए चन्द्रमा का अध्ययन बहुत महत्व का है। वर्षा के सम्बन्ध में भारतीय ज्योतिष में इस विषय की बहुत सामग्री है। यह पूर्वाध्यायों के अध्ययन से पाठकों को स्पष्ट हो चुका होगा। पाश्चात्य लोकोक्ति में भी चन्द्रमा को महत्व दिया है। एक लोकोक्ति है-

Pale moon doth rain,
Red moon doth blow,
white moon doth neither rain nor snow.

इसकी वैज्ञानिक व्याख्या इस प्रकार की गई है जो कि वहाँ की भौगोलिक स्थिति के अनुरूप है-

The pale moon signifies a thin, high cloud covering such as precedes a storm condition, again being the forerunner of lower, rain bearing clouds that are located farther west. The red moon also indicates high humidity attendant upon the approach of a storm center. The white moon means clear and dry atmospheric conditions.

पाश्चात्य लोकोक्तियों के इस प्रसंग को देने का हमारा यह उद्देश्य है कि हमारे देश के मौसम विज्ञानी भी जहां हर मामले में पाश्चात्यों का अनुसरण करते हैं वही भारत में प्रचलित लोकोक्तियों पर भी विचार अध्ययन प्रस्तुत कर उनका अनुरण करें।

भारत में हजारों वर्षों में विकसित वर्षा विज्ञान का विस्तार से और आधुनिक मिटिआरालाजी का आवश्यक संक्षिप्त परिचय पिछले पृष्ठों में देने के बाद अब दोनों की तुलनात्मक समीक्षा करनी है। इसके पूर्व कि हम समीक्षा करें एक प्रश्न रखना चाहते हैं–

मौसमों में प्रतिवर्ष अनिश्चतता क्यों ?

इस प्रश्न का उत्तर प्राचीन वर्षा विज्ञान से सम्बन्ध रखता है, साथ ही दोनों के बीच क्या अन्तर है इसे स्पष्ट करेगा। प्रथम दृष्टया हर वर्ष मौसमों में अन्तर नहीं होना चाहिए क्योंकि पृथ्वी की एक निश्चित कक्षा है जिस पर वह सूर्य की परिक्रमा कर रही है। पृथ्वी की गति जिसे सूर्य पर आरोपित किया गया है याने जिसे ज्योतिष में सूर्य की गति कहते हैं वह अवश्य घटती-बढ़ती रहती है किन्तु हर वर्ष के उसी महीनों में वह लगभग एकसी रहती है। सूर्य कक्षा मण्डल के ठीक केन्द्र बिन्दु पर नहीं है। 'केपलर्स ला' के अनुसार पृथ्वी जब सूर्य के निकटतम (Peribelion) होती है तब पृथ्वी की गति तीव्रतम होती है। वह ६१ कला १० विकला के आसपास ३ जनवरी को होती है। उस समय सूर्य और पृथ्वी के मध्य निकटतम दूरी ९१४००००० मील होती है। ४ जुलाई को जब दूरतम (Uphelion) होती है तब पृथ्वी की गति ५७ कला १० विकला के लगभग होती है। उस समय सूर्य और पृथ्वी की गति में यह चढ़ाव-उतार सूर्य की चुम्बकीय शक्ति के कारण होता है।

भारतीय और पाश्चात्य विद्वान सभी सूर्य को ऋतु कर्ता मानते हैं। जब पृथ्वी और सूर्य का सम्बन्ध नियमबद्ध है तो ऋतुओं में भी नियमबद्धता होनी चाहिए। एक निश्चित तारीख पर समाप्त हो जानी चाहिए। आज की तारीख में किसी नगर का जो तापमान है वह प्रति वर्ष उस तारीख को होना चाहिए। ज्योतिष की दृष्टि से वर्षा का आरम्भ सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र प्रवेश २१–२२ जून से होता है, किन्तु हर साल २१–२२ जून को वर्षा प्रारम्भ नहीं होती। मौसम प्रारम्भ होने की तारीख, तापमान में, वर्षा की मात्रा में भौगोलिक दृष्टि से विना कोई परिवर्तन हुए एक ही स्थान पर प्रतिवर्ष यह अन्तर क्यों ? मौसम

का यह छलिया रूप क्यों ?

इस प्रश्न का उत्तर मौसम की अनिश्चतता के रहस्य का उद्घाटन कर सकता है। ज्योतिष शास्त्र के प्राचीन प्रणेताओं ने उन कारणों की खोज हजारों वर्ष पूर्व कर ली थी जिनसे मौसम का रूप बदलता रहता है। बृहस्पति, नारद, पराशर, कश्यप, गर्ग, वज्र, मय, वराहमिहिर एक लम्बी परम्परा है दिव्य दृष्टा मनीषियों की जिन्होंने ग्रह नक्षत्रों के पारस्परिक सम्बन्ध से निर्मित होने वाले प्रभाव और प्रकृति तथा वातावरण का सूक्ष्म अध्ययन कर कुछ सिद्धान्त निर्धारित किये हैं जिनका अनुसरण कर भारतीय ज्योतिषी वर्षा और मौसम की सटीक भविष्यवाणी करते हैं। यह अलग बात है कि वैज्ञानिक और पाश्चात्य शिक्षा से प्रभावित सरकारी तन्त्र उन पर ध्यान नहीं देते।

वर्षा का भविष्य मालूम करने के लिए दो आधार हैं–

१. प्रकृति का निरीक्षण अर्थात् मेघ, वायु की दिशा और आर्द्रता, वायु मण्डल का दाब, तापमान, पशु पक्षियों कोड़े-मकोड़ों की चेष्टायें तथा पेड़-पौधों की स्थिति।

२. ग्रह नक्षत्रों की स्थिति, उनके पारस्परिक सम्बन्ध और उनका भूमण्डल पर प्रभाव।

मिटिरियालाजी केवल प्रथम आधार को लेकर चलता है। भारतीय मौसम विज्ञान दोनों आधारों को मानता है। आधुनिक मौसम विज्ञान का अध्ययन केवल ट्रोपोस्फियर तक सीमित है। क्षोभ मण्डल में क्षोभ क्यों होता है इसके कारण को जानने की चेष्टा नहीं करता। अब इस ओर कुछ वैज्ञानिकों का ध्यान गया है कि ट्रोपोस्फियर के आगे भी अध्ययन करें। १६ अक्टूबर १६८७ की टाइम मैगजीन में 'ग्रीनहाउस इफेक्ट' पर एक लम्बा लेख है जिसमें ओजोन क्षीणता और उसके भयंकर परिणामों पर विचार व्यक्त किये गये हैं। यह आयनोस्फियर का क्षेत्र है जो ट्रोपोस्फियर के ऊपर तीसरे क्रम पर है। यह जानी हुई बात है कि सन स्पाट्स के ११ वर्षीय चक्र में आयनोस्फियर उद्वेलित होकर मौसमों को अस्त-व्यस्त करता है। आशा है कि भविष्य में ऋतु विज्ञानी आयनोस्फियर के एक सीढ़ी और चढ़कर एक्सोस्फियर पर भी ध्यान केन्द्रित करेंगे और तब उन्हें क्षोभ मण्डल में होने

वाले क्षोभ का कारण मालूम हो जायगा जिसे कि भारतीय ज्योतिष मालूम कर चुका है और उस आधार पर भारत के ज्योतिषी के सामने यदि अगले पचास वर्ष के ग्रहों के विवरण हों तो बिना किसी यन्त्र के अगले वर्षो में कैसीं वर्षा होगी केवल गणना द्वारा उसका सामान्य और विस्तृत विवरण दे सकता है। हमारा यह कथन कल्पना की उड़ान नहीं तथ्यों पर आधारित है। कुछ प्रमाण पेश हैं।

पं० ईश्वरदत्त शर्मा कृत शताब्दी पंचांग का प्रथम संस्करण सन् १९६२ में प्रकाशित हुआ था। इसमें विक्रमी संवत् २००१ से सं० २१०० (सन् १९४४ से सन् २०४३ ई०) तक के पंचांग हैं। उसमें सं० २०४४ (सन् १९८७) के पंचांग पृष्ठ ६१६ पर लिखा है–

श्रावण में आगे चला रवि रथ से कुज राय।
भाद्रव कृष्णा पाख लौं वर्षा स्वल्प दिखाय॥

सन् १९८७ में भाद्र शुक्ल पक्ष २४ अगस्त को आरम्भ हुआ। २५ अगस्त को सूर्य मंगल की युति के बाद जैसे ही सूर्य मंगल के आगे हुआ व्यापक रूप से वर्षा आरम्भ हो गयी। दूसरा प्रमाण- सन् १९७९ (विक्रम संबत् २०३६) में सन् १९८७ से ठीक विपरीत स्थिति थी। २२ जून १९७९ को सूर्य ने आर्द्रा प्रवेश किया। अगस्त के प्रथम सप्ताह तक वर्षा हुई। इसके बाद मानसून के अन्त तक वर्षा नहीं हुई, सूखा पड़ गया। इसी शताब्दी पंचांग के संवत् २०३६ पृष्ठ ५०४ पर स्पष्ट लिखा है–

आषाढ़ा वर्षा लगे श्रावण शुक्ल पहान।
भाद्रव षड्ग्रह योग से जग हो सी हान॥

भाद्रकृष्ण पक्ष में सूर्य, शुक्र, बुध, वृहस्पति, चन्द्र, राहु का षड् ग्रह योग था, वहीं से वर्षा रुक गई। ये भविष्यवाणी पंचांग के प्रकाशन सन् १९६२ के कई वर्ष पूर्व गणना करके लिखी गई होंगी क्योंकि इस पंचांग में १४५६ पृष्ठ हैं। यदि हम प्रकाशन का वर्ष १९६२ ही भविष्यवाणी का वर्ष मान लें तो भी २५ और १७ वर्ष पूर्व ये भविष्यवाणी की गई थीं। सन् १९७९ में षड् ग्रही योग के साथ सनस्पाट्स का भी प्रभाव था।

इस पुस्तक के लेखक ने भी अपनी पुस्तक कूर्म चक्र में सन्

१९८७ के विषय में अवर्षण की भविष्यवाणी की थी। सन् १९८८ के लिए भी हमने वर्षा की जो भविष्यवाणी रश्मि विज्ञान पत्रिका के मई अंक पृष्ठ ५५ पर और नवभारत टाइम्स (लखनऊ) के ८ जून के अंक में की थी वह पूरे वर्ष की सही उतरीं।

इन सारी लांगरेन्ज भविष्यवाणियों का आधार ग्रह नक्षत्रों के पारस्परिक सम्बन्ध अर्थात् ग्रहयोग होते हैं। किन ग्रहों के किन सम्बन्धों से क्या प्रभाव होते हैं इनके सूत्र और नियम हैं उनके आधार पर प्रभाव बताया जाता है। वे ग्रह योग जो वर्षा कारक या अवर्षण कारक हैं कब निर्माण होंगे उसके द्वारा समय का ज्ञान होता है। किसी खास किस्म का प्रभाव जिसका कि टाइम निकाला है वह होगा किस स्थान पर इसका ज्ञान कूर्म चक्र और सर्वतो भद्र चक्र से होता है।

भारतीय पंचांगों में जो कि प्रतिवर्ष मानसून के ६ महीने पूर्व प्रकाशित हो जाते हैं वर्षा का पाक्षिक रुख क्या रहेगा इसे छापते हैं जो ७५–८० प्रतिक्षा सही उतरता है किन्तु उसको मौसम विज्ञानी पढ़ना पसन्द नहीं करते क्योंकि वे ज्योतिष के पण्डितों द्वारा लिखी गई हैं। उनकी यह विचारधारा मौसम विज्ञान की उन्नति और देश के हित में नहीं है। इस संदर्भ में सन् १९८८ की एक दुखद घटना उल्लेखनीय है।

मानसून समाप्तप्राय था कि २३ से २६ सितम्बर १९८८ के बीच केवल चार दिनों में भाखड़ा क्षेत्र में ६४० मि. मी. और पोंग क्षेत्र में ६४४ मि. मी. वर्षा रिकार्ड की गई। २२ से २६ दिसम्बर के मध्य बादल फटने की यह घटना हुई। उसके पहिले से ही दोनों जलाशयों में भरपूर पानी भरा था। इतनी अधिक वर्षा हो जाने से (भाखड़ा में केवल ४५ मिनट में ८५ मि. मी. वर्षा हुई) बाँध को खतरा पैदा हो गया इसलिए २५ से २६ सितम्बर के बीच भाखड़ा बांध से ४ लाख क्यूसेक पानी छोड़ा गया। इसी प्रकार ४ दिनों में पोंग बाँध से ७ लाख क्यूसेक पानी छोड़ा गया। दोनों जलाशयों से प्रभावित १० फीट ऊँचे पानी के रेले ने चन्द घण्टों में गाँव के गाँव डुबो दिए, पूरी संचार व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गयी। जालंधर, अमृतसर, गुरुदासपुर, फिरोजपुर

और कपूरथला जिलों में भयानक तबाही मच गयी। खरीफ की फसल का ७५ से ८० फीसदी भाग जल मग्न होकर बर्बाद हो गया। प्रारम्भिक अनुमानों के अनुसार ३०० से ५०० करोड़ रुपये का अकेले कृषि क्षेत्र को नुकसान हुआ। सरकारी आंकड़ों के अनुसार ६०७ लोग मारे गये और ६२ लापता हैं। गैर सरकारी संख्या १५०० मृत और ५०० लापता है।

भाखड़ा व्यास प्रबन्धन बोर्ड के अध्यक्ष मेजर जनरल बी. एन. कुमार मौसम विभाग को दोषी ठहराते हैं कि इसने भारी बारिश की चेतावनी पहिले नहीं दी। मौसम विभाग ने पूरे सितंबर महीने के लिए केवल १२१ मि. मी. वर्षा की भविष्यवाणी की थी। स्थिति मौसम विभाग के महानिर्देशक की एक विज्ञप्ति के कारण भी विकट हो गयी जिसमें कहा गया था कि सितम्बर में १८ फीसदी कम वर्षा होने की सम्भावना है। इसलिए बाँधों के अधिकारी केवल १०० मि. मी. वर्षा की उम्मीद कर रहे थे। इसलिए भाखड़ा जलाशय में पानी का स्तर अपनी अधिकतम क्षमता १४०० फीट के आसपास रखा गया था।

–इंडिया टुडे ३१ अक्टूबर १९८८

उपर्युक्त घटना से यह जाहिर होता है कि मौसम विभाग की गलत भविष्यवाणी से इतनी बड़ी राष्ट्रीय जान माल की क्षति हुई। मौसम विभाग की गल्ती का दण्ड बी. एन. कुमार को अपने जीवन की कीमत देकर चुकाना पड़ा।

इस घटना के सन्दर्भ में एक तकनीकी सवाल यह पैदा होता है जब श्री आर० पी० सरकर, डिप्टी डाइरेक्टर जनरल आफ मिटियारालाजी (क्लाइमेटालाजी एण्ड जियोफिजिक्स) मिटिआरालाजिकल आफिस, पुणे अपने एक प्रकाशित पेपर Droughts In-India And Their Predictability में स्पष्ट कहते हैं– "As of today scientific methods for weather prediction beyond a range of 72 hours are still experimental." अर्थात् ७२ घण्टे से आगे की मौसम की भविष्यवाणी के वैज्ञानिक तरीके अभी तक प्रयोगात्मक हैं, तो पूरे सितम्बर मास की १२१ मि. मी. वर्षा की मात्रा की भविष्यवाणी किस 'साइन्टिफिक

मेथड' से की गयी यह मिटियारालाजी डिपार्टमेन्ट ही बता सकता है। हम इतना अवश्य बता सकते हैं कि दिल्ली से प्रकाशित राजधानी पंचांग संवत् २०४५ के पृष्ठ ३५ पर भाद्र शुक्ल पक्ष तारीख १२ से २५ सितम्बर १९८८ के लिए मौसम की भविष्यवाणी में स्पष्ट लिखा है— "सूर्य बुध का राशि चार, गुरु का गति परिवर्तन वर्षा कारक है अतः मिले-जुले फल होंगे, कहीं जलाधिक्य से कहीं अवर्षण से हानि की संभावना जाननी चाहिए।"

काशी से प्रकाशित चिन्ता हरण पंचांग सम्वत् २०४५ के पृष्ठ ५० पर सितम्बर के मौसम के लिए भविष्यवाणी है– "ता० १६-१७-१९-२४-२६-२७-२८ को अच्छा वृष्टि का योग है। बुध सूर्य के अभी भी आगे है। अतः वर्षा में व्यक्तिक्रम बना रहेगा, कहीं अधिक वर्षा कहीं सूखा पड़ेगा।"

मार्तण्ड पंचांग ने भी सितम्वर में वर्षा का योग लिखा है। सम्भव है अन्य पंचांगों ने भी लिखा हो किन्तु अन्य पंचांग मेरे देखने में नहीं आये।

इस लेखक ने भी ३० मई १९८८ को कानपुर में मौसम पर सेमिनार आयोजित किया था जिसमें कहा था कि सन् १९८७ में सूखा पड़ा था, इस वर्ष गीला पड़ेगा। अतिवृष्टि और बाढ़ से खरीफ की फसल को भारी नुकसान होगा।

भारत के ज्योतिषी ये सटीक लांगरेन्ज भविष्य वाणी कैसे करते हैं, इसका पूर्व अध्यायों में वर्णन कर चुके हैं। भारत के ज्योतिषियों को यदि सहायता और सहयोग सरकार की ओर से मिले तो वे मौसम के विषय में तारीखवार मैं स्थान के भविष्यवाणी कर सकते हैं इसमें कोई सन्देह नहीं। जिन पंचांगकारों ने भाद्र शुक्ल पक्ष सितम्बर के उत्तरार्द्ध में वर्षा की भविष्यवाणी की थी और तारीखें भी एक पंचांग ने दीं उन सबने आपस में सलाह करके पंचांग नहीं प्रकाशित किये थे कि सब का एक मत हो गया। अवश्य उनके पास कोई वैज्ञानिक आधार और सिद्धान्त हैं जिनका हम आगे खुलासा करेंगे। अभी हम २२ से २६ सितम्बर १९८८ की भयंकर वर्षा की ज्योतिषीय समीक्षा

वर्षा विज्ञान में रुचि रखने वाले पाठकों के लिए निम्नांकित पंक्तियों में इस पुस्तक में वर्णित नियमों के आधार पर दे रहे हैं–

तारीखवार वर्षा की भविष्यवाणी के लिए मुख्य आधार सप्त नाडी चक्र हैं। इसमें ग्रहों की नाक्षत्रिक स्थिति सर्व प्रथम मालूम की जाती है। जैसा कि सप्तनाडी चक्र अध्याय ५ में बताया है कि जब अधिकांश ग्रह सौम्य, नीर, जल, अमृता नाडी में होते हैं, जलीय ग्रह चन्द्र भी जब गोचर में इन्हीं नाडियों में आता है तो वर्षा का योग बनता है। यदि जलीय ग्रह चन्द्र और शुक्र का युति या दृष्टि सम्बन्ध बन जाय विशेष कर जलीय राशियों में तो भारी वर्षा होती है। ता० २२ से २६ सितम्बर तक ग्रहों की नाक्षत्रिक स्थिति चक्र में ध्यान से देखिए–

ता० २२-९-१९८८ से २६-९-१९८८

ग्रह	नक्षत्र	नाडी	नक्षत्र-दिशा
सूर्य	उ. फाल्गुनी-हस्त	नीर-सौम्य	दक्षिण
चन्द्र	श्र., ध., पू., भा.	अमृता-जल	उ. प.-उत्तर
	उ. भा.	नीर-सौम्य	
मंगल	उ. भा.	सौम्य	उत्तर
बुध	चित्रा	दहना	दक्षिण
गुरु	रोहिणी	वायु	मध्य
शुक्र	आश्लेषा	अमृता	द० पू०
शनि	मूल	दहना	पश्चिम
राहु	पू. भाद्र.	नीर	उत्तर

सूर्य, चन्द्र, मंगल, शुक्र, राहु वर्षा कारक नाडियों में थे। गुरु

वायु नाड़ी में था। अतः वायु के साथ वर्षा। चन्द्रमा २२ से २६ सितंबर तक वर्षा कारक नाड़ियों में था। ता० २७ को दहना नाडी रेवती में गया। वर्षा की तारीखें चन्द्र संचार से मालूम होती हैं। राशिगत स्थिति चन्द्रमा की २२-२३ को मकर राशि (पूर्ण जलीय राशि) में, २४-२५ को कुम्भ (अर्द्ध जलीय) और २६ को मीन (पूर्ण जलीय) राशि में थी। तारीख २२-२३ को चन्द्र मकर और शुक्र कर्क पूर्ण जलीय राशि में स्थित होकर दृष्टि सम्बन्ध बना रहे थे।

यह घटना भाखड़ा में ही क्यों घटी ? स्थान का संकेत कूर्म-चक्र और सर्वतोभद्र चक्र से प्राप्त होता है। शनि मूल नक्षत्र पश्चिम दिशा में था। वाम वेध उत्तर दिशा 'भ' अक्षर मकर-कुम्भ राशि को कर रहा था। नामाक्षर से भाखड़ा का नक्षत्र मूल है जिस पर शनि की स्थिति थी। वक्री मंगल और राहु उत्तर दिशा के नक्षत्रों पर थे। कूर्म चक्र का केन्द्र स्थान उज्जैन रेखांश ७५-४३ पू० देशान्तर २३-९ उ० है। भाखड़ा की स्थिति भी ७६ रेखांश पर है अर्थात् कूर्मचक्र के केन्द्र बिन्दु से ठीक उत्तर दिशा में भाखड़ा की स्थिति है। अधिकांश ग्रह उत्तर दिशा के नक्षत्रों पर थे। ता० २३-२४-२५ को वृहस्पति स्तब्ध था। २४ को वृहस्पति वक्री हुआ। पृथ्वी की कक्षा के ऊपर के ग्रह मंगल, गुरु, शनि जब स्तब्ध होते हैं तो बहुधा कोई प्राकृतिक उपद्रव होता है।

ज्योतिष शास्त्र मौसम की भविष्यवाणी में ग्रह नक्षत्रों को क्यों महत्व देता है तथा मौसम की अनिश्चितता के क्या कारण हैं आगे इस पर विचार करेंगे। अन्त में इस पुस्तक के विभिन्न अध्यायों में वर्णित विषय वस्तु को प्रायोगिक रूप किस प्रकार दिया जाय इस पर विचार किया जायेगा।

सिद्धान्त

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में एकात्मता है। वस्तुयें अलग-२ दिखाई दे रही हैं परन्तु वे सभी एक ही प्रकार के मूल तत्वों से बनी हैं और एक अदृष्ट शक्ति कुछ नियमों के अन्तर्गत उनका संचालन कर रही है। प्राचीन तत्व-वेत्ताओं ने प्रकृति के उन सिद्धान्तो का अन्वेषण करने में

अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया था। सिद्धान्त मालूम हो जाय तो कार्य कारण सम्बन्ध के आधार पर आगे क्या होने वाला है यह ज्ञात हो जाता है। हर क्रिया या घटना का बीज होता है। बीज के गुण धर्म का ज्ञान हो जाय तो उससे उत्पन्न होने वाले बृक्ष और फलों के रूप का भी ज्ञान हो जाता है। आकाशी पिण्डों को निरर्थक या निर्जीव मान कर यह धारणा बना लेना कि वे पृथ्वी पर या हमारे ऊपर कोई प्रभाव नहीं डाल सकते एक मिथ्या धारणा है। यहीं आधुनिक मौसम विज्ञान चूक जाता है।

सौर मण्डल में पृथ्वी सहित सभी ग्रह उपग्रह नियम बद्ध संचरण कर रहे हैं। पृथ्वी जब एक निश्चित कक्षा में सूर्य की परिक्रमा कर रही है तो मौसमों में उलट-फेर क्यों ? आधुनिक विज्ञान ने यह मालूम किया कि अधिक दाब कहां है और न्यून दाब कहां है, किन्तु प्रेशर के कम या अधिक होने के कारण क्या है ? हर मौसम प्रति वर्ष एक समान क्यों नहीं होता। इसका कारण पृथ्वी और सूर्य के अतिरिक्त अवश्य कोई अन्य शक्तियाँ हैं। आइये उन पर विचार करें।

१- हमारा सूर्य अपने पूरे परिवार को साथ लिए हुए एक महासूर्य की १२ मील प्रति सेकण्ड की गति से परिक्रमा कर रहा है। आधुनिक विज्ञान उसे हर-क्यूलिस कहते हैं, कुछ विद्वान उसे अभिजित मानते हैं। यह परिक्रमा पथ सौर मण्डल के ग्रहों की कक्षा के समान नहीं है। यह 'स्पाइरल या स्क्रूटाइप' है अर्थात् यह निरन्तर छोटा होता जा रहा है। इसके कारण इस क्षण हम अन्तरिक्ष में जिस स्थान पर हैं वहाँ फिर कभी नहीं आयेंगे। सौर मण्डल की इस गति से महासूर्यों से आने वाली अदृष्ट किरणों जिन्हें ब्रह्माण्डीय किरणें कह सकते हैं उनके कोण निरन्तर बदल रहे हैं। अतः उनका प्रभाव भी बदलना चाहिए। यह परिवर्तन भी मौसम पर प्रभाव डालता है।

२- बसन्त सन्ताप बिन्दु वाम गति (५०.२३८८ विकला) से चलनशील है। यह एक नक्षत्र में ९५५.४३५९ वर्ष रहता है। ७१.८३ वर्ष में एक दिन पीछे हट जाता है। २१५५ वर्ष में एक मास पीछे

खिसक जाता है अतः ऋतु के प्रारम्भ का दिन परिवर्तनशील है।

३. यद्यपि पृथ्वी और सूर्य का सम्बन्ध प्रतिवर्ष एक सा हर ऋतु में दिखाई देता है किन्तु सौर मण्डल के अन्य ग्रहों के पृथ्वी के संबध बदलते रहते हैं। बदलते सम्बन्धों (Relative Distance) का प्रभाव एक्सोस्फियर आयनोस्फियर स्ट्रेटोस्फियर के माध्यम से होता हुआ ट्रोपोस्फियर पर होता है। ११ वर्ष के चक्र में जब सूर्य में धब्बे (Sun Spots) जिन्हें वराहमिहिर ने केतु कहा है, प्रकट होते हैं तो आयनोस्फियर में उसकी तीव्र प्रतिक्रिया होती है। मौसम अस्त-व्यस्त हो जाते हैं। सन् १९७९ में सौर धब्बे प्रकट हो रहे थे। इस प्रकार ऊपरी स्फियर नीचे के मण्डलों को प्रभावित करते हैं यह सिद्ध होता है।

४. महर्षि गर्ग और वराहमिहिर ने दिव्य (Celetial) अंतरिक्ष (Atmospheric) और भौम (Terrestrial) उत्पातों का वर्णन किया है। जब ये प्रकट होते हैं तो वर्षा अस्त-व्यस्त हो जाती है। उत्पात का अर्थ प्रकृति के सामान्य नियमों के विरुद्ध आकस्मिक रूप से चिन्ह या व्यवहार है। प्राचीन वर्षा विज्ञान उपर्युक्त सभी तथ्यों को अपनी दृष्टि में रखता है। नं०-३ और नं-४ की विस्तार से समीक्षा कर तब वर्षा या मौसम का भविष्य बताता है। वर्षा के विषय में उसकी कार्य पद्धति इस प्रकार है।

१. दीर्घकालीन भविष्य (Longrange Forecast)– इसमें सूर्य के आर्द्रा प्रवेश को लग्न बनाकर ग्रह, राशि और भावों के आधार पर देश की विभिन्न दिशाओं में वर्षा का सामान्य रुख (General Trend) क्या होगा यह माना जाता है।

२. **मध्यमकालीन भविष्य** (Medium Range Forecast)– इसमें मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष में जब चन्द्रमा पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में जाता है वहाँ से प्रारम्भ कर चैत्र तक आकाश में उठने वाले बादल, हवा का रुख वर्षा का निरीक्षण कर साढ़े ६ मास आगे की वर्षा की तिथि, मात्रा, क्षेत्र जाना जाता है। यह निरीक्षण नवम्बर के उत्तरार्द्ध या दिसम्बर के प्रारम्भ से मार्च तक चलता है। यह क्षेत्रीय निरीक्षण है जिसे देश

के विभिन्न भागों में करना होता है। इससे क्रमांक-१ में ज्ञात वर्षा के सामान्य रुख का विस्तृत विवरण स्थान, काल, मात्रा और अवधि का ज्ञान होता है।

३. **अल्पकालीन भविष्य** (Short Range Forecast)– सूर्य के आर्द्रा प्रवेश के आस-पास आषाढ़ कृष्ण पक्ष में जब चन्द्रमा रोहिणी नक्षत्र में जाता है उस समय वायु परीक्षण का विधान है। इससे निकट भविष्य में प्रारम्भ होने वाली वर्षा कैसी होगी ये मालूम होता यह वायु परीक्षण का प्रयोग है इससे वायु मण्डल के दाब की जानकारी होती है।

४. इसके अतिरिक्त सूर्य जब एक राशि को छोड़कर दूसरी राशि में आता है उस समय चन्द्रमा किस नक्षत्र में है इसके आधार पर संक्रान्ति अग्निमण्डल, वायुमण्डल, वरुणमण्डल या महेन्द्रमण्डल किसमें पड़ी है इससे एक महीने में तापमान, या वर्षा कैसी रहेगी ये मालूम होता है। सूर्य की अगली संक्रान्ति प्रारम्भ होने पर पुनः एक महीने का मौसम का भविष्य देखा जाता है।

५. सप्तनाडी द्वारा ग्रहों की नाक्षत्रिक स्थिति और उनमें चन्द्रमा के बनने वाले योग वर्षा की संभावित तारीखें बताते हैं।

६. अन्त में भविष्यवाणी का सबसे छोटा दायरा सद्यः वृष्टि लक्षण के अन्तर्गत है। यह स्थानीय रूप में एक-दो दिन के अन्दर वर्षा होने वाली है इसकी सूचना देता है। इसमें ३ उपकरण हैं– १- पशु, पक्षी, कीड़े-मकोड़े, पौधों का निरीक्षण। २- हवा का रुख और बादल ३- वर्षा कारक और अवरोधक ग्रहों की स्थिति।

प्रयोग विधि

(१) आर्द्रा प्रवेश लग्न से सम्पूर्ण देश में वर्षा का सामान्य रुख (Genral Trend) विभिन्न दिशाओं का मालूम कर लिया जाय।

(२) फिर नं०-२ की विधि से देश के विभिन्न भागों में निरीक्षण केन्द्र स्थापित कर नवम्बर से मार्च तक बादल, वर्षा, हवा के रुख का दैनिक निरीक्षण कर उसे नोट किया जाय। उसके आधार पर देश

के विभिन्न भागों में ६ महीने आगे होने वर्षा की संभावित तारीखें निकाल ली जायें ।

(३) रोहिणी योग में वर्णित विधि से देश के विभिन्न भागों में मेघ गर्भ परीक्षण की भाँति बायु परीक्षण किया जाय । वेधशालाओं में यह देखा जाय कि रोहिणी चन्द्र योग के समय चन्द्रमा रोहिणी योग तारा के किस दिशा से संचरण कर रहा है, रोहिणी शकट वेध तो नहीं हो रहा है । रोहिणी योग का प्रयोग वायु मण्डल के दाब को सूचित करता है ।

(४) पूरे वर्ष की सूर्य संक्रान्ति के मण्डलों को मालूम कर लिया जाय । मिथुन से कन्या तक की संक्रान्तियों पर विशेष ध्यान दिया जाय ।

(५) सप्तनाडी चक्र विधि से वर्षा की तारीखें निकाल कर उनका मेघ गर्भ परीक्षण में प्राप्त वर्षा की साढ़े ६ महीने आगे की आई तारीखों से सामंजस्य करके वर्षा का क्षेत्र मालूम कर लिया जाय । क्षेत्र मालूम करने में कूर्मचक्र और सर्वतो भद्र चक्र भी सहायक होगा । यदि तूफान आँधी या अतिवृष्टि का योग किन्हीं तारीखों में मानसून के समय या इसके अलावा दिखाई देता है तो कूर्म चक्र का प्रयोग कर स्थान की जानकारी अवश्य कर ली जाय ।

(६) दिव्य, अन्तरिक्ष, भौम उत्पातों पर ध्यान रखा जाय ।

(७) प्रकृति निरीक्षण बराबर किया जाय और प्रचलित लोकोक्तियों से सहायता ली जाय ।

स्पष्ट है कि उपर्युक्त प्रयोगों को सारे देश में व्यापक रूप से करने के लिए भारी संख्या में केन्द्र स्थापित करने पड़ेंगे और यह सरकारी सहायता से ही सम्भव है । अच्छा हो कि सरकार मिटिरियालाजी डिपार्टमेन्ट को एस्ट्रोमिटियारालाजी डिपार्टमेन्ट का रूप देकर भारत को मौसम की लांगरेन्ज भविष्यवाणी में अग्रणी कर दे । इससे कृषि प्रधान भारत का बड़ा हित होगा ।

अध्याय १०

उपसंहार

भारत प्राकृतिक बनावट मौसम एवं जलवायु की विविधिता से भरा एक विशाल देश है। नदियों के हरे-भरे मैदान, घने जंगल, हिमाच्छादित पर्वत हैं, तो मरुभूमि भी है। इतने बड़े देश में एक समान मौसम और वर्षा नहीं हो सकती। जहाँ २० से. मी. से कम वार्षिक औसत वर्षा का क्षेत्र यहाँ है, वही ४०० से. मी. वार्षिक वर्षा का भी भूखंड है। २० और ४०० से. मी. वार्षिक वर्षा के मध्य विभिन्न औसत वर्षा के क्षेत्र हैं, (देखें चित्र)।

कृषि भारत की जीवन रेखा है, इसलिए कृषि वाले क्षेत्र में यदि वर्षा का अभाव मानसून के दिनों में हो जाय तो इसके भयंकर परिणाम देश की अर्थव्यवस्था पर होते हैं। चूंकि भूमिगत जल, पृथ्वी तल पर उपस्थिति नदी, झील, तालाब, बाँधों में भी जल की पूर्ति वर्षा से होती हैं अतः खेती की सिंचाई के साथ ही विद्युत उत्पादन पर भी वर्षा के अभाव का दुष्परिणाम होता है। पावर सप्लाई समुचित न होने से उद्योग भी प्रभावित होते हैं।

इतने बड़े देश में प्रतिवर्ष पूरे देश में आवश्यकता के अनुरूप वर्षा हो ऐसी आशा नहीं करना चाहिए। प्रायः देश के किसी न किसी भाग में सूखे की स्थिति दिखाई देती है। यदि वह एक छोटा क्षेत्र है तो उसे गंभीर नहीं मानते क्योंकि देश के अधिकांश भाग में अच्छी वर्षा होने से एक छोटे से क्षेत्र में अन्न के अभाव की पूर्ति की जा सकती है। जब देश के काफी बड़े क्षेत्र में वर्षा का अभाव होता है तो समस्या गंभीर हो जाती हैं। देश के कुल क्षेत्रफल के कितने भाग में वर्षा की कमी होने से समस्या गम्भीर होगी, इसका मापदण्ड क्या है? यह प्रश्न पैदा होता है। इस प्रश्न का समाधान डिप्टी डायरेक्टर जनरल मिटि-

यारालाजी (क्लाइमेटालाजी एण्ड जियोफिजिक्स) मिटियारालाजिकल आफिस, पुणे श्री आर. पी. सरकर (R P Sarker) के एक लेख से मिलता है। विद्वान लेखक ने इसका मापदण्ड अपने पेपर D oughts in India and their Predic ability में प्रस्तुत किया है। उसके कुछ भाग हम साभार यहाँ संकलित कर रहे हैं–

लेखक के कथनानुसार "जब अभाव २६ से ५० प्रतिशत हो जाता है तो उसे सामान्य सूखा (Moderate drought) कहते हैं। जब ५० प्रतिशत से ऊपर अभाव होता है तो उसे तीव्र सूखा (Servere drought) कहते हैं।" इन दो प्रकार के सूखा के आधार पर लेखक ने देश को दो भागों में वर्गीकृत किया है– एक वे प्रदेश जो प्रायः सामान्य सूखा से प्रभावित होते हैं और दूसरे वे जो तीव्र सूखा के शिकार होते हैं। वे इस प्रकार हैं–

सामान्य सूखा के क्षेत्र– राजस्थान, सौराष्ट्र, कछ, गुजरात के कुछ हिस्से, हरियाणा, पंजाब, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, रायलसीमा और कर्नाटक का आन्तरिक भाग।

तीव्र सूखा के क्षेत्र– पश्चिम राजस्थान का पश्चिमी भाग और कच्छ।

किस क्षेत्र में कब सूखा पड़ने की संभावना बनती है इसका पूर्वाभास हो जाय इसके लिए लेखक ने सन् १८७५ से १९७४ तक के सूखे के आँकड़ों के आधार पर 'फ्रिक्वेन्सी' अर्थात् किस सब डिवीजन में कितने वर्ष के अन्तराल से सूखा पड़ने की संभावना है, इसे वर्गीकृत किया है। फ्रिक्वेन्सी का यह वर्गीकरण वर्षा का भविष्य जानने के लिए किस सीमा तक उपयोगी और भविष्य कथन के लिए प्रमाणिक है यह अलग प्रश्न है किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि ये आँकड़े भविष्य के मौसम की भविष्यवाणी (Predictability) पर शोध करने वालों के लिए बहुत उपयोगी हैं।

वर्षा पर सौर धब्बों (Sun spots) का किस सीमा तक प्रभाव पड़ता है इसका जिक्र भी लेख में है (सन स्पाट्स) ११ वर्ष के चक्र में सूर्य में प्रकट होते हैं)। इस लेख में अत्यन्त उपयोगी वह भाग है जिसमें

सन् १८७७ से १९७४ तक की भारत में पड़ने वाले सूखों की तालिका तथा देश के कुल क्षेत्रफल का कितना प्रतिशत कौन सा भाग प्रभावित हुआ यह स्पष्ट किया है।

भूतकाल में पड़े सूखा के वर्षों की इस तालिका में से हम कुछ ऐसे वर्ष सूखा के ज्योतिषीय समीक्षा के लिये ले रहे हैं जिनमें ३० प्रतिशत से अधिक किन्तु ५० प्रतिशत से कम भाग प्रभावित हुआ और उन सभी वर्षों को ले रहे हैं जिनमें ५० प्रतिशत से अधिक क्षेत्र प्रभावित हुआ। इस सूची के अलावा सन् १९७९ और सन् १९८७ के सूखे पर भी विचार करेंगे। उपर्युक्त सूखा के वर्षो में कुछ ऐसे वर्ष हैं जिनमें ११ वर्ष के चक्र के सौर धब्बे भी प्रगट हुए थे। इस ज्योतिषीय समीक्षा का मुख्य आधार अध्याय २ में वर्णित लांगरेन्ज फोरकास्ट सूर्य के आर्द्रा प्रवेश लग्त के नियम होंगे।

१- सन् १९८७

प्रभावित क्षेत्र– ६३.९ प्रतिशत

प्रभावित क्षेत्र के नाम– पश्चिम बंगाल, बिहार के मैदान, पूर्वी उत्तर प्रदेश, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा, हिमांचल प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, कोंकण, मराठावाड़ा, विदर्भ, आन्ध्र का समुद्र तटवर्ती भाग, तेलंगाना जम्मू कश्मीर।

सन् १८७७ में सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश ता० २० जून को ७-० प्रातः हुआ। लग्न इस प्रकार थी- मिथुन लग्न में सूर्य और शुक्र। सिंह में केतु। कन्या में चन्द्र। धनु में गुरु। कुंभ में मंगल, शनि, राहु। वृष में बुध।

समीक्षा– लग्न, पूर्व दिशा में मिथुन राशि है जिसका जलांश शून्य है। लग्न में अत्यन्त उष्ण ग्रह सूर्य है, साथ में जलीय ग्रह शुक्र है जो सूर्य के साथ होने से प्रभावहीन है। पूर्व दिशा कूर्म चक्र में प्रयाग से प्रारम्भ होती है, अतः पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा बिहार बंगाल सूखा के प्रभाव क्षेत्र होंगे। पश्चिम दिशा में गुरु सप्तम भाव में अग्नितत्व धनु राशि ५० प्रतिशत जलांश में सूर्य की दृष्टि में है। अतः पश्चिमी क्षेत्र प्रभावित। नवम भाव दक्षिण पश्चिम में शनि राहु मंगल हैं।

गुजरात, कोंकण, मराठावाड़ा, मध्य प्रदेश प्रभावित । १२वें और ११वें भाव दक्षिण पूर्व पर क्रमशः मंगल और शनि की संयुक्त दृष्टि, प्रभाव क्षेत्र आन्ध्र । चतुर्थ भाव उत्तर दिशा में जलीय ग्रह चन्द्रमा है, उत्तरी क्षेत्र में वर्षा होनी चाहिए थी, परन्तु चन्द्रमा कन्या राशि शून्य जलांश में है साथ ही शोषक ग्रह मंगल की दृष्टि में हैं । अतः उत्तरी भाग हिमांचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर प्रभाव क्षेत्र हुए ।

२- सन् १८६१

प्रभावित क्षेत्र- ३३.६ प्रतिशत

प्रभावित प्रदेश- उत्तर असम, बंगाल, बिहार का मैदानी भाग, राजस्थान, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु ।

सूर्य का आर्द्रा प्रवेश- २१ जून ६-३० A. M. ।

लग्न सिंह में शनि । वृश्चिक में चन्द्र केतु । कुंभ में गुरु । वृष में राहु शुक्र, बुध । मिथुन में मंगल सूर्य ।

समीक्षा-- लग्न, पूर्व दिशा में अग्नि तत्व की शून्य जलांश की सिंह राशि, वर्षा अवरोधक ग्रह शनि सिंह में, अतः बंगाल बिहार प्रभावित । द्वितीय भाव पूर्वोत्तर दिशा में शून्य जलांश कन्या राशि पर मंगल शोषक ग्रह की दृष्टि, तृतीय भाव में २५ प्रतिशत जलांश की तुला राशि पर वर्षा अवरोधक शनि की दृष्टि । अतः द्वितीय-तृतीय भाव उत्तर-पूर्व दिशा असम प्रभावित । पश्चिम दिशा पर शनि दृष्टि, राजस्थान पर प्रभाव । दक्षिण दशम भाव में राहु उस पर शनि की दृष्टि, आन्ध्र, तमिलनाडु प्रभावित । मानसून के समय ३१ जुलाई तक निकट के अंशों में मंगल का सूर्य के आगे संचरण था ।

३- सन् १८६६

प्रभावित क्षेत्र- ६४.५ प्रतिशत ।

प्रभावित प्रदेश- हरियाणा, पंजाब, हिमांचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, सौराष्ट्र, महाराष्ट्र, आंध्र प्रवेश, तमिलनाडु, समुद्र तटवर्ती कर्नाटक, केरल ।

सूर्य का आर्द्रा प्रवेश- २० जून ११-७ P. M. ।

लग्न कुंभ। वृष में शुक्र। मिथुन में सूर्य बुध केतु। सिंह में मंगल। तुला में गुरु चन्द्र। वृश्चिक में शनि। धनु में राहु।

समीक्षा– लग्न में पूर्ण जलांश राशि कुंभ है, गुरु से दृष्ट है अतः पूर्वी क्षेत्र सूखा के प्रभाव में नहीं आया। सप्तम भाव पश्चिम दिशा में अग्नि तत्व की राशि शून्य जलांश की है, उसमें शोषक ग्रह मंगल है, शनि से दृष्ट है अतः पश्चिमी क्षेत्र पूर्ण रूप से प्रभावित रहा। दशम भाव दक्षिण में शनि स्थिति है और उस पर मंगल की दृष्टि है, अतः आंध्र, तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल प्रभावित हुए। चतुर्थ भाव उत्तर दिशा में ५० प्रतिशत जलांश राशि वृष में जलीय ग्रह शुक्र है, किन्तु वह शनि की दृष्टि में है, इसलिए हिमांचल प्रदेश पर कुछ प्रभाव हुआ किन्तु उत्तर के अन्य क्षेत्र बच गये। इसके अतिरिक्त लगभग ४४ वर्ष के अन्तराल में आने वाली शनि-यूरेनस की महा अशुभ जन विनाश कारी युति जो वर्तमान में भी चल रहीं है, इस वर्ष थी यह युति यदि अकेली हुई तो अति वृष्टि, बाढ़ आदि उत्पन्न करती है और जब मंगल की दृष्टि इस पर होती है तो अवर्षण अग्निकांड, विस्फोट और युद्ध की स्थिति बनती है।

४- सन् १९०४

प्रभावित क्षेत्र- ५२.६ प्रतिशत।

प्रभावित प्रदेश– पश्चिमी बंगाल, पूर्व उत्तर प्रदेश, पंजाब, गुजरात, विदर्भ, आँध्र, कर्नाटक का दक्षिणी भाग, पश्चिमी राजस्थान, सौराष्ट्र।

सूर्य का आर्द्रा में प्रवेश– २१ जून, ५-५६ A. M.।

लग्न मिथुन में सूर्य मंगल शुक्र। सिंह में राहु। कन्या में चन्द्र। मकर में शनि वक्री। कुंभ में केतु। मेष में गुरु। वृष में बुध।

समीक्षा लग्न, पूर्व में शून्य जलांश राशि मिथुन में सूर्य, मंगल, शुक्र है। शुक्र अस्त है तथा शोषक ग्रह सूर्य मंगल और शून्य जलांश राशि का पूर्ण प्रभाव रहा। पूर्वी उत्तर प्रदेश, बंगाल प्रभाव क्षेत्र हुए। पश्चिम दिशा में ५० प्रतिशत जलांश राशि धनु सप्तम में है। दक्षिण पश्चिम (अष्टम भाव) में शनि उपस्थित है जो मंगल से दृष्ट है, इसी

दिशा में केतु है। दशम भाव दक्षिण पर शनि की दृष्टि है। अतः पश्चिमी भाग, दक्षिण पश्चिम तथा दक्षिणी क्षेत्र प्रभावित हुए।

५- सन् १९१८

प्रभावित क्षेत्र-- ७०.७ प्रतिशत।

प्रभावित प्रदेश-- पूर्वी उत्तर प्रदेश, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, हिमांचल प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, तेलंगाना रायलसीमा, जम्मू कश्मीर, कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल।

सूर्य का आर्द्रा प्रवेश– २१ जून, ३-४२ P. M.।

लग्न- तुला। वृश्चिक में राहु चन्द्र। मेष में शुक्र। वृष में केतु बुध। मिथुन में सूर्य गुरु। कर्क में शनि। कन्या में मंगल।

समीक्षा--इस वर्ष के सूखे में देश का बहुत बड़ा भाग व्यापक रूप से प्रभावित हुआ। इसका एक प्रमुख कारण यह भी था कि सन् १९१८ में सौर धब्बों की वृद्धि तेजी से हो रही थी। सन् १९१९ में सौर धब्बों की अधिकतम संख्या १०४ रिकार्ड की गई है।

आर्द्रा प्रवेश लग्न तुला २५ प्रतिशत जलांश की है। यह राहु और मंगल के पाप कर्तरी योग में है और मंगल पर शनि की दृष्टि है। लग्न पर जलीय ग्रह शुक्र और शुभ ग्रह गुरु की दृष्टि होने से पूर्वी उत्तर प्रदेश के अलावा शेष सम्पूर्ण पूर्वी क्षेत्र अवर्षण से बच गया। उत्तर पूर्व (द्वितीय भाव और तृतीय भाव) में द्वितीय में २५ प्रतिशत जलांश वृश्चिक में जलीय ग्रह चन्द्र था और तृतीय पर गुरु की दृष्टि थी अतः उत्तरी पूर्वी भाग भी अप्रभावित रहा।

दशम भाव दक्षिण दिशा में शनि की स्थिति है। सप्तम भाव में २५ प्रतिशत जलांश राशि मेष है, उसमें जलीय ग्रह शुक्र है, किन्तु इस भाव और शुक्र पर शनि मंगल की दृष्टि से शुक्र का प्रभाव नगण्य हो गया। चतुर्थ भाव उत्तर दिशा को शनि पूर्ण रूप से प्रभावित कर रहा है। दक्षिण, पश्चिम, नवम और अष्टम क्रमशः सूर्य और केतु से प्रभावित हैं। नवम में शून्य जलांश राशि मिथुन है, अतः पश्चिम, दक्षिण एवं उत्तर दिशा के क्षेत्र से प्रभावित हुए।

६- सन् १९६५

प्रभावित क्षेत्र- ४०.८ प्रतिशत ।

प्रभावित प्रदेश- पूर्वी उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, हिमांचल प्रदेश, पूर्वी राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, विदर्भ, केरल, जम्मू-कश्मीर ।

सूर्य का आर्द्रा प्रवेश- २१ जून, ९-३२ P. M. ।

लग्न-मकर । कुंभ में शनि । मीन में चन्द्र । वृष में राहु गुरु । मिथुन में सूर्य बुध शुक्र । कन्या में मंगल । वृश्चिक में केतु ।

समीक्षा- मकर शत प्रतिशत जलांश राशि लग्न, पूर्व में है । उसके निकट अशुभ प्रभाव केवल शनि का है । अतः सन् १९१८ की तरह केवल पूर्वी उत्तर प्रदेश पर कुछ प्रभाव रहा, शेष पूर्वी क्षेत्र सुरक्षित रहा ।

चतुर्थ भाव उत्तर दिशा पर शनि मंगल की दृष्टि जम्मू कश्मीर हिमांचल प्रदेश पर प्रभाव । अष्टम पर शनि की दृष्टि, पश्चिम और दक्षिण पश्चिम पर प्रभाव ।

७- सन् १९७९

इस वर्ष के सूखे में कितने प्रतिशत क्षेत्र प्रभावित हुआ इसके आंकड़े हमारे पास नहीं हैं । इतना ज्ञात है कि मानसून के प्रारम्भ आषाढ़ में वर्षा होकर फिर रुक गई, पूरा मानसून सूखा गया । सम्पूर्ण उत्तरी भारत में फसल नष्ट हो गई । पूर्वी, पश्चिमी और मध्य क्षेत्र प्रभावित हुए ।

सूर्य का आर्द्रा प्रवेश- २२ जून, ११-२१ A M. ।

लग्न-सिंह । लग्न में शनि राहु । कुंभ में केतु । वृष में शुक्र चन्द्र । मिथुन में मंगल, सूर्य, बुध । कर्क में गुरु ।

समीक्षा- सिंह अग्नि तत्व राशि जलांश शून्य है । लग्न में शनि-राहु वर्षा अवरोधक ग्रह हैं । सप्तम भाव पश्चिम दिशा पर शनि-केतु का प्रभाव पंचम षष्ठ पश्चिमोत्तर पर मंगल, सूर्य का दृष्टि प्रभाव है । दक्षिण दिशा पर यद्यपि शुक्र चन्द्र जलीय ग्रह हैं किन्तु उन पर भी शनि की दृष्टि है । अतः इस वर्ष सूखा का व्यापक प्रभाव रहा । यह

सौर धब्बों का वर्ष था। जून १९७९ में १५३.९ सौर धब्बों की संख्या थी।

८- सन् १९८७

यह वर्ष भी सूखे का था। प्रारम्भ से ही मानसुन धोखा दे गया। २४ अगस्त तक मंगल अंशों में सूर्य के आगे था। वास्तविक मान-सून २६ अगस्त से उत्तरी भारत में आरम्भ हुआ।

सूर्य का आर्द्रा प्रवेश– २२ जून, १२-२६ P. M.।

लग्न-कन्या, लग्न में केतु। वृश्चिक में शनि। मीन में राहु। मेष में चन्द्र गुरु। वृष में शुक्र। मिथुन में सूर्य मंगल बुध।

समीक्षा-- लग्न शून्य जलांश की कन्या है। यह वर्षा के अभाव का प्रथम चिन्ह है। पूर्वी, पश्चिमी, और दक्षिणी क्षेत्र पर ग्रहों का दुष्प्रभाव तथा मंगल के सूर्य से अग्रगामी होने से सूखे की स्थिति आयी फिर भी अगस्त के बाद की वर्षा ने सूखे की स्थिति में बहुत अंशों में सुधार किया। १९७९ और ८७ में ७९ का सूखा अधिक हानिकारक था।

सौर धब्बे

सौर धब्बों का भूमण्डल के जीव जन्तु, बनस्पति मौसम पर व्यापक प्रभाव होता है। इस पर काफी शोध हुआ है। सन स्पाट्स का आयनोस्फियर पर भी प्रभाव विज्ञान द्वारा सिद्ध हो चुका है। बीसवीं शताब्दी में निम्नांकित वर्षों में सौर धब्बे अपनी अधिकतम संख्या में थे।

वर्ष		धब्बों की संख्या
१९०७	-	६०
१९७९	-	१०४
१९२८	-	७५
१९३७	-	१०९
१९४७	-	१५२
१९५८	-	२०३
१९६९	-	१२०
१९८०	-	१५४

२० वीं शताब्दी के सौर धब्बों का ८वां चक्र १९८० अधिकतम संख्या का गणना किया गया था। इसका ज्यूरिच (Zurich) में रिकार्ड रखा जाता है। १९८० के लिए १५४ की संख्या गणना की गई थी किन्तु यह संख्या १९७९ में ही पहुँच गई। धब्बों की संख्या धीरे-धीरे बढ़ती है। अमेरिका की एनवरामेन्टल रिसर्च लेबोरेटरीज से हमें १९८० चक्र के विवरण प्राप्त हुये थे उनसे यही प्रकट होता है, वे निम्नांकित हैं–

नवम्बर १९७६	-	१३.५
दिसम्बर १९७६	-	१४.५
जनवरी १९७७	-	१६.७
जून १९७७	-	२६.३
दिसम्बर १९७७	-	५६.९
जनवरी १९७८	-	६१.३
जून १९७८	-	८९.३
दिसम्बर १९७८	-	११७.८
जनवरी १९७९	-	१२३.८
जून १९७९	-	१५३.९

निष्कर्ष

भूतकाल में भारत में जो भयंकर सूखा (अवर्षण) के वर्ष थे उनकी समीक्षा का हमारा प्रमुख उद्देश्य यह देखना था कि प्रस्तुत पुस्तक में वर्णित प्राचीन वर्षा विज्ञान के नियम प्रयोग की कसौटी पर किस सीमा तक खरे उतरते हैं। इस प्रयोग से निम्नांकित निष्कर्ष निकले–

१- दुनियां के वैज्ञानिक जिस लांगरेन्ज फोरकास्ट का कोई तरीका अभी तक नहीं खोज सके हैं वह ज्योतिष द्वारा सम्भव है।

२- सूर्य की आर्द्रा प्रवेश लग्न से वर्षों आगे की वर्षा किस दिशा में कैसी होगी यह मालूम हो जाता है और प्रयोग में यह विधि प्रामाणिक है।

३- प्राचीन वर्षा विज्ञान में वर्णित अवर्षण का कोई प्रबल ग्रहयोग किसी

वर्ष में पड़ता है तो सूखे की तीव्रता बढ़ जाती है। जैसे, सन् १८९१ और १९८७ में सूर्य-मंगल का सम्बन्ध।

४. सौर धब्बे वर्षा को तथा अन्य मौसमों को प्रभावित कर सूखा की स्थिति में तीव्रता लाते हैं। यह सौर धब्बों की अधिकतम संख्या का या उसका निकटवर्ती वर्ष होता है। जैसे सन् १९१८ और सन् १९७९।

५- सौर धब्बे हमेशा सूखा का प्रमुख कारण नही होते, जैसा कि २०वीं शताब्दी के अब तक के सौर धब्बों के वर्ष की तालिका से स्पष्ट होता है।

-०-

सूखा के वर्षों की आर्द्रा प्रवेश लग्न

१८७७

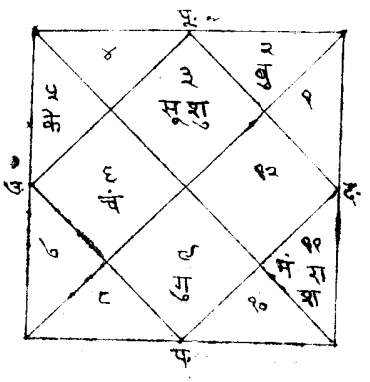

१८९१

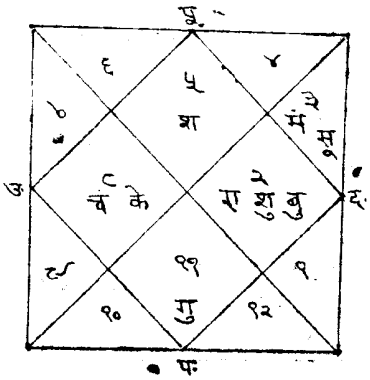

१८९९

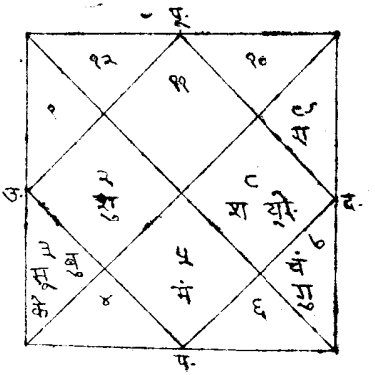

१९०४

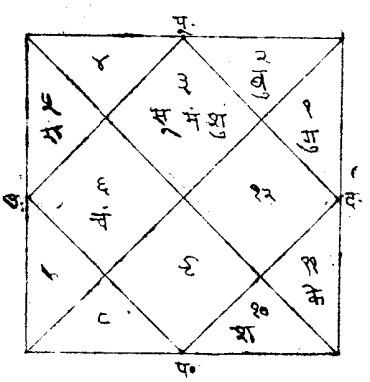

१६१८

१९६५

१६७१

१६८७